मासिक ई-पत्रिका | भोजपुरी | 2015 दिसंबर, अंक 11

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

ISSN 2395-7255

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

आखर

वर्ष: 2015, दिसंबर। अंक 11। **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा।

बतकूचन
सौरभ पाण्डेय
5

ठुमरी
जौहर शाफियाबादी
19

गंगोत्री गोमुख यात्रा
पी. राज सिंह
26

जब राजेंदर बाबू...
ओंकारेश्वर पाण्डेय
10

सुपर मैन
सरोज सिंह
34

बिदेसिया के पाती : भिखारी ठाकुर
निराला
8

विरासत
अनिल प्रसाद
45

भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मलेन - 6
अतुल कुमार राय
57

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
अमित मिश्र, डुमरांव

आखर में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिम्मेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail। com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।
मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : फोटो साभार - अनिमेष कुमार वर्मा , अश्विनी रूद्र

www.aakhar.com | facebook.com/Aakhar | Twitter : @aakharbhojpuri
www.bhojpurisahityangan.com

आखर के फुलवारी

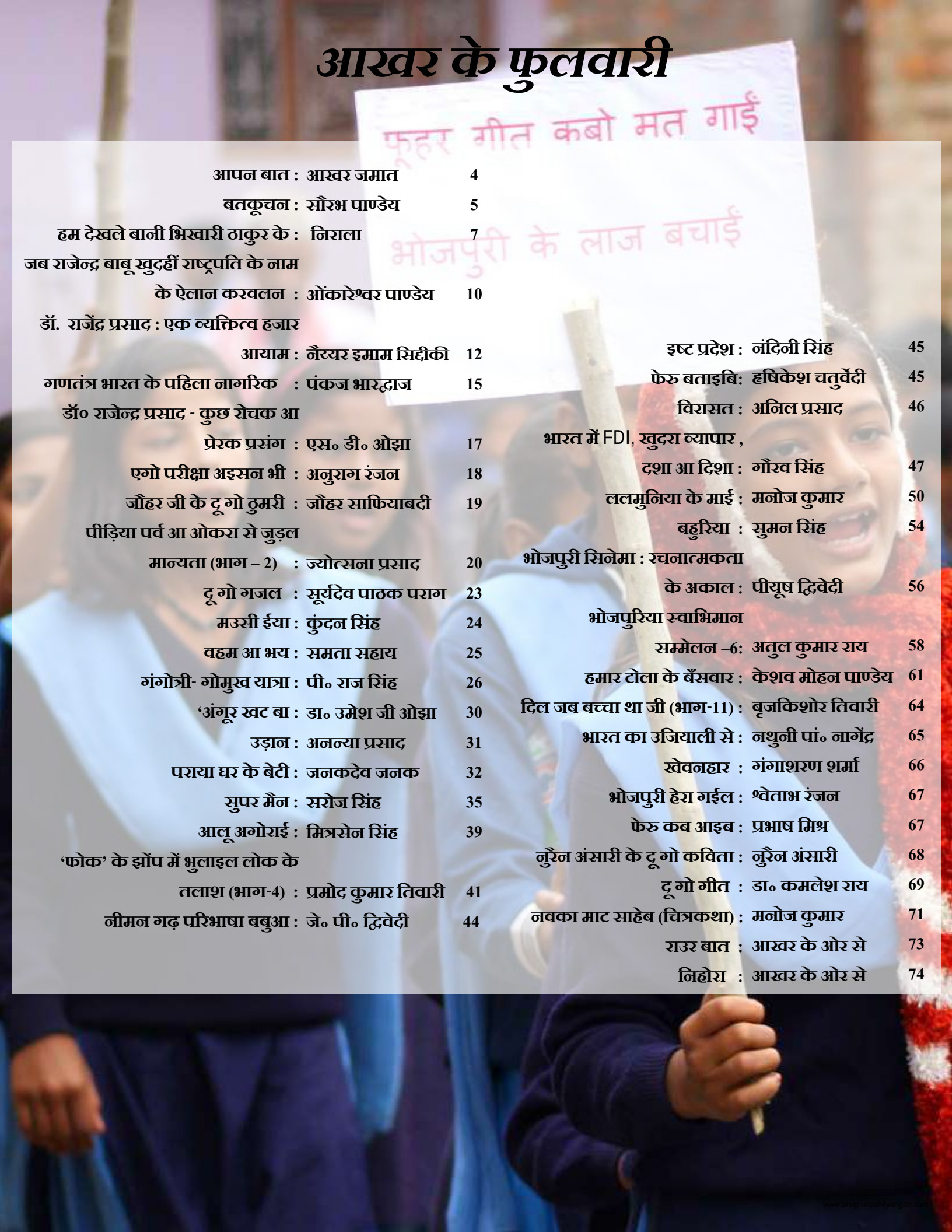

आपन बात : आखर जमात 4

बतकूचन : सौरभ पाण्डेय 5

हम देखले बानी भिखारी ठाकुर के : निराला 7

जब राजेन्द्र बाबू खुदहीं राष्ट्रपति के नाम के ऐलान करवलन : ओंकारेश्वर पाण्डेय 10

डॉ. राजेंद्र प्रसाद : एक व्यक्तित्व हजार आयाम : नैय्यर इमाम सिद्दीकी 12

गणतंत्र भारत के पहिला नागरिक : पंकज भारद्वाज 15

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद - कुछ रोचक आ प्रेरक प्रसंग : एस० डी० ओझा 17

एगो परीक्षा अइसन भी : अनुराग रंजन 18

जौहर जी के दू गो ठुमरी : जौहर साफियाबदी 19

पीड़िया पर्व आ ओकरा से जुड़ल मान्यता (भाग – 2) : ज्योत्सना प्रसाद 20

दू गो गजल : सूर्यदेव पाठक पराग 23

मउसी ईया : कुंदन सिंह 24

वहम आ भय : समता सहाय 25

गंगोत्री- गोमुख यात्रा : पी० राज सिंह 26

'अंगूर खट बा : डा० उमेश जी ओझा 30

उड़ान : अनन्या प्रसाद 31

पराया घर के बेटी : जनकदेव जनक 32

सुपर मैन : सरोज सिंह 35

आलू अगोराई : मित्रसेन सिंह 39

'फोक' के झोंप में भुलाइल लोक के तलाश (भाग-4) : प्रमोद कुमार तिवारी 41

नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ : जे० पी० द्विवेदी 44

इष्ट प्रदेश : नंदिनी सिंह 45

फेरु बताइबि: हृषिकेश चतुर्वेदी 45

विरासत : अनिल प्रसाद 46

भारत में FDI, खुदरा व्यापार , दशा आ दिशा : गौरव सिंह 47

ललमुनिया के माई : मनोज कुमार 50

बहुरिया : सुमन सिंह 54

भोजपुरी सिनेमा : रचनात्मकता के अकाल : पीयूष द्विवेदी 56

भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन –6: अतुल कुमार राय 58

हमार टोला के बँसवार : केशव मोहन पाण्डेय 61

दिल जब बच्चा था जी (भाग-11) : बृजकिशोर तिवारी 64

भारत का उजियाली से : नथुनी पां० नागेंद्र 65

खेवनहार : गंगाशरण शर्मा 66

भोजपुरी हेरा गईल : श्वेताभ रंजन 67

फेरु कब आइब : प्रभाष मिश्र 67

नुरैन अंसारी के दू गो कविता : नुरैन अंसारी 68

दू गो गीत : डा० कमलेश राय 69

नवका माट साहेब (चित्रकथा) : मनोज कुमार 71

राउर बात : आखर के ओर से 73

निहोरा : आखर के ओर से 74

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

दिसम्बर के महीना भोजपुरिया समाज में उल्लास आ उमंग लेके आवेला। प्रकृति के बदलत चक्र ओस के बूंदन पर सवार होके गेहूँ के हरियर पतई पर आके ठहर जाला। सुरूज भगवान के पहिलका किरीन के घनघोर कुहरा के साथे झकाझूमर देखे लायक होला। इहे दिसम्बर के ठमकत ठिठुरन जिरादेई के माटी पर 1884 में एगो क्रांति दूत के अवतरण के साक्षी बनल रहे। भोजपुरिया माटी के रोम-रोम सोहर के स्वर में नहा के पुलकित होखे लागल। जस-जस राजेंद्र बाबू के शरीर सरकत गइल तस-तस जिम्मेद्दारी आपन लक्ष्य साधे खातिर उँहा से लिपटे लगली सन। राजेंद्र बाबू कवनो के परे ना हटइनी, कवनो के निराश ना कइनी। दुनो हाथ से अँकवार भर के सब जिम्मेद्दारियन के दुलार दिहनी आ लक्ष्य साधे खातिर आपन सर्वस्व न्यौछावर करे खातिर तैयार हो गइनी। वकालत के पेशा में प्रसिद्धि बड़ा तपस्या से मिलेला। मातृभूमि के सेवा में सबसे पहिले ई प्रसिद्धि अर्पित भइल। बाद में प्रसिद्धि से अर्जित समृद्धि भी होम क दिहनी स्वतंत्रता समर में राजेंद्र बाबू। आजादी मिलल। देश के सपना के शब्दन में गूँथे के रहे। संविधान सभा के अध्यक्ष बनावल गइल देशरत्न के। देश के अलग-अलग संस्कृतियन के पुष्पन में गुँथाईल माला के उर्वर जमीन देबे के बेरा आइल। पहिलका राष्ट्रपति बनावल गइनी राजेंद्र बाबू। संविधान बनावेवाला संविधान के प्रहरी बनके दुनिया भर के देखा दिहलस कि भारत आपन संविधान बना भी सकत बा, आ दृढ़ता से क्रियान्वित भी कर सकत बा। सरलता, सहजता आ त्याग के साक्षात प्रतिमूर्ति के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कहे के पड़ल- "भारत में एकही अइसन आदमी बा जेकरा के हम जहर भी पिये के कह दीं त बिना कारण पुछले हँस के पी जाई- डॉ० राजेंद्र प्रसाद।"

पिछला पाँच बरिस से भोजपुरिया समाज अपना लाल के जयंती के खास बना देले बा। भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन के शुरुआत जिरादेई से भइल रहे। सोशल मिडिया के भोजपुरिया हनक जमीन पर उतर आइल रहे। भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के अनुरक्षण करे खातिर पढ़ल-लिखल नइकी पीढ़ी जकड़ल तालाब में ढेला फेंक देले रहे। ई दखल लगातार बढ़त गइल। आज "आखर" समूह से जुड़ल देश परदेश में फइलल लगभग 20 हजार भोजपुरिया अपना माई भाषा के अस्मिता खातिर काम कर रहल बाड़न। कुछ लोग लिख रहल बा, कुछ लोग पढ़ रहल बा आ कुछ लोग पढ़ा रहल बा। भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन भोजपुरियन के खुला मंच ह। लड़िका लड़किन के गगनभेदी नारा, साहित्यकार लोगिन के जमावड़ा, संस्कृति के विविध रुपन के पवित्र संगम आ एह सबके साथे लरजत गरजत भोजपुरिया समाज। एगो अद्भुत आ विहंगम दृश्य दिखाई पड़ेला, सिवान जिला के पंजवार गाँव में आयोजित होखे वाला एह सम्मेलन में। एह साल भी ई आयोजन भइल हा। साहित्य के विमर्श, संस्कृति के विहाग, माटी के राग आ निज-भाषा के स्वाभिमान के फाग फेरु देखे के मिलल हा।

"ई सम्मेलन स्वाभिमान के, अस्मिता के उत्थान के
लोक-रस जाये छलक-छलक, माई-भाखा मान पे !
"आखर" के गढ़ल शब्द, कहियो हूँकार भरी
छनछनात रास रची, खिलखिलात तान पे !!"

शरद ऋतु के दुआरी पर एहि महीना में एगो आउर साधक दस्तक देले रहे। सामंती समाज के पर्याय बन चुकल भोजपुरिया मानस के झिंझोड़ के रख देबे वाला भिखारी बाबा ठनकत गेंहुअन खानी आपन उपस्थिति दर्ज करइनी। स्त्री के भीतर के हर भाव के शब्द दिहनी, आ स्वर भी। उँहा के साहित्य लेखन में जवना भाषा के प्रयोग भइल उ एगो नया प्रयोग रहे। साहित्य लेखन के उद्देश्य रहे- जन-जन तक आपन बात पहुँचावल। बात पहुँचल आ दूर तक ले गइल। विरहिन के सिसकी घर के दहलीज से बाहर निकल के बइठकी के विषय बन चुकल रहे। बेमेल बियाह करेवाला बेटी के बाप "बेटीबेचवा" कहाये लागल। सामाजिक ढकोसलापन पर धारदार कैंची चले लागल। ई सब देखे-सुने आ गुने खातिर कोसों दूर से लोगन के जमघट होखे लागल। आलम ई हो गइल कि बंगाल आ असम के केतने सिनेमा घर बंद हो गइले सन। भिखारी बाबा के लगभग सारा प्रमुख रचना स्त्री के केंद्र में राख के लिखाइल बाड़ी सन। आश्चर्य करे वाला बात ई बा कि सामंती समाज के ताना-बाना से परे भिखारी ठाकुर स्त्री के सबला पक्ष के भी जोरदार वकालत कइले बानी। "गबरघिचोर" एकर प्रत्यक्ष उदाहरण बा।

देशरत्न डॉ० राजेंद्र प्रसाद के याद करत, भिखारी ठाकुर के श्रद्धांजलि देत, भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन के झील में डुबकी लगवले आखर के दिसम्बर अंक रउआ सामने प्रस्तुत बा। विश्वास बा उहे दुलार मिली, वइसने स्नेह-वर्षा होई।

- टीम आखर

बतकूचन...

सौरभ पाण्डेय

रामधन बाबा से इचिको ना सहात रहे । बड़का आङन । लाइन कटला के नीम अन्हार भइल रहे । ऊ अङनवे में फोंफियात नकधुन्नी ठनले रहले - 'मने हतवत लमहर जट भइअल बा किसुनछपरा के लोगन के ? हई हाल ? बसिस्ठ बाबा के खनदान सङे ऊपर-नीचे खेली लोग ?'

बुझाये जे घरवा में सभ केहू के हावा छुअले रहे । कवनो खोड़ाढ़ी से चूँ-चपड़ कुछऊ ना सुनात रहे । छोटका बाबा के लइका, सामनराएन च्चा, रहि-रहि के बाबा के कपारे चढ़ल एह धँवक में बुला हुमाध छिरकसु - 'आजु बड़का बाबा रहिते नू, त उन्हनीं के हतना कपारे ना चढ़ल रहिते सऽ । उनका जातहीं बुझाता जइसे। । 'बीखि के असर त होखहीं के रहे । रामधन बाबा सामनराएन के ओरे करेड़े तकले - 'हइसना बातन खातिर भाईजी के नाँव धराई अब ? हम बानीं नू ?.. जीयत !.. ' - फेर लगले अपनहीं गरजे - 'ट्रान्सफार्मर लागी त हमनिये के गाँवे लागी । आ ना, त सउँसे टोला-जवार अबसे ललटेन आ ढिबरी में जीओ। । '

बड़की मइया के बुझाते ना रहे जे एह बेरा रामधन बाबा के दिमाग में हेतरे घुमरी पारत उतान भइल बिण्डो के कइसे थाम्हल जाओ । ऊ कसहूँ डोलत-हीलत सोझा भइली - 'का बबुआजी.. ढेर अकाज क देले बाड़े सऽ ?'

अकसरहाँ ई देखल बात हऽ, बाबा कतनो फफात रोआब में काहें ना होखस, बड़की मइया के सोझा आवते मेहराइल काठी हो जाले - 'ना ए भउजी, अबहीं अतना माँस नइखे चढ़ल केहू के पसली प !'

' त चुपा ना जा.. अब जवन होखी ऊ फजिरहीं नू होखी । अबहीं दू कवर खा लिहितऽ । बहुरियो कूल्हि थिरऽइती सऽ.. अबेरा नू भइल। । '

'ऊ त नीमन... खा लेब हम । बाकी रउआ काहें बहिरी अइनीं हाँ ? चलीं भितरी चलीं ! सामनराएन.. ले जा इनका भितरी । '

फजिरे दुअरवे प बइठकी लागल रहे । गाँव भर के पैंतीस-चालिस ले कम लोग ना बिटुराइल होई ! सभे मारि तउआइल झूमत रहुए - 'निकहे एगो चिट्ठी लिखाओ सबीस्टेसन प। । ओभरसियर के, आ सङहीं दरोगोजी के। । एह पार ना त ओह पार.. अबकी फरियाइये जाओ, जे ट्रांसफर्मरवा कवना गाँवें लागी। । हर-बेर के ई कुफुत भइल बा । '

'कवना गाँवे का कहाला महराज ?' - सामनराएन बात लोक लिहले - 'अपने गाँवे लागी.. आ हमनिये के खेत में लागी ! पोल कूल्हि अबहियों ठाढ़े बाड़े सऽ.. एकहू नइखे गीरल। । '

'हँ जी हँऽ, कवनो फिकिर ना.. हमार सार के ससुररिये के एक जाना अबकी बदली हो के आइल बाड़े उहवाँ । लाइनमैन हवे । ले दे के कूल्हि फरिया लियाई..' - दलगँजन गोंड़ अस्थिराहे बोलहीं प रहले कि 'ना चुप रहबऽ' कहि के साधूजी, रामधन बाबा के अँकवरिया संघतिया, हुङुक दिहले - 'आ हँऽ नाहीं तऽ ! का हो, परधानी खातिर परु ठाढ़ का भइलऽ, ग्यान के कवनो बिसेस सोता भेंटा गइल बा का तहरा ? इहवाँ एसडीओ-ओभरसियर के नीचे केहू सुन्ते नइखे.. तूँ चललऽ लाइनमैन प मुरली ताने..?'

दलगँजन टोकाते चुपा गइले - 'हमार का औकात बा ए साधूजी, ई त एह दुआर के किरपा आ 'भाईजी' के असीस रहे। । जवन हमरा प अइसन ना बरिसल जे ऊ हमरो के परु परधानी खातिर ठाढ़ करवा दिहले ।'

' भाईजी देवता रहनीं हाँ दलगँजन.. देवता !' - रामधन बाबा गँवें -गँवें घोंटत ई बतिया कहले । काहें, जे दलगँजन गोंड़ के परधानी खातिर ठाढ़ करावल भाईजी के असीस बरिसल कम उनकर मजबूरी ढेर रहे । कारन जे, ईहो गाँव अनुसूचित जाति के दायरा में आ गइल रहे । अब दलगँजन ले 'आपन' अनुसूचित के होखित ?

रामधन बाबा के नाति, सम्यक तिवारी, आजकाल कोटा से गाँवहीं आइल बाड़े, दुका जाने कवना बिसै के कोचिंग कऽके । ओइसहूँ सम्यक गाँवे कमहीं रहल बाड़े । बाबूजी सङे टाटा में रहेले । उनकरे चिठी-पर्चा लीखे के कहाइल ।

'एप्लिकेसन त लिखबे किये हैं । बाकी हइसना वाला के

सौरभ पाण्डेय

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृकभूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ । रउआ पचीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं । पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कॉपोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी । आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स । साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा' ।

डेवेलप करे में हमरो मन तनिका जहुआता है। से, ओकर सेट-अप रवे सभे बनवाएँ त नीमन। । मने बेस्ट रहेगा। ... ' - सम्यक जवन ना भासा-बोली में बोलले जे ऊ आपन हद आ औकात दूनो बता दिहले ! उनकर अतना सुनते ओइजा बिटुराइअल सभ केहू के कपार प चढ़ल गरमा-गरमी के ताव लागल धुआँए। सभे चहुँआइल अउँझाइल सम्यक के देखे लागल। खैर... ! बात ई ठनाइल जे काल्हु उपरी बेला सम्यक तिवारी के लिखल्का के लेके सामनराएन आ गाँव के अइसने कुछ जवान सबीस्टेसन आ थाना प जाई लोग। होखी तऽ ओभरसियर साहेब आ एसडीओ साहेब दूनो जाना के निहोरा क के बोला लियाओ। घरवा फुलवरा-परेह के कहाओ भा अपना बगइचवे में अस्थिराहे लीटी-चोखा खातिर गोंइँठा जोराओ। दलगँजन त बड़ले बाड़े ओहके आगा परी घींचे के। ओही में एह कूल्हि खातिर लेवे-देवे के महीनी ओरिया लियाई। एह गाँव से किसुनछपरा के हरमेसा से ठनाइल रहल बा। जबे-जबे ट्रांसफर्मरवा ओभरलोड का मारे जरि जाला त ओकर गाँव बदल जाला। एह गाँव से किसुनछपरा, त दोसरा पाली किसुनछपरा से एह गाँव। परियार ऊ किसुनेछपरे रहि गइल। बस, तबसे ईहे बतिया बाझल बीया। मने कूल्हि बवाल के सोरि इहवाँ बा।

बाकी ई कूल्हि के पाछा करत साँझि ले चर्चा सम्यक के नाँवे लोकाइल रहे। गोसाईंजी त लगले निकहा अलगे बिल्टी फाड़े - 'का मरदे, बड़ मनई के लइकवा कूल्हि 'देखाउ साह' के नगऽड़े होले सऽ का ? का पढ़ेले सऽ इन्हनीं के ? '

' रउआ का बा जी ? कवनो बिसेस मतलब बा का ? रउओ नू गोसाईंजी। । बार के खोइला लागेनीं छीले ! अरे ईहे सम्यक नू हवे जे 'दीसा' के परकार बतवले रहले.. '

'दीसा ? ऊ का हो ?' - गोसाईंजी चिहँइले।

'लीहीं। ईहो करब ? मालुमे नइखे ?'

'अब बुझउवल तनि बन करऽ त हमहूँ जानीं। '

'हा हा हा... ई बुझउअल ना साँच बात हऽ। ई सम्यकवा तब इहवें रहल करे। एजुगे सिसंकर माहटर के इस्कूलवे में नाँव लिखाइल रहे एकर। '

'आछा... ?' - गोसाईंजी सचकी चिहँइले।

'हँ ! एकदिन, सिसंकर कूल्हि लइकवन से लगले पूछे, जे दीसा कौ गो होली सऽ ?'

' सुनते ई बोल परल.. जे, दीसा त अइसे दू गो होला ए माहटरजी.. एगो फजिरे आ एगो साँझि खा। बाकी गादा-गूदी, अने चना-मटर, आ बरखा-बूनी के दिन में ई चार-पाँच गो ले अधिका हो जाले।'

अतना सुनते गोसाईंजी के ठहाका रोकले ना रोकाइल। ऊ हँसला का मारे दोबर-तीबर लगले होखे - 'हा हा हा !.. ई त कमाल के बात कहलऽ महराज ! हा हा हा.. हा हा हा.. '

' कमाल ? रउआ ओकर भासा ना सुननीं हाँ ? भोजऽहिनलिश छाँटत रहुए !'

'हा हा हा ! भोजऽहिनलिश ? .... हा हा हा.. ' - गोसाईंजी मारि हँसला के फेरु लगले छपिटाए - 'ओह-ओह !.. हम मऽरि जाइब ए दइबा हा हा हा'

दोसरा दिने एक हाली फेरु सभे रामधन बाबा कीहाँ दुआर प बिटुराइल। सबीस्टेसन प एसडीओ आ ओभरसियर के सङे थाना प दरोगाजी के लगे जवन पर्चा जाये के रहे, ओकरे लिखल्का सूने के रहे। सभ केहू अस्थिराहे चुपाइल रहे। सामनराएन एक ओरि ठाढ़ि भइल पाना बाँचे लगले।

' सेवा में, आदरणीय सहायक अभियंता (विद्युत वितरन विभाग), द्वारा, आदरणीय कनिष्क अभियंता । विसै, फुँकाइल ट्रान्सफार्मर के हाल्दे बदलना आ ओकर अपनहीं गाँवे अस्थापना। ' से सुरू भइल ऊ लिखल्का 'रउआ से हमनी के दूनो तलहत्थी, दसों नोह जोरत निहोरा कऽ रहल बानीं जे हमनी के लिखल्का प गहिराह दाया द्रिस्टी राखब..' से बढ़त-बढ़त आखिरी में 'निवेदक, रामधन तिवारी वल्द सिरजन तिवारी, सामनरायन तिवारी वल्द धरीछन तिवारी, महेन्दर पाँड़े वल्द सुरेन्दर पाँड़े, सुजान जादो वल्द परिछावन जादो, रामजी साव वल्द धूमन साव। । मने अइसन बीसन नाँव के समेटियावत ओरियावत खतम भइल। दुआर प एकदम से गुम्मी बन्हाइल रहे। सभ अपना-अपना हिसाब से एह लिखल्का प बिचार करे प लागल रहे, जे एह में कुछऊ छूटल नत होखो, भा, कुछऊ कतहीं अनेरिया लिखा जनि गइल होखो, जे लीहल के कतहीं दीहल जनि होखे लागो ! सामनराएन अपना दिमाग के घोड़ा एह बात प धउरावे में लागल रहले जे फुलवरा आ परेह भा लीटी-चोखा प दरोगाजी के लेले दूनो इन्जिनीयर साहेब लोगन के कइसे नेवते के बा, का कहे के बा ! तले दलगँजन खँखारत उकिर उठले - 'मलिकार, रउआ कहीं त हमहूँ कुछऊ कहीं। । '

' जरूर बोलऽ... का कहे के बा तहरा। कवनो सान्का बा तऽ ओहके दूर कइल जाई। ' - रामधन बाबा दलगँजन के भरोसा दिहले।हँ मलिकार, हमरा एगो सवाल-सान्का बड़ुए। आ त चाहे हमरा ई बुझात नइखे, भा ऊ चिन्हात नइखे, जे ऊ के हऽ !'

'के के हऽ ? केकरा के बोल रहल बाड़ऽ, दलगँजन ! तनि खोलि के बोलऽ.. '

'मलिकार, पर्चवा में सभ केहू के नाँव ओकर बाप के नाँव सङे लिखाइल बा। ई तऽ बूझे में आवऽता, जे के कवना के हऽ। । भा के कवना घर के हऽ । बाकिर, ई 'निवेदकवा' कवना के हऽ जी ? कवना घर के हऽ ई निवेदक ?'

अतना सुन्ते दुआर प त जवन ना ठहक्का फूटल जे आगा-पाछा घर के बड़-बूढ़ि मेहरारू कूल्हि अपना-अपना दुअरा निकलि अइलीसऽ। आ एने दलगँजन के ई बुझऽइबे ना करे, जे आखिर उनका बोलते ओजुगा भइल का ?

खैर !

ई सर्वसम्मति से सँकरा गइल जे पर्चा निकहे मन से आ होश में

लिखाइल बा। सम्यक उत्तीर्ण हो गइल रहले ! आगा के तइयारी प सामनराएन आ उनका अस जवान-लइका लोग लागि गइल। सभ अपना-अपना घरे जाये लागल। बाकिर, गोसाईंजी एने सम्यक तिवारी के 'आवऽ बेटा, का करेलऽ ?' कहत ओड़ लिहले।

'हम कम्पटीसन के तइयारी कर रहे हैं।।'

' ऊ त बबुआ ठीक बा। बाकी कवना कम्पटीसन के तइयारी क रहल बाड़ऽ ?'

'कोटा में मेडिकल का कोचिंग खतम ही हुआ है, इन्जिनीयरिंग भी सङही चल रहा है, जेमे हो जाए'

'आछा।। नीमन बा। बाकी का तहरा निकहे भोजपुरी ना आवे ? भा हिन्दिए कहऽ ?'

'पहिले अच्छे से ही आती थी भोजपुरी। पर अब घर में डैडी मना करते हैं। कहते हैं जे ई दूसरा बोली सभ को भी खराब कर देगा।।'

'अरे ! अइसन बोलेले तहार बाबूजी हो ? तहरा मालूम बा जे भोजपुरी अपना आप में बड़ा करेड़ भासा हऽ ? बाकिर, तूँ त आध तीतर, आधा बटेर अस हो गइल बाड़ऽ ए बबुआ ?'

'अरे हँ, हमभी बेलेनी, एह भोजपुरी में ही बोलेनी.. बाकि अब कुछ बरिस से घर में ई ना बोलाए'

'बेटा तहरा मालूम बा ? जे, 'ही' भा 'भी' भा कवनो हिन्दी संजोजक सही भोजपुरी में ना बोलाए ?'

'ना, ओतना मालूम नहीं है। बाकी, आप भी जानिये जे ऊ ना बोलाए त भोजपुरी कमजोर हो जाएगा ? आजके भासा आजके अंदाज में होखे के चाहीं नू ? ना त भोजपुरी भी खतम हो जाई !'

'बाह ! तूँ त बड़ा सोचे वाला लइका हवऽ हो !' - गोसाईंजी के मुँह चाकर भइल रहे -'बाकिर, एक बात जानऽ बबुआ, सभ भासा के आपन-आपन अंदाज आ शैली होले।। एक-दोसरा से घालमेल कइले भासा अनेरिये जियान होली सऽ'

'आप ठीक नहीं बोल रहे हैं।। हर भासा में ओ भासा से बाहर का शब्द आता है। एही से भासा के रूप बनता-सँवरता है। ना तऽ कवनो भासा संस्कृत आ लैटिन लेखा बिला जायेगा।। भासा के तऽ लचीला होना ही चाहिए।।' - सम्यक आपन बात प जोर देत कहले।

'अरे ना हो बचवा।।' - गोसाईंजी किलिक उठले - 'तूँ अपना मने निकहे ढेर जानऽ तारऽ... बाकी ढंग से कुछऊ नइखऽ जानत। चाहे तहरा निकहे बतावल नइखे, भा तूँ अपनहीं गलत जानऽतारऽ ! बबुआ, कवनो भासा दोसरा भासा के शब्दन से जियान ना होखे, बलुक कवनो भासा अपना क्रियापद आ संजोजक से बनेले आ सँवरेले। एकरा में बिगाड़ होते भासा कवनो होखो, बिगड़ि जाले।। बुझाइल नू ?'

'माने ?' - सम्यक अचकचऽइले।

'माने ई, जे दोसरा भासा से बेमतलबे कवनो शब्दओ ना लियाए के.. बाकि ईहो साँच हऽ जे शब्दन के लिहला-दिहला में अतना रोक -टोक भा मनाहीं नइखे। बाकी, हिन्दी भासा के 'ही' भा 'भी' भा अउरी कूल्हि संजोजक शब्द जइसे 'और'.. ई कूल्हि.. भोजपुरी के बाँचल दासा दुर्दासा में बदल दीहें सऽ। बदलिये रहल बाड़ी सऽ ! मनाहीं एह कूल्हि के आवे से होखे के चाहीं, संज्ञा आ नाँव से परहेज कब बा ए बबुआ ! बाकिर, कूल्हि शब्दन प भोजपुरी लचीला भइल त एकर दसे ले ना, आत्मा ले नसा जाई, आ आपन भासा मुअला के कगार प आ जाई ! मने जब रुपवे बदल जाई कवनो भासा के त ओकर आपन का रहि गइल ? बुझाता नू ?'

सम्यक गोसाईंजी के डबर-डबर मुँह तिकवत रहले।

गोसाईंजी ई देखि के मुस्किया दिहले - 'तूँ जे बचवा बोलऽतारऽ, ई भोजपुरी भा हिन्दी ना हऽ.. ई भासा के कुछऊ फेंटुआ हऽ ! हाल्दे एह से छुटकारा पा जा। नाहीं त भोजपुरी के त ना, बाकिर, ई तहार भासा आ बोली के जरूरे नास दीही। ई अपना बाबूजी से जरूर कहि दीहऽ.. '

'जी....' - सम्यक सूनते-सूनत अचके में बोल परले।

भोजपुरी स्वाभिमान सम्मेलन : 6 , पंजवार (3 दिसंबर)

www.bhojpurisahityangan.com

हम देखले बानी भिखारी ठाकुर के!

निराला

कोई आठ साल पहिले के बात बा। आरा के एक गांव में एक आयोजन रहे। भोजपुरी के विशाल आयोजन। विशालता एह संदर्भ में कि ओकर शोर चहुंओर रहे आउर लोगन के जुटान भी रहे। करीब 80 कलाकार लोग जुटल रहे ओह आयोजन में मंच पर। हमरो जाये के मौका मिलल रहे। सब कलाकार लोग के सम्मानित होखे के रहे। हमरो के मंच पर नाम पुकार के बोलावल गइल। गइनी। साल, माला, मोमेंटो लेके आ गइनी। अपना जगहा पर। एगो बुजूर्ग जइसन आदमी हमरा बगल में बइठल रहले। कपार में मुरेठा बन्हले, मोटिया खादी के चादर ओढ़ले। हमरा जवन सम्मान में साल मिलल रहे, ओकरा के हथवा से छू-छू के देखे लगले। धीरे से बोलले- बड़ा गरम होखी जी ! चिक्कन बा ! अइसनके सबके मिली न ! हम उनकर परिचय पूछनी। बतवले। कहले कि हम रमअंगेया हईं। फेरू दुनो हाथ से कान पकड़ के कहले- मल्लिकजी के दल में रहत रहनी। बोलवले बा लोग इहवां। हम भक्क से रह गइनी। सम्मान समारोह खतम हो गइल रहे। उनकर नाम छुट गइल रहे। आयोजक के जाके कहनी कि एगो नाम रामअंगेया राम के भी होखी। बोला लीं जा। आयोजक लोग बोलइलस। उनका के भी साल मिलल। साल ले के अइले। बगल में बइठले। माला छुट गइल रहे। उनकर गला में डलनी। बतकही शुरू होखल उनका से। मंच कलाकार से ठसाठस भरल रहे कलाकारन से। सबके एक-एक गाना गावे के कहात रहे। सबके भी ना, कुछ चुनिंदा लोगन के। हमरा बगल में बइठल रमअंगेया धीरे से कहले, एगो बात कहीं जी ! हमार एगो पैरवी कर दीं ना! हम पूछनी कि बर्ताइं। धीरे से कान में मुंह सटा के कहले- जानत बानी, हेह लमहर अदमी के मेला देख के नाचे के मन करत बा, एक बेर हमरो के नचवा न दीं। रमअंगेया ई बात के कान में बतावत रहले, अउर हमार नजर उनकर दैहिक भाषा पर चल गइल रहे। उनकर आंख में तड़क आउरी चमक एक साथे रहे। दे हके नस लगे जइसे खिंचात होखो, मंच पर एक बेर उतर के आपन कला देखे देबे खातिर। ओह रे ओह, अइसन बेचैनी हम कलाकार में ना देखले रहलीं। हम उनका से पूछनी कि राउर उमिर का भइल। कहले-ठीक से पता तो नइखे जी बाकि सै पार कर गईल बा। हम चकित होके उहां के देखत रह गईनी। मन में बस एके बात सोचत रह गइनी कि ई का बात के असर बा कि सै पार के एह कलाकार के एक बेर अपना कला देखावे खातिर मन आउर तन के नस एह तरह से खिंचा रहल बा। बहुत देर तक एकटकिये उहां के देखत रह गइनी कि मल्लिकजी के संगे रहेवाला कलाकार एगो साल के एतना बार निहार के काहे देखत बा। कुल भोजपुरी के सिंगार जवन एक मल्लिकजी के नाम पर टिकल-टिकावल गइल बा, उनका साथ

काम करनेवाला कलाकार के अइसन हाल काहे। खैर, ओह सवाल के ओहिजे छोड़ देनी। ओह दिन रमअंगेया के मौका ना मिल सकल। कुछ बरिस बाद आरा में एगो आयोजन होखत रहे। निमंत्रण रहे बाकिर मटिया देले रहली। शाम के पता चलल कि जवन आयोजन में बोलावल गईल बा ओह में रामअंगेया के टीम भी गंगा स्नान नाटक के प्रस्तुति करी। पहुंचनी। रामअंगेया के टीम उतरल। दुखन पासवान से लेई के कई गो कलाकारन के साथे। रामअंगेया मेन हीरो के रोल में। सूत्रधार भी। डायरेक्टर भी उहे। तब रमअंगेया के 105 साल के उमिर हो गइल रहुवे। कईसन अनुभव रहे, बता नइखी सकत। रमअंगेया के टीम में ओह दिन दुई जना कम हो गइल रहे लोग तो उ दुना जना के पाट भी रमअंगेया ही करस। पट से मेहरारू बनस आउरी चट से मरदाना। बस परदा के पीछे जास, धोती लपेट के अउरी घुघ तान के मेहरारू बन के आ जास। ई पहिलका अनुभव रहे रमअंगेया के तमाशा देखे के। बदन में जवन फूर्ती रहे, जवन दैहिक भाषा रहे आउर गवनई घरी जवन लय ताल रहे, उ गजब के। आरा के ओह आयोजन के बाद रमअंगेया के रांची बोलवनी। रमअंगेया अपन दल-बल के साथे पहुंचलन। दुपहरिया में बईठकी भइल उहां के साथे। खा-पी लेला के बाद। आपन झोरी में से एगो किताब निकलले। भिखारी ठाकुर रचनावली। गोड़ लागी के भेंट कइले। बतकही शुरू होखल। उहां से भिखारी ठाकुर के बारे में बात शुरू भइल। रमअंगेया उठ के बइठ गइले। हम कहनी कि सुतिये के बतियावल जाओ। कहले कि मल्लिकजी के बारे में सुत के बात होखी जी। ना जी ना, उहां के बारे में आदर से बइठ के बात होखी। घंटो बतकही होखत रहल।

ओही बीच में हम बात में कह देनी कि रउआ नीतीश जी से ना मिलली कबहूं। उहां के जवाब रहे कि ना जी, नीतीशजी से कइसे मिलब। हम तो लालूजी के ना लौंडा रहनी। हां किहां जा के नाचत रहनी। कई हाली बोलवले तो गइनी। एक हाली तो उहां से हम बेईमानी भी कर देनी। लालूजी पूछले कि का हो रमअंगेया केतना लोग बाड़ तु लोग इंदिरा आवास खातिर। जानत बानी, हम झूठ बोल देनी आउरी आपन एगो मुसमात बहिन के इंदिरा आवास के भी इंदिरा आवास पास करवा लेनी। रमअंगेया से इ कुल बात सुन के हम फेरू उनका के एकटक देखत ही रह गइनी। रमअंगेया धीरे से कान में फुसुकले- एगो बात कहीं। नीतीशजी से तो हम ना जाइब मिले बाकिर अगर रउआ पैरवी बा तो लगा दीं ना पैरवी, हो जाओ पटना में एक बेर भेंट उनका से। हमरा बारे में ना कहब कि रमअंगेया भेंट करल चाहत बाड़े, रउआ अपना ओर से कहब। रमअंगेया एक सांस में बोलत गइले- ओइसे इ ठीक ता ना होखी। हमरा लाज लागी। ई सोच के का कहिहें नीतीश के देख रमअंगेया के पलटी मार लेले। लालूजी के लौंडा रहले, आज हमार राज बा तो हमरा लगे आइल बाड़े। अउरी का सोचिहें लालू कि देख रमअंगेया के, हम इंदिरा आवास दिलवइनी, नचवइनी पटना बोला के आज पलटी मार के नीतीश से मिलत बाड़े। रमअंगेया के ई बात सुन के हमार माथा शरम से गड़ल जात रहे। ई सोच कि आज के समय में अईसन इनोसेंट लोग भी होला। ई बतकही तब के रहे जब नीतीश आउरी लालू यादव अलगा-अलगा रहे लोग। रमअंगेया बेर-बेर बस इहे कहस कि नीतीशजी से मिल ठीक रही जी, रउआ पैरवी तो लगा देब बाकिर लालूजी बुरा ना नु मनिहें। नीतीश मजा ना लिहें। हम रमअंगेया के ई बता सके के स्थिति में भी ना रहीं कि कवन बात सोचत बाड़े उ। जवन बिहार में लोग कपड़ा लेखा रातो रात पार्टी-निष्ठा सब बदल लेबेला, ओह बिहार में रहेओला रामअंगेया का सोचत बाड़े। हम रमअंगेया के जब-जब देखीं, हमरा आंखी के सोझा काल्पनिक रूप में भिखारी ठाकुर आ जास। बेर-बेर लगे कि रमअंगेया में भीड़ देख नाचे के भा तमाशा करे के ताव आ जायेवाला भाव कहां से आइल होखी। भिखारी ठाकुर से ही न। 105 बरिस के उमिर में रमअंगेया में नाचे-गावे से लेके अभिनय करत घरी फट से मेहरारू अउरी चट से मरद बन जायेवाला खेला करे कहवां से आइल होखी। भिखारी ठाकुर से ही मिलल होखी न ई गति। बेर-बेर उनका के देखी के सोचत रहीं कि जब उनकर शागिर्द में ई उर्जा बा तो मल्लिकजी में का उर्जा होखी, का संस्कार होखी, केतना गति होखी।

रमअंगेया के रांची से गइला के बाद उनकर पटना में नीतीश कुमार से मिलेवाला मुराद पूरा होखल। सम्मानित भइले। बाकिर ओकरा पहिले एक बेर फेर रमअंगेया से भेंट भइल रहे पटना में ही। रमअंगेया पटना में भोजपुरी अकादमी के एगो आयोजन में आइल रहले। पटना के इस्कान के गेस्ट हाउस में ठहरावल गइल रहे। हमनी के अपना ओरी से उनकर पूरा दल खातिर कपड़ा के इंतजाम कइले रहीं जा। नया कुरता, नया धोती। उनका टीम के लगे गइलीं। कुरता निकलनी। देखते खुश भइले। सब के बंटाइल। लोग तइयार होखल। ओहिजा से निकलल। रमअंगेया आगे-आगे, पीछे से पूरा दल। गेस्ट हाउस से निकल के ही लोग रहते में एक बेर गवनई शुरू कर देलस। रमअंगेया के गवनई शुरू हो गइल। नाच भी। गजब के दृश्य रहे उ। पूरा इस्कॉन के लोग भागल-भागल आ गइल देखे। अगल-बगल के भीड़ जुट गइल। इस्कॉन के मंदिर में संध्या आरती के टाइम बितल जात रहे बाकिर सब संन्यासी लोग रमअंगेया के गाना सुने में अउरी दस्ता संगे नाचत देखे में मगन रहे। एक अउर, एक अउर के फरमाइश होखे लागल। रमअंगेया के धीरे-धीरे आगे बढ़वनी। कार्यक्रम में बिलंब होखत रहे। बाकिर उनका के लेके जात रहली तो बेर-बेर फेरू भिखारी ठाकुर के चेहरा सामने नाचत रहे कि उ आदमी के का कला होखी। अईसहीं ना अपना जमाना में जमाना के गति रोक देबत होखिहें। लिखले भी तो बाड़े कि केहू जपत बा गाय चरावत, केहू जपत बनिहारी में। केहू जपत में भजन में जा के, केहू जपत... में। रमअंगेया से जब-जब मिलली, जगदीश चंद्र माथुर के लेख के पंक्ति भी बेर-बेर सोझा आ जात रहे। उहां के लिखले बानी कि पटना के हार्डिंग पार्क में एक बेर भिखारी ठाकुर के दस्ता आईल। भीड़ अनियंत्रित हो गईल। भिखारी ठाकुर निकलले मंच से बहरी, नाचे शुरू कर देले। भीड़ शांत। रमअंगेया से जब-जब मिलली, असम वाला प्रसंग भी इयाद आवत रहे। ओही प्रसंग, जेकरा में चरचा बा कि भिखारी ठाकुर एक बेर असम गइले। उहवां रोज रात खा उनकर दस्ता के बिदेसिया के तमाशा शुरू होखल। नतीजा ई होखल कि सिनेमा हॉल के रात वाला शो में भीड़े ना जाव। आखिर में सिनेमा हाल के दबाव में भिखारी के दस्ता के सरकारी अधिकारी लोग जिला बदर कईलस, भगा देलस काहे कि भिखारी के तमाशा होखे से सिनेमा हॉल के नुकसान होखत रहे। आजुओ रमअंगेया जिंदा बाड़े। आजुओ उनकर तमाशा देख के सब कुछ भुलाइल जा सकत बा। आजुओ उनका से मिल के भिखारी के कल्पना के साकार रूप में देखल जा सकत बा। भिखारी के रचल एक-एक लाइन इयाद बा मुहजबानी। अनपढ़ बाड़े, बाकि पूरा कंठस्थ बा। हम इहे से कहनी कि हम भिखारी से मिलल बानी। देखले बानी, समझले बानी।

निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं । इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी ।

जब राजेन्द्र बाबू खुदहीं राष्ट्रपति के नाम के ऐलान करवलन

ओंकारेश्वर पाण्डेय

तब राष्ट्रपति पद पऽ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के चुनाव के घोषणा करे खातिर राजेन्द्र बाबू अपनही निर्वाचन अधिकारी के पुकरले रहन । देश के पहिला राष्ट्रपति के निर्वाचन के ऐलान के ऊ क्षण ऐतिहासिक रहे, अउर सांचहूं अविस्मरणीय । आजु जब देश में 13वां राष्ट्रपति के चुनाव के सरगर्मी तेज भइल बा, तब ओह घड़ी के इयाद कइल अप्रासंगिक नइखें ।

इतिहास के पन्ना में दर्ज ऊ तारीख रहे 24 जनवरी, 1950 के । जगह कॉस्टीट्यूशन हॉल । सुबह के ठीक 11 बजे कॉस्टीट्यूएंट एसेंबली के बइठक शुरु भइल । पहिले दूनो नएका सदस्य शपथ लीहले । बॉम्बे से रहन रत्नप्पा भरमप्पा कर्नभार अउर हिमाचल प्रदेश से वाईएस परमार । दूनु लोग रजिस्टर प हस्ताक्षर कइल । अध्यक्ष के कुर्सी पऽ विराजमान रहल स्वयं डॉ । राजेन्द्र प्रसाद । ऊ चर्चा शुरु कइले - “एगो मसला चर्चा खातिर लंबित बा अउर उ हऽ राष्ट्रगान के । पहिले सोचल गइल रहे कि एह मसला के संसद के सोझा लावल जाई अउर संसद ओह पऽ एगो प्रस्ताव पारित करी । बाकिर फेर सोचल गइल कि ओह पऽ प्रस्ताव लावे के बजाय हम एकर घोषणा कऽ दीं । एही से हम ई ऐलान कऽरहल बानी कि मौजूदा शब्द संगीत लय में बद्ध जन गण मन देश के राष्ट्रगान होई, यद्यपि सरकार चाहे तऽ ओकर शब्दन में समय चाहे आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन कऽ सकत बा । अउर एही तरे देश के आजादी के लड़ाई में ऐतिहासिक भूमिका निभावे वाला गीत वंदे मातरम के देश में राष्ट्रगान के बराबर सम्मान अउर दर्जा प्राप्त होई ।”

ओंकारेश्वर पाण्डेय मूलत: आरा, बिहार के रहे वाला वरिष्ठ पत्रकार ओंकारेश्वर पांडेय जी हिंदी, भोजपुरी आ अंग्रेजी के कई महत्त्वपूर्ण पत्रिकन के संपादक रहल बानी। भोजपुरी में पहिला सामाजिक-राजनैतिक पाक्षिक पत्रिका 'द संडे इंडियन' इहाँ के दूरदर्शिता आ मार्गदर्शन में एगो विशेष मुकाम हासिल कइलस। रउआ भोजपुरी खाति बेहद जागरूक बानी इहे वजह बा कि रउआ 'ग्लोबल भोजपुरी मुवमेंट', 'भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया' जइसन संस्था के माध्यम से भोजपुरी खाति प्रयास कर रहल बानी। इ बात बहुत कम लोग जानत होई कि रउआ पत्रकारिता के साथे-साथे एगो सजग रंगकर्मी भी हईं जेकर कई गो दमदार प्रस्तुति के आज भी आरा शहर में इयाद कइल जाला। फिलहाल रउआ 'सनस्टार मीडिया समूह' में समूह संपादक का रूप में आपन योगदान दे रहल बानी।

एकरा बाद कॉंस्टीट्यूएंट एसेंबली के बइठक में दूसर मुद्दा विभिन्न प्रांतन से नया सदस्यन के निर्वाचन आदि के ले के उठल। उड़ीसा के सदस्य बी। दास राजेन्द्र बाबू से कॉंस्टीट्यूएंट एसेंबली के अध्यक्ष के हैसियत से एह बारे में निर्देश जारी करे के निहोरा कइले अउर साथे में प्रांतन से कम महिला सदस्यन के प्रतिनिधित्व पऽ चिंता जतावत कहलन कि संयुक्त प्रांत मेहरारुअन के तीन गो खाली भइल सीटन पऽ मात्र दू गो महिला सदस्य के भेजले बा जबकि उड़ीसा एकहूं ना। कवनो दोसर प्रांत महिला सदस्यन के भेजे के कोशिश नइखे कइलस। जबकि देश में मेहरारू 50 फीसदी बाड़ी। फेर कुछ दोसर सवालन के बाद संयुक्त प्रांत के प्रो। शिब्बन लाल सक्सेना राजेन्द्र बाबू से पूछलन कि संविधान के हिंदी प्रति तैयार बा की ना। अउर ऊ जवाब दिहलन- हऽ तैयार बा। अउर ओकरा बाद कॉन्स्टीट्चुएंट एसेंबली के अध्यक्ष पद पऽ विराजमान डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहलन – " अगिला विषय चुनाव के घोषणा के बा । हम कॉन्स्टीट्चुएंट एसेंबली के सचिव अउर निर्वाचन अधिकारी एचवीआर अयंगर के आमंत्रित करत बानी कि ऊ आवे अउर एह संबंध में ऐलान करें।"

समूचा सभागार सूई पटक सन्नाटे में डूब के इंतजार करे लागल। अयंगर खड़ा भइलन अउर कहलन – "माननीय सदस्य गण, भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय खातिर खाली एके नामांकन पत्र प्राप्त भइल बा। ओह उम्मीदवार के नाम बा डॉ० राजेन्द्र प्रसाद।" अउर एकरा साथे हॉल तालियन के गड़गड़ाहट से गूंज उठल। उनकर नामांकन के प्रस्ताव पंडित जवाहर लाल नेहरू कइले रहन अउर अनुमोदन सरदार वल्लभभाई पटेल । ई जानकारी देत अयंगर राष्ट्रपति के चुनाव संबंधी नियम 8 के उप नियम के तहत राष्ट्रपति पद पऽ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के विधिवत चुने जाने के ऐलान कइलन। समूचा सभागार देर तक तालियन से गड़गड़ाता रहें। अउर फेर खड़ा हो के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू अपना अउर सदन के ओर से उनके एह उच्च सम्मान खातिर ढेर बधाई दीहलन। ऊ आजादी के लड़ाई से ले के पिछला तीन बरिस में उनकर नेतृत्व में साथ मिल के कइल गइल काम के साथे देश के सोझा मौजूदा चुनौतियन के चर्चा कइले अउर कहलन कि आजादी के सपना तऽ रउरा साथे राउर नेतृत्व में पूरा भइल अउर अब हम पूरा वफादारी से रउरा नेतृत्व में देश के सपनों के पूरा करऽब।

एकरे बाद सरदार वल्लभभाई पटेल उनके सम्मान में बेहद आकर्षक शैली में शानदार भाषण दीहले। उनका के बधाई देवे खातिर बोले वाला सदस्यन के तांता लागल रहे। तब राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद महाभारत के एगो किस्सा सुनाके आगे दोसर सदस्यन के एह बारे में बोले से आग्रहपूर्वक मना कऽ दीहलें। किस्सा रहे –

महाभारत में एक बेर अर्जुन व्रत लिहले कि ऊ एगो निश्चित कार्य ओह दिन सूरज ढले से पहिले पूरा करीहन अउर अगर ऊ सफल ना भइलें तऽ खुद के एगो चिता पऽ रख के जला लिहन। दुर्भाग्य से ऊ काम ओह दिन सफल ना भइल। अउर फेर व्रत पूर्ति के समस्या पैदा भइल। पांडव के सोच में ई असंभव रहे, बाकिर अर्जुन अपना संकल्प के पूरा करे पऽ डटल रहन। आखिर श्री कृष्ण एह समस्या के हल करे खातिर सुझाव दिहलन कि "अगर तु बैठके आपन प्रशंसा अपना आप करऽ चाहे दोसरा कइल बड़ाई सुनऽ तऽ ऊ आत्महत्या अउर अपना आप जल के मरे के बराबर होई, तऽ बेहतर बा कि तु अइसने करऽ अउर तोहार व्रत पूरा हो जाई।"

एह किस्सा के सुनावत राजेन्द्र बाबू कहलन कि बहुत बार हम ओह भावना में एह तरक के भाषण के सुनले बानी। बाकिर हम महसूस कइली हऽ कि कई चीज बा जवन हम पूरा करे में सक्षम नइखी, अउर ओह बातन के पूरा करे के एके तरीका बा कि हम ओही तरे से आत्महत्या कऽ ली। अइसन आचरण आजु देश में शायदे कवनो नेता में देखे के मिली। ई ऊ दिन रहे जब ऊ संविधान के पहिला हस्तलिखित प्रति पऽ हस्ताक्षर कइले। संविधान के कुल तीन गो प्रति तब उपलब्ध रहे, एगो अंग्रेजी हस्तलिखित, एगो हिंदी हस्तलिखित अउर एगो अंग्रेजी मुद्रित। आखिर में जन गण मन अउर वंदे मातरम के साथ ऊ ऐतिहासिक बैठक समाप्त भइल।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद : एक व्यक्तित्व हजार आयाम

नैय्यर इमाम सिद्दीकी

आजादी के अग्रणी नेता आ आजाद भारत के पहिला राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ । राजेन्द्र प्रसाद के जनम ब्रिटिश इन्डिया के बंगाल प्रेसिडेंसी के सारण जिला (अब सिवान जिला) के जीरादेई में 3 दिसम्बर 1884 में भईल रहे। राजेन्द्र प्रसाद के बिहारी आ पुरबिया लोग प्यार से राजेन बाबु भी कहेला। अपना माई-बाबूजी के पाँच संतान में इन्हा के सबसे छोट रहनी । संयुक्त परिवार के वजह से खूब लाड़-प्यार आ नीमन संस्कार मिलल । जीरादेई के आबादी मिलल-जुलल बा । राजेन बाबु अपना छुटपन में अपना ईयार-दोस्त के साथे चिक्का आ कबड्डी खूब पसन से खेलस। फगुवा में उहां के मुसलमान दोस्त भी संगे-संगे फगुवा खेलीं आ मोहर्रम के बेरा इहाँ के हिन्दू दोस्त तजिया निकाले आ अखाड़ा में साथे-साथे रहे। घर के माहौल भक्ति वाला रहे। माता जी रोज सबेरे रामायण आ महाभारत के पाठ करीं जवन इन्हा के बहुत पसन पड़े। गाँव में हर साल रामलीला होखे आ इन्हा के ऊ देखे जाईं।

राजेन बाबु के परिवार संयुक्त प्रदेश (अब उत्तर प्रदेश) के अल्मोड़ा से रोजी-रोटी के तलास में बलिया आ के बस गईल । ओही परिवार के एगो फुनगी कुछ साल के बाद रोजी-रोजगार के चलते ही वर्तमान जीरादेई में बस गईल जहाँ महादेव सहाय आ कमलेश्वरी देवी के घर इन्हा के जनम भईल । कायस्थ परिवार से होखे के वजह से पढ़ाई-लिखाई से नाता रहल आ इहे नाता ऐह परिवार के हथुवा के राज परिवार से जोड़े में पुल का काम कईलस। राजेन बाबु के दादा जी श्री मिश्री लाल के बढ़ भाई श्री चौधुर लाल जी हथुवा राज में दीवान रहनी । जहाँ इन्हा के अपना योग्यता, कर्मठ आ ईमानदारी से 25-30 साल तक सेवा कईनी आ इनाम में बहुते खेत-बाग आ जागीर भी मिलल। मिश्री लाल जी के असमय मृत्यु आ संयुक्त परिवार के परम्परा के चलते छोट भाई के परिवार के देख-भाल, आ भरण-पोषण के जिम्मेदारी चौधुर लाल जी संभाल लेहनी। परम्परा के अनुसार 5 साल के उमिर से पढाई के शुरुआत फारसी से भईल काहे से ओह जमाना में फारसी ही सरकारी काम-काज के भाषा रहल। पढ़ाई के शुरुआत मदरसा से भईल बाद में मौलवी साहब फारसी आ उर्दू पढ़ावे खातिर घरे आवस । 12-13 बरिस के उमिर आवत-आवत राजवंशी देवी से बियाह हो गईल। ओ घरी बाल विवाह के ही चलन रहे, से पढ़ल भा अनपढ़ सभे ओही चलन आ परम्परा के मानत रहे। दीवान जी के पोता के बरात रहे त ओही हिसाब से आन-बान-शान भी देखे के मिलल। बारात में बैलगाड़ी घोड़ा, आ हाथी भी रहे। जीरादेई से बारात बलिया खातिर निकलल आ कनिया पक्ष के दुवार पर चहुँपे में दु दिन लागल। सजल-धजल दुल्हा चंडी के पालकी में बैठल रहलन जवना के उठावे में चार गो आदमी लगस। रास्ता में सरयू नदी पार पड़ल। बाकी बाराती के नदी पार करे के खातिर नाव के

www.bhojpurisahityangan.com

इन्तेजाम कईल गईल । बैल आ घोड़ा त तैर के नदी पार कई लेहलसन लेकिन हाथी अड़ गईल । नतीजा ई भईल कि हाथी के नदी के तीरे छोड़ के बारात आगे बढ़ गईल । राजेन बाबु के पिता महावेद सहाय के ई बात बहुत बुझाओ कि लईका बियाहो के दिने हाथी प ना बैठ पईलस । बारात चहुँपे से दु मील पाहिले दोसरा बियाह में से लवटत दु गो हाथी लऊकल । महादेव सहाय जी लेन-देन फ़रिया लेहनी आ परम्परा बाच गईल । हाथी फेरु से बारात में शामिल हो गईल । कनिया किहाँ बारात चहुँपत-चहुँपत रात के आधा बेरा हो गईल रहे । लमहर रास्ता के थकान आ गर्मी से सबकर हालत खराब रहे बाकिर दूल्हा त पालकी में ही सूत गईल रहले । बहुत मुश्किल से उन्हां से जगावल गईल आ बियाह के सब रस्म पूरा भईल । ओ समय रिवाज के अनुसार राजवंशी देवी भी पर्दा करत रहनी । बियाह के बाद जब राजेन बाबु छुट्टी में घरे आवास तबो पत्नी के देखे आ बोले-बतियावे के समय ना मिल पावे । ओ बेरा मर्दाना आ जनाना के एक साथे रहे के रिवाज ना रहे । शादीशुदा लोग रात में सबका सुतला के बाद मिले जाव लो आ मुहँ -अंधेरिया ही मर्दाना में वापस लवट आवे लो । आजादी के लड़ाई खातिर राजेन बाबु जब राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गईनी तब त पत्नी से मिले के समय भी ना मिले लेकिन राजवंशी देवी हर समय उनका पक्ष में खड़ा रहनी आ उन्हा के साथ देहनी । वास्तव में विवाह से शुरूआती 50 साल में शायद दुनु पति-पत्नी 50 महिना एक साथे रहल होई । राजेन बाबु आपन सारा समय देश सेवा में लगा देहनी आ उन्हा के पत्नी गाँव जीरादेई में रह के बल-बच्चन के लालन-पोषण कईनी ।

राजेन बाबु अपना लगातार खराब रहे वाला स्वास्थ्य के बाद भी पढ़ाई में कौनो अड़चन ना आवे देनी । मदरसा के पढाई पूरा कईला के बाद प्रारंभिक शिक्षा खातिर उन्हा के छपरा के जिला स्कूल में दाखिला लेहनी । बियाह के बाद पटना के टीके घोष अकेडमी में पढाई जारी रहल । 18 बरिस के उमिर में कलकत्ता विश्विद्यालय के प्रवेश परीक्षा में पहिला स्थान हासिल कईनी आ 1902 में कलकत्ता के मशहूर प्रेसिडेंसी कॉलेज (अब प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय) में दाखिला मिलल । बी। ए। आ एम। ए। में टॉप कईला प कई गो पदक आ छात्रवृति मिलल । 1915 में उन्हा के स्वर्ण पदक के साथे एल.एल .एम. के परीक्षा पास कईनी आ बाद में कानून के क्षेत्र में ही डॉक्ट्रेट की उपाधि लेहनी । बाद में भागलपुर में कुछ दिन लेक्चर के रूप में काम भी कईनी । कलकत्ता विश्वविद्यालय में उन्हा के तब 30 रु. महीना छात्रवृति मिले आ राजेन बाबु जीरादेई से कलकत्ता विश्वविद्यालय में दाखिला लेबे वाला पहिला छात्र रहनी । तब कलकत्ता विश्वविद्यालय में बंगाल, बिहार, ओडिशा, असम (अब असम भी कई गो राज्य में बँट गईल बा) आ मयन्मार के क्षेत्र आवत रहे ।

राजेन बाबु के पढाई भले फारसी आ उर्दू में शुरू भईल बाकिर बी . ए. में उन्हा के हिंदी लेहनी । उन्हा के अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, फारसी आ बंगाली के बरियार ज्ञान रहे आ भाषा प मजबूत पकड़ । ऐ सब विषय में उन्हा के धारा-प्रवाह भाषण देले बानी । गाँधी जी के सानिध्य से आ गुजरात में काम करत घरी उन्हा के गुजराती भी सीख लेहनी । एल. एल. एम. के परीक्षा में हिन्दू कानून के पढ़ाई उन्हा के संस्कृत ग्रन्थ से ही कईनी । उन्हा के भाषा से कौनो बैर ना रहे । भोजपुरी के प्रति भी उन्हा के मन में अनघा प्रेम आ आदर रहे । एक बेर कौने प्रोग्राम में (शायद दिल्ली के प्रोग्राम में) उन्हा के मुलाकात हिंदी सिनेमा के मशहूर चरित्र अभिनेता नज़ीर हुसैन से भईल, बात-बात में पता चलल कि इन्हा के घर गाजीपुर जिला में पड़े ला । तत्काल राजेन बाबु हिंदी छोड़ भोजपुरी में बतियावे लगनी । देश के सबसे बड़ संवैधानिक पद प बईठे वाला आदमी के सहज भाव से बिना लाज-संकोच के भोजपुरी में बतियावल देख नज़ीर हुसैन आ साथे-साथे सभा में आईल सभे अचरज में पड़ गईल बाकिर राजेन बाबु प कौनो असर ना पडल । नज़ीर हुसैन से राजेन बाबु कहनी कि रऊवा भोजपुरी फिलिम खातिर काहे नईखी कुछ करत ? ई बात नज़ीर हुसैन के मन में धस गईल आ ऐ घटना से प्रेरणा ले के उन्हा के 'गंगा मईया तोहरे पियरी चढ़ईबो' बनवनी आ ओकरा बाद कई गो बेजोड़ भोजपुरी फिलिम इन्हा के बनवनी । भोजपुरी में इन्हा के योगदान के वजह से नज़ीर हुसैन के भोजपुरी फिलिम के 'पितामह' कहल जाला । हिंदी के प्रति भी उन्हा के अनघा प्रेम रहे आ उन्हा के प्रेम आ नतीजा के चलते ही हिंदी देश के राज भाषा बनल । कई गो पत्र-पत्रिका में उन्हा के दमदार आ प्रभावकारी निबंध भी छपल बा । उन्हा के लिखल किताब में 'आत्म कथा', 'खंडित भारत' हमरा बहुत पसन बा । ढेर ना 2-4 गो बात उन्हा के आत्म कथा से साझा करे के मन बा ।

कॉलेज में पढ़ाई के घरी राजेन बाबु कुर्ता, चूड़ीदार पायजामा आ सिर प टोपी पहिनस । कलकत्ता विश्वविद्यालय में दाखिला लेहला के बाद भी इहे पहनावा रहे । दु गो क्लास हो गईल लेकिन उनकर हाजिरी ना बोलाईल । तिसरका क्लास में भी जब उन्हा के हाजिरी

नैय्यर इमाम सिद्दीकी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नैय्यर इमाम सिद्दिकी जी उर्दू , हिन्दी , अंग्रेजी मे लिखेनी , आखर से बहुत पहिले से जुड़ल बानी । आईआईटी से पढल बानी आ वर्तमान मे एन आई टी रायपुर मे लेक्चरर बानी । रायपुर , छत्तीसगढ मे रह रहल बानी ।

ना बोलाईल त क्लास के खतम भईला प उन्हा के मास्टर जी से कहनी त मास्टर साहेब कहनी कि उर्दू के विद्यार्थी खातिर अलग रजिस्टर बा। ओही में नाम होई, उर्दू के क्लास में हाजिरी बन जाई। तब राजेन बाबु आपन नाम बतवनी, मास्टर जी के उन्हा के पहनावा से यकीन ना भईल त दाखिला पर्ची माँग के जब नाम जाँच लेहनी तब रजिस्टर में राजेन बाबु के नाम लिखा गईल। राजेन बाबू शुरू में जात-पात बहुत मानस। छपरा में पढ़े घरी से लेके कलकत्ता तक उन्हा के संगे एगो महाराज जी रहनी जे खाना पकावे के काम करीं। तब उन्हा के ब्राह्मण के सिवा केहू अऊर के हाथ के पाकल खाना ना खाईं लेकिन बाद में चंपारण में जब गाँधीजी के साथे सत्याग्रह आन्दोलन में उतरनी त गाँधीजी के कहला प जात-पात छोड़ देहनी। खुद राजेन बाबु के ऐ विषय में कहनाम रहे कि - ***राजेन्द्र प्रसाद ने स्वीकार किया, "मैं ब्राह्मण के अलावा किसी का छुआ भोजन नहीं खाता था। चंपारण में गाँधीजी ने उन्हें अपने पुराने विचारों को छोड़ देने के लिये कहा। आख़िरकार उन्होंने समझाया कि जब वे साथ-साथ एक ध्येय के लेये कार्य करते हैं तो उन सबकी केवल एक जाति होती है अर्थात वे सब साथी कार्यकर्ता हैं।"***

जब गाँधीजी देशी शिक्षा खातिर अंग्रेजन के शिक्षण संस्थान के बहिष्कार करे के आह्वान कईनी त राजेन बाबु अपना बेटा मृत्युंजय प्रसाद के कलकत्ता विश्वविद्यालय से निकाल के पटना विद्यापीठ में दाखिल करा देनी जवना के स्थापना में खुद राजेन बाबु के बहुत बड़ा योगदान रहे। 1914 में जब बिहार-बंगाल में बाढ़ आईल तब राजेन्द्र बाबु अगाध श्रधा से सेवा में जुट गईनी। 1934 के बिहार भूकंप के बेरा उन्हा के जेल में रहनी बाकिर जेल से छुटला के बाद भूकंप पीड़ित के मदद खातिर धन जमा करे में लाग गईनी आ ईहो कहाला कि उन्हा के सादगी आ ईमानदारी प लोग एतना सहायता कईल कि वायसराय जेतना धन जुटईले ओह से बेसी राजेन बाबु जुटा देहले। सिंध आ क्वेटा (अब पाकिस्तान) के भूकंप के बेरा भी सेवा के ईहे भक्ति भाव रहे। इलाहबाद विश्वविद्यालय द्वारा जब राजेब बाबु के डॉक्टर ऑफ ला के डिग्री मिलल त समारोह में कहल गईल कि - ***"बाबू राजेंद्रप्रसाद ने अपने जीवन में सरल व नि:स्वार्थ सेवा का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। जब वकील के व्यवसाय में चरम उत्कर्ष की उपलब्धि दूर नहीं रह गई थी, इन्हें राष्ट्रीय कार्य के लिए आह्वान मिला और उन्होंने व्यक्तिगत भावी उन्नति की सभी संभावनाओं को त्यागकर गाँवों में गरीबों तथा दीन कृषकों के बीच काम करना स्वीकार किया।"***

स्वर कोकिला सरोजनी नायडू जी राजेन बाबु के बारे में कहले बानी कि - ***"उनकी असाधारण प्रतिभा, उनके स्वभाव का अनोखा माधुर्य, उनके चरित्र की विशालता और अति त्याग के गुण ने शायद उन्हें हमारे सभी नेताओं से अधिक व्यापक और व्यक्तिगत रूप से प्रिय बना दिया है। गान्धी जी के निकटतम शिष्यों में उनका वही स्थान है जो ईसा मसीह के निकट सेंट जॉन का था।"***

आजादी के बाद राजेन बाबु स्वास्थ आ कृषि मंत्रालय के भार मिलल। उन्नत किस्म के बीज विदेश से मंगवाए के शुरुआत राजेन बाबु ही कईनी। उन्हा के ही प्रयास के नतीजा बा कि आगे चलके देश हरित क्रांति में सफल भईल आ अनाज उगावे में आत्मनिर्भर। संविधान लागू होखे के एक दिन पाहिले यानी 25 जनवरी 1950 के राजेन बाबु के बहिन भगवती देवी जी के मृत्यु हो गईल लेकिन उन्हा के भारत के गणराज्य बनवला के बाद ही बहिन के अंतिम क्रिया में गईनी। देश खातिर उन्हा के बहुत बलिदान देहले बानी। गणतंत्र भारत के पहिला राष्ट्रपति होखे के सौभाग्य राजेन बाबु के मिलल जवना के इन्हा के बहुत नीमन से निभवनी। लगातार दु बेर आ सबसे ढेर समय तक राष्ट्रपति बने के रिकॉर्ड इन्हें के लगे बा। 12 बरिस तक राष्ट्रपति रहला के बाद इन्हा के राजनीति से सन्यास ले लेहनी आ साबरमती आश्रम के तर्ज प मौलाना मजहरुल हक के बनावल पटना के सदाकत आश्रम में जीवन के अंतिम दिन कटनी। देश इन्हा के योगदान के सम्मत करत इन्हा के सबसे बड़का इनाम भारत रत्न से सम्मानित कईलस। आजीवन सदा जीवन जिये वाला ऐ राजनीतिक सन्यासी के 28 फरवरी 1963 के देहांत हो गईल।

देश खातिर आपन सबकुछ लुटा देबे वाला क्रांतिकारी के पैत्रिक निवास भी केंद्र भा राज्य सरकार ढंग से नईखे सहेज पईले आज तक। कुछ छोट-मोट काम भईल बा बाकिर ऊ नाकाफी बा। जीरादेई स्टेशन के भी हालत बहुते रद्दी बा। केंद्र आ राज्य दुनु सरकार से अनुरोध बा कि देश के पहिलका राष्ट्रपति के जन्मस्थान वाला जीरादेई स्टेशन के विश्व स्तरीय बनावल जाव, उनका के घर के संग्रहालय घोषित कईल जाव, उन्हा के सब चीज़ सहेजल जाव आ उन्हा के स्मारक के नया रूप दिहल जाव। राजेन बाबु के स्मारक टूटल-फूटल स्थिति में बा जहाँ कुत्ता के जमावड़ा भईल रहेला ? दुनिया के कवन देश अपना पहिलका राष्ट्रपति के याद के हतना दुर्गति कईले बा ? पश्चिमी सभ्यता के पीछे भागे वाला लोग का कबो वाशिंगटन डी. सी. शहर, उन्हा के नाम पे बनल यूनिवर्सिटी, संग्रहालय के स्थिति जनले बा ? राजेन्द्र कृषि विश्वविधालय के त हालत अऊरी बदतर बा ? भोजपुरिया आ पूर्वांचल के लोग के जमीर आ स्वाभिमान कहिया जागी ? कहिया अपना क्षेत्र के नेतृत्व करे वाला महान क्रातिकारी आ गांधीवाद के विरासत के सहेजे आ सम्मान खातिर आवाज उठाई ? आखिर कहिया ? हर साल 3 दिसम्बर आ 28 फरवरी आ के चल जाला लेकिन केहू दु गो फूल धरे खातिर भी राजेन बाबु के याद ना करेला, काहे ? सरकार पे दबाव बनी त जरूर कुछ परिवर्तन होखी। जरूरत बा अपना हक आ स्वाभिमान खातिर आवाज उठावे के।

गणतंत्र भारत के पहिला नागरिक

पंकज भारद्वाज

ए ह बात खातिर भोजपुरिया लोग गर्व करेला कि उनुका बीच जनमल एगो बेटा गणतंत्र भारत के पहिला नागरिक (राष्ट्रपति) बनल। उहो एक बेर ना, दू-दू बेर। आज तक केहू के इ गौरव ना मिलल। अपना प्रतिभा आ सादगी के बूते पूरा दुनिया में एगो अइसन पहचान गढ़लस जेकरा अगल-बगल आज तक केहू ना फटकल। कहां लिखाइल कबो दुबारा कि 'परीक्षार्थी परीक्षक से जादे जानता'। अब तक शायद पता चल गइल होई कि हम बात क रहल बानी बाबू राजेंद्र प्रसाद के। जे अपना मेहनत आ त्याग के बल पर देशरत्न कहइलन। आजादी के बाद त उनुका के देश के पहिला राष्ट्रपति बनावल गइल आ बाद में 'भारत रत्न' से नवाजल गइल। ऊ निर्विवाद रूप से एह भारत भूमि के रत्न रहन, जिनकर नाम लेते आजो सभकर माथा श्रद्धा से झुक जाला।

राजेंद्र बाबू के जनम 3 दिसंबर 1884 के बिहार प्रांत (तब बंगाल प्रेसिडेंसी) के छपरा जिला के जीरादेई गांव में भइल रहे। इनका बाबू जी के नाम महादेव सहाय रहे आ माई के कमलेश्वरी देवी। अइसे इ बहुत कम लोग जानत होई कि राजेंद्र बाबू के पूर्वज यूपी के कुआंगांव, अमोढ़ा के रहे वाला रहन। एहिजा से कुछ कायस्थ परिवार बहुत पहिले यूपी के ही बलिया में आके रहे लागल। लेकिन, कुछ परिवार के लोग एहिजो ना रहल आ सारन के जीरादेई गांव में जाके बस गइल। एह में राजेंद्र बाबू के पूर्वज लोग भी रहे। जीरादेई अइला के बाद राजेंद्र बाबू के दादा जी के हथुआ रियासत के दीवानी मिल गइल। परिवार काफी शिक्षित आ संपन्न रहे। एही आंगन में राजेंद्र बाबू के जनम आ पालन-पोषण भइल। पांच भाई-बहिन में सबसे छोट भइला के चलते इनका के पूरा परिवार के नेह-छोह मिलल। चाचा जगदेव सहाय के औलाद ना रहे। ऊ इनिके के अपना बेटा नीयन मानत रहन। पांच बरिस के उमिर में राजेंद्र बाबू के पढ़ाई-लिखाई शुरू हो गइल। तब के परिपाटी के मोताबिक एगो मौलबी से फारसी पढ़े शुरू कइलन। फेर छपरा के जिला स्कूल में दाखिला भइल। एही बीच तेरहे बरिस के उमिर में राजेंद्र बाबू के राजवंशी देवी से बियाह हो गइल। लेकिन, प्रतिभा के धनी राजेंद्र बाबू पढ़ाई जारी रखलन। अठारह साल के उमिर में कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रवेश परीक्षा में पहिला स्थान मिलल। प्रतिष्ठित प्रेसीडेंसी कॉलेज में नाम लिखाइल। इ तब जीरादेई आ छपरा खातिर ना, पूरा बिहार खातिर गर्व के बात रहे। 1915 में कानून में एम ए के डिगिरी लिहलन। गोल्ड मेडेल मिलल। बाद में कानून के क्षेत्र में ही डाक्टरेट के उपाधि हासिल कइलन। एही बीच कांग्रेस के सदस्य बन गइलन। हालांकि आजादी के लड़ाई से उनुकर जुड़ाव स्वदेशी आंदोलन से ही हो गइल रहे।

1917 के दिसंबर महीना में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन भइल। कलकत्ता के एह अधिवेशन में राजेंद्र बाबू भी शामिल भइलन। एहिजे उनुकर भेंट महात्मा गांधी से भइल। तब तक गांधी जी एगो भोजपुरिए लाल राजकुमार शुक्ल के बोलवला पर नीलहा अंगरेजन के आतंक से त्रस्त किसानन के हाल-चाल जाने खातिर चंपारण जाए के योजना बनवलन। गांधी जी राजेंद्र बाबू के एकर जानकारी दिहलन आ चंपारण चले के कहलन। भोजपुरांचल के चंपारण ही ऊ जगह रहे, जहां गांधी जी सत्याग्रह के पहिला प्रयोग कइलन आ एहमें राजेंद्र बाबू बढ़-चढ़ के भाग लिहलन। कहल जाए त सत्याग्रह के प्रयोगशाला चंपारण ऊ पहिला प्लेटफार्म रहे जहां भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इ दू गो बीर योद्धा एक साथ हो के काम कइलन। कामयाबी मिलल। गांधी जी भी राजेंद्र बाबू के प्रतिभा आ देशप्रेम से प्रभावित भइलन। एह संपर्क के बाद राजेंद्र बाबू के जिनिगी में बहुत बदलाव आइल। तब तक जलियांवाला बाग कांड के खिलाफ गांधी जी असहयोग आंदोलन छेड़ दिहलन। राजेंद्र बाबू भी एहमें शामिल भइलन। पूरा बिहार में एकर आग पसर गइल। एहर अंगरेज हुकूमत लाला लाजपत राय, पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद सहित कइगो बड़ नेता लोग के गिरफ्तार क लिहलस। फरवरी 1922 में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गइल। लेकिन, यूपी के चैरी-चैरा में हिंसक घटना भइला के चलते गांधी जी एकरा के रोक दिहलन। देश के कइगो नेता लोग एह खातिर गांधी जी के आलोचना कइलन जा। लेकिन, राजेंद्र बाबू पक्ष के पहाड़ बन के गांधी जी के संगे खड़ा रहलन। उनुका गांधी जी के रणकौशल आ बुद्धि पर भरपूर भरोसा

पंकज भारद्वाज

बक्सर के रहे वाला पंकज भारद्वाज जी मूलत: पत्रकार हईं बाकि अध्ययन-अध्यापन के काम में भी इहाँ के मन लागेला। साहित्य, समाज, राजनीति से जुड़ल मुद्दन पऽ रउआ सरोकारी तेवर के साथे आपन कलम चलावेनीं। दैनिक हिंदुस्तान, सन स्टार डेली, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा में राउर लेख लगातार छपत रहेला। रउआ पहिले द संडे इंडियन के साथे भी जुड़ल रहीं।

रहे। आगे चलके नमक सत्याग्रह छिड़ल। बिहार में राजेंद्र बाबू एकर अगुवाई कइलन। इनकर ख्याति अब पूरा देश में फइल चुकल रहे। 1934 में बिहार में भूकंप आइल। तब राजेंद्र बाबू बेमार रहला के बादो दिन-रात जाग-जाग भूकंप से तंग-तबाह लोगन के मदद कइलन। साथ देबे खातिर गांधी जी भी आइल रहन। उनुका सेवा भाव आ लगन के खूब सराहना भइल। कांग्रेस में राजेंद्र बाबू के कद अब तक काफी बढ़ चुकल रहे। सादगी आ प्रतिभा सभका पर भारी परत रहे।

1946 में संविधान सभा के गठन भइल। राजेंद्र बाबू के एकर अध्यक्ष बनावल गइल। अगिला साल देश आजाद हो गइल। 15 अगस्त 1947। हालांकि संविधान बने में समय लागल। आखिर दुनिया के अदभुत आ सबसे बड़ संविधान जे तइयार करे के रहे। हर जाति, धरम, भाषा-भाषी के हित आ हक के ध्यान में रखते हुए 26 नवंबर 1949 के भारत के संविधान अपना स्वरूप में आ गइल। 26 जनवरी 1950 के भारत गणतंत्र घोषित हो गइल आ भोजपुरी माटी से रचल-बनल राजेंद्र बाबू के देश के पहिला राष्ट्रपति बनावल गइल। इ साधारण बात ना रहे आ ना बिया। मोछ पूरि के बतिआवे के मोका मिलल कि राजेंद्र बाबू हमनी के रहन। इ के छीन ली। जवले इ धरती रही, तवले इ ताज भोजपुरांचल के हवाले रही।

लगातार दू बार राष्ट्रपति रहे के गौरव भी भारत में जनमल केहू दुसरा आदमी के ना मिलल। राजेंद्र बाबू एहिजो सभका से अलग निकलन। दू बार लगातार राष्ट्रपति रहलन। 1962 में एही पद से रिटायर भइलन। एही साल उनुका के 'भारत रत्न' से नवाजल गइल। लेकिन, एकरा बाद बहुत जादे दिन जिंदा ना रहलन। राष्ट्रपति भवन से निकलला के बाद राजेंद्र बाबू पटना के सदाकत आश्रम में रहे लगलन। एहिजे 28 फरवरी 1963 के

सांसन के तार टूट गइल आ भारत भूमि के इ महान सपूत सदा खातिर हमनी के छोड़ के विदा हो गइल। लेकिन, अपना व्यक्तित्व-कृतित्व के चलते राजेंद्र बाबू आजो हमनी के बीच जिंदा बाड़न। जब भी सादगी आ प्रतिभा के बेजोड़ मेल के बात चलेले, तब राजेंद्र बाबू के नाम सबसे पहिले सामने आवेला। राष्ट्रपति बने के बाद भी उनुका भीतर रत्ती भर गुमान ना आइल। शरीर थकला आ सेहत खराब रहला के बादो ऊ देश के लोगन के संगे निजी संपर्क बनवले रहलन। साल में डेढ़ सौ दिन रेलगाड़ी से सफर करस आ छोट-मोट स्टेशन पर रूक के आम आदमी से मिलस। राष्ट्रपति भवन में रहला के बाद भी आपन सारा काम खुद करस। आपन कमरा बहरला से लेके रसोईघर साफ कइल आ बर्तन मांजल जइसन काम ऊ खुद करत रहन। एह में उनुका तनिको हिचक ना महसूस होखे। एही चरित्र के त सब कायल रहे आ आजो बा। हम हृदय से नमन करतानी भोजपुरांचल के गर्भ से निकलल एह सपूत के, जेकर केहू जोड़ ना भइल।

भोजपुरी स्वाभिमान संमेलन 6, पंजवार (दिसंबर 3)

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद - कुछ रोचक आ प्रेरक प्रसंग

एस. डी. ओझा

3 दिसम्बर सन् 1884 में बिहार के सीवान जिला स्थित जीरादेई गाँव में कायस्थ परिवार में राजेन्द्र प्रसाद के जनम भइल। ऊ बचपने से तीक्ष्ण बुद्धि के रहले। ओ घरी बाल विवाह होत रहे।ए से 12 साल के उमिर में उनुकर बिआह राजबंशी देवी से भइल।सन् 1902 में ऊ कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज के एंट्रेंस परीक्षा में टॉप कइले रहले आ सन् 1915 में ऊ मास्टर इन लॉ आनर्स गोल्ड मेडल से कइले। ओकरा बाद वकालत कइले। जब गांधी जी असहयोग आंदोलन कइले त डॉ० राजेन्द्र प्रसाद वकालत छोड़िके देश के आज़ादी खाति संघर्ष करे लगले। देश आज़ाद भइला पर ऊ दू हाली भारत के राष्ट्रपति भईल रहले। अइसन महामहिम डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के जिनिगी से जुड़ल कुछ रोचक अउरी प्रेरक जानकारी ऐईजा दिहल जाता -

1. कलकत्ता के प्रेंसीडेंसी कालेज के प्रवेश परीक्षा हो गईल रहे। सब लइकन के नाम लिखा गईल रहे। उपस्थिति के दौरान आपन नाम ना बोलवला पर राजेन्द्र प्रसाद खड़ा हो के लेक्चरर से पूछले। उनुकर गवई अंदाज व वेशभूषा पर सब कक्षा हँसि पड़ल। लेक्चरर पूरा कक्षा के शांत करवले आ राजेन्द्र प्रसाद से उनुकर नाम पूछले। नाम सुनि के लेक्चरर पूरा कक्षा के बतवले कि ई लईका प्रवेश परीक्षा में प्रथम आईल बा। पूरा क्लास अचरज से भरि गईल।
2. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद बहुत तीक्ष्ण बुद्धि के रहले। उनुकर जवाब पुस्तिका पर एक बेरि परीक्षक लिखले रहे - Examinee is better than examiner अर्थात् परीक्षार्थी परीक्षक से बेहतर बा।
3. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एगो नामी वकील रहले। जब गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन चलल त ऊ वकालत छोड़ि के देश के आज़ादी खाति संघर्ष करे लगले। एगो केस पेंडिंग रहे रायबहादुर हरि प्रसाद सिंह के। एकरा खातिर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के इंग्लैण्ड जाए के परल। ई केस सीनियर वकील अपजौन के अधीन चलत रहे। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सुबह से शाम तक ए केस खातिर काम करसु। ई देखि के सीनियर वकील अपजौन कहले - "तहरा वकालत ना छोड़े के चाहत रहल हा। एमे तहार कैरियर बहुत ब्राइट रहल हा।" उनुकर बात सुनि के राजेन्द्र प्रसाद कहले - " देखीं, देश के आज़ादी बहुत जरूरी बा।देश के आगे वकालत एगो बहुत छोट चीज बा। देश आज़ाद हो जाई त हमार कैरियर भी बन जाई।" प्रसिद्ध वकील के आँखि में राजेन्द्र प्रसाद के प्रति प्रशंसा के भाव रहे।
4. एक बेरि डॉ० राजेन्द्र प्रसाद नाव से अपना घरे जात रहले। उनुका लगे एगो अंग्रेज बईठल सिगरेट पियत रहे। ऊ जानि बुझि के धुंआ उनुका ओरि छोड़त रहे। तंग आई के राजेन्द्र प्रसाद ओ अंग्रेज से अंग्रेजी में कहले - "ई सिगरेट जवन तू पियत बाड़ के कर ह ?" अंग्रेज घमण्ड में चूर हो के कहलसि - हमार। राजेन्द्र प्रसाद जी तुरन्त कहले, " जब सिगरेट तहार ह त धुंआ भी तहार भइल। ए से आपन चीज अपने पासे राखS।" सुनि के अंग्रेज लाजवाब हो गईल।
5. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति हो गईल रहले। उनुकर एगो चपरासी रहे। नाम तुलसी रहे। ऊ राजेन्द्र प्रसाद से उमिर में बड़ रहे। एक दिन तुलसी के गलती से एगो हाथी दांत के पेन टूटि गईल। ऊ पेन राष्ट्रपति के केहू खास आदमी उपहार में दिहले रहे। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद तुलसी के बहुत डांटि दिहले। दिन भर राजेन्द्र प्रसाद के काम में मन ना लागल।सांझी खानी ऊ तुलसी के बोलवले आ कहले -" तुलसी भाई ! हमरा के माफ़ क ई द। हमरा से गलती हो गईल हा। तू हमरा से उमिर में बड़ बाड़S। हमरा के तहरा के डांटे के ना चाहत रहल हा।"
6. पण्डित नेहरू आ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जब कभी मिली लो त ऊ लोग के आपुस में थोर बहुत मजाक भी हो जात रहे। एक बेरि विदेश से एगो डेलिगेशन भारत आवे के रहे। ओ में कुछ मेहरारू भी आवत रहली स। एही सम्बन्ध में पंडित नेहरू राष्ट्रपति भवन आईल रहले। ओईजा राजेन्द्र प्रसाद के मेहरारू राजवंशी देवी भी रहली। मजाक मजाक में नेहरू जी कहि दिहले कि जवन डेलिगेशन आवता ओ में मेहरारू भी बाड़ी सS। राजेन्द्र प्रसाद उन्हनियों से हाथ मिलहियें। राजबंशी देवी अवाक् रहि गईली आ फरमान सुना दिहलि कि हमरा जीते जी ई सम्भव ना होई। नेहरू जी आगि लगा ई के

एस० डी० ओझा

बलिया के रहे वाला, ई। एस डी ओझा जी, आईटीबीपी से डिप्टी कमांडेट के पोस्ट से रिटायर भईल बानी। हिन्दी आ भोजपुरी मे सोसल मिडिया प समानांतर रुप से लिख रहल बानी। देस विदेस के अदभुत जानकारी इतिहास वर्तमान से जुड़ल धार्मिक मान्यता से जुड़ल जानकारी पाठक के सोझा ले आवेनी। एह घरी इँहा के चंडीगढ मे रहि रहल बानी।

चलि गइले । डेलिगेशन आईल । राष्ट्रपति जी सबसे हाथ मिलवले । मेहरारू लोग से भी । राजबंशी देवी कवनो प्रतिकार ना कइली । बाद में नेहरू जी पुछले त डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहले कि हम अतने कहनी हा कि ना हाथ मिलाइबि त नौकरी चलि जाई ।

7. अंग्रेजन के गईला के बाद हमनी के आपन संविधान बनल । ओ में से कुछ क्लॉज़ ब्रिटिश काल के संविधान से लिहल गईल बा , जवन राजेन्द्र प्रसाद जी के जबानी याद रहे । ब्रिटिश संविधान के कतहूँ से मंगावे के ना परल ।
8. ग़ाज़ीपुर के रहे वाला बॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता , निर्माता , निर्देशक नज़ीर हुसैन एक बेरि डॉ० राजेन्द्र प्रसाद से मिले राष्ट्रपति भवन गईल रहले । उनुकर बोले के अंदाज़ देखि के राष्ट्रपति जी कहले रउआ भोजपुरी क्षेत्र के होई के हमरा से हिंदी में बात मति करीं । भोजपुरी में बोलीं आ हो सके त भोजपुरी में कवनो फ़िल्म भी बनायीं । नज़ीर हुसैन के बात लाग गईल । ओहि घरी ऊ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के आश्वासन दिहले कि ऊ भोजपुरी पिक्चर जरूर बनहियें । बाद में फ़िल्म बनल । जेकर नाव रहे। गंगा मईया ! तोहे पियरी चढ़इबो ।

28 फरवरी सन् 1963 के महामहिम डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी के मृत्यु हृदय गति रुकला से हो गईल ।

एगो परीक्षा अइसन भी

अनुराग रंजन

प्रेसीडेंसी कॉलेज कलकत्ता, स्नातक के परीक्षा शुरू भईल आधा घंटा बीतत होई । कॉलेज के मुख्य द्वार बंद हो चुकल बा । तबही एगो छात्र आईल आ गार्ड से परीक्षा हॉल में जाए के अनुमति मांगे लागल । गॉर्ड के ना मानत देख के उ छात्र प्राचार्य के बोलावे ला निहोरा कईलस। धीरे-धीरे बहस आ शोर बढे लागल ।

निरीक्षण के खातिर घुमत प्राचार्य शोर सुन के मुख्य गेट के तरफ बढ़ गईलन । उहाँ उ छात्र के बात समझ के उनका लेट अइला के वजह से परीक्षा में ना बईठे देवे के नियम के सफाई देके समझावे के प्रयास कईलन । छात्र के गुहार के कउनो असर उनका प ना भईल । उ जब लौट के जाए लगले त उ छात्र कहलन "आई एम द राजेन्द्र हु नेवर स्टूड सेकंड इन एनी एग्जाम" । प्राचार्य उनकर ई बात सुन के आखिरकार अनुमति दे दिहले । छात्र धन्यबाद देत अपना परीक्षा हॉल के रुख कईले । इहवाँ हम ई ध्यान दिलावे के चाहेंम की अंग्रेजी ग्रामर के नियम के अनुसार कउनो व्यक्ति के नाम के पहिले 'द' के प्रयोग ना होखे ला ।

एकर इस्तेमाल ई दर्शावे खातिर काफी रहे की उ छात्र के अनुसार उनका जईसन कोई ना रहे ना होई । खैर परीक्षा में बइठे के अनुमति मिलल । अंग्रेजी के पेपर में ओ घरी 10 गो सवाल पुछल जाव,आ ओमे से 5 गो सवाल ही करे के रहत रहे । प्रश्न पत्र के दसो सवाल हल क के उ छात्र लिखले "चेक एनी फाइव" आ आधा घंटा पहिल ही निकल गईले। जब परीक्षक कॉपी देखले त अतना प्रभावित भईले की उत्तर पुस्तिका प आपन टिपण्णी दिहले "एग्जामिनि ईज बेटर दैन द एग्जामिनर" ।

अब सवाल ई बा कि एतना प्रतिभाशाली छात्र के उ कौन मज़बूरी रहे जउन वजह से उ परीक्षा में देर से पहुँचल? दरअसल,चूँकि कॉलेज बंगाल के रहे त अधिकांश छात्र बंगाल के रहे लोग आ ओ लोग के एगो दूसर राज्य के छात्र (बिहारी) के हर परीक्षा में टॉप कईल अच्छा ना लागत रहे । ओहि से उ लोग उनका के परीक्षा के समय आधा घंटा देर से लिखा देले रहे,ताकि परीक्षा में ना बईठ पईला की वजह से उ टॉप ना कर पावस । ओह महान विभूति के नाँव 'राजेंद्र प्रसाद' रहे। उहाँ के आगे चल के स्वतन्त्र भारत के पहिलका राष्ट्रपति भईनी। उहाँ के योगदान देश के स्वंत्रता संग्राम में अतुलनीय रहे। उहाँ के समूचा जीवन देश-सेवा में बीतल।उहाँ के हमार बेरि-बेरि नमन बा...

■

जौहर जी के दू गो ठुमरी

जौहर शाफियाबादी

भोजपुरी साहित्य के आँचर में हर विधा आ शैली में रचल-गढ़ल साहित्यिक गोटा जड़े खाति प्रयोगधर्मी प्रयास के जरूरत बा। ठुमरी, शास्त्रीय गायन के एगो विशिष्ट शैली हऽ आ एह शैली के गायकी खाति बनारस घराना के आपन विशिष्ट पहचान बा। अबहिन ले उपलब्ध ठुमरी में ज्यादातर अवधी में लिखाइल बा। भोजपुरी में रचल ठुमरी के अभाव रहल बा। एह अभाव के भरे खाति जौहर शफियाबादी जी के इ प्रयास सराहे जोग बा। ठुमरी लिखे के इ परंपरा अउर आगे बढ़े एह खाति नवहा रचनाकार लोग के प्रयास करे के चाहीं।

1.

श्याम जो ना सर्दी में अइहन,
सावन बासे नैन
शरद ऋतु छीने सखी सुख चैन।
बाट जोहत सखी श्याम पिया के
पथराइल बा नैन।
शरद ...
जाड़ा के रतियाऽ बैरी सवतिया,
निकसे बिरह के बैन।
कासे कहीं हम रतिया के बतिया,
कल पड़े ना एक रैन।
शरद ...
सपना के रतिया बिरह के घतिया
कल ना पड़े एक रैन।
श्याम जो ना सर्दी में अइहन,
सावन बासे नैन।
जौहर प्रीत के रीत ना जाने
ना अयन ना गैन।
श्याम पिया मोरी लाज बचा लीं,
तोहरे प्रीत के दैन।
शरद ...

2.

कइसे नेह के आज बिसारीं,
सजी प्रीत के रीत के छारी।
जस दाबी तस भड़के अगियावान,
जतने भूलीं-बिसारीं।
कइसे ...
प्रीत के रीत ना जाने अनाड़ी,
हँसतऽ सुनतऽ देत गारी।
नेह के दियना बारलऽ भीतर,
गरजे बदरिया कारी।
कइसे ...
नैनऽ नीर सुखतऽ नहीं कबहूँ,
बाट जोहतऽ गिरधारी।
तड़पी-तड़पी बदरा तरसावे,
आग बिरह के भारी।
कइसे ...
जौहर प्रेम में क्षण भर जी लऽ,
तन-मन-धन सब हारी।
कइसे...

जौहर शाफियाबादी

जौहर शाफियाबादी जी शाफियाबाद शरीफ गोपालगंज , बिहार के रहे वाला हई। अपने भोजपुरी खाति सबसे पहिले 1970 में गोपालगंज अनुमंडलाधिकारी के सोझा अनशन कइले रहीं। भोजपुरी साहित्य के आँचर में हर विधा में सृजनरूपी खोइछाँ भरे में रउआ नेह-छोह से जुटल बानी। भोजपुरी में पहिला गजल महाकाव्य 'रंगमहल', ऐतिहासिक उपन्यास 'पुरबी के धाह', ललित निबंध संग्रह ,कबिरा खड़ा बाजार में, 'वेद और कुरान' सहित दर्जन भर बहुचर्चित कृति प्रकाशित भइल बा। वर्तमान में इहाँ के 'भोजपुरी व्याकरण' लिखे में पूर्ण मनोयोग से जुटल बानी।

पीड़िया पर्व आ ओकरा से जुड़ल मान्यता (भाग – 2)

ज्योत्सना प्रसाद

पीड़िया त्योहार कब शुरू भइल एकर ठीक-ठीक जानकारी नइखे। वइसे एकर सम्बन्ध द्वापर काल से जोड़ल जाला जवना घड़ी भगवान श्री कृष्ण एक ओर गाय के महत्व समाज में स्थापित करत रहले त उहई उनकर बड़ भाई बलराम अपना ओह धरती के सम्मान दिलावे खातिर हमेशा तत्पर रहस जे उनकर आ उनका प्रजा के पेट भरत रहे। जवना कारण ऊ अपना ओह धरती के अपना माता जइसन प्रतिष्ठा देत रहले। एह से उनका कंधा के शोभा हमेशा खेत जोतेवाला हल बढ़ावत रहे। उनका अपना कंधा पर हमेशा हल के धारण कइला के कारण ही हलधर के नाम से उनका के अभिहित कइल गइल।

चूँकि एक राजा के, जमींदार के चाहे घर के मुखिया के ई परम कर्तव्य होला कि ऊ अपना पर आश्रित लोगन के पालक बन के रहे। एह से सबके पर्याप्त मात्रा में भोजन मिले, बच्चन के उचित शारीरिक आ मानसिक विकास खातिर पर्याप्त मात्रा में भोजन के साथे-साथे दूध-दही-घी-मक्खन भी मिले ई जरूरी होला। मूलरूप में एही सोच के कार्यरूप में परिणत करे खातिर नन्द के एह क्षेत्र में ई महत्वपूर्ण काम के दायित्व दूनू भाई श्री कृष्ण आ बलराम पर सौंपल गइल ताकि नन्द के सभे नागरिक (लइका-सयान,बूढ़-जवान) के पर्याप्त मात्रा में अनाज आ पौष्टिक आहार मिले एकर जिम्मेवारी बलराम पर रहे त उहई सब नागरिकन के (विशेष रूप से बच्चन के) उचित मात्रा में दूध, दही ,घी, मक्खन मिले एकर जिम्मेवारी भगवान श्री कृष्ण पर रहे। एह दूनू जिम्मेदारी के निभावे खातिर सबसे पहिले ई आवश्यक रहे कि ओह क्षेत्र के लोगन के हृदय में कृषि आ गौ के प्रति आस्था होखे। इहे कारण रहे कि भगवान श्री कृष्ण स्वयं अपना मुँह से कहले बानी कि उहाँ के अपना असंख्य नामन में 'गोपाल'(यानी गौ के पालन करेवाला) ही सबसे अधिक प्रिय बा। दोसरा ओर बलराम कृषि के आदर देबे खातिर स्वयं 'हलधर' बन गइले।

नन्द के प्रजा अपना आस-पास अत्याचारी आ राक्षसी प्रवृति के पोषक लोगन से घिरल रहे। एह से उनका अपना प्रजा के हमेशा चुस्त-दुरुस्त रखे के ही पड़ित। काहेकि दुश्मन के का चाल का बा ई जहाँ समझे के जरूरत पड़ी त उहई ओह चाल के जवाब देबे खातिर तैयार भी अपना के रखे के पड़ित। प्रजा के हमेशा तैयार रखे खातिर ई आवश्यक बा कि ओकरा सिर्फ आपना जीवन के चलावे खातिर ही पेट ना भरे के होखे अपितु ओह प्रजा लोगन के बाजू में भी एतना ताकत भी होखे के चाहीं कि ऊ अपना ओह अत्याचारी दुश्मन के सामने छाती तान के खड़ा हो सके। एह से अपना के शक्ति-सम्पन्न बनावे खातिर सिर्फ अनाज पर आश्रित ना रहल जा सकेला। अपना शरीर आ बुद्धि के समुचित विकास खातिर हमरा अनाज के साथे दूध आ ओकरा से बनल सामग्री के भी भोजन में लेबे के जरूरत पड़ी ताकि ओह लोगन के समुचित रूप के सिर्फ ऊपरी शरीर के ही विकास ना होखे बल्कि ओकरा साथे ओह लोगन के हड्डी भी मजबूत होखे। एही से श्री कृष्ण के विचार रहे कि जब कंस अइसन बड़ा, शक्तिशाली आ राक्षसी प्रवृति के लोगन के नजर नन्द के क्षेत्र पर होखे त नन्द के प्रजा के भी अपना के एह योग्य बनावे के पड़ी जवना से ऊ लोग जहाँ एक ओर अपना दुश्मन के पहचान कर सके, ओकर चाल समझे में सक्षम हो जाय आ ओही के अनुकूल आपन रणनीति बनावे। ऊहई दोसरा ओर ई भावना काम करत रहे कि नन्द के प्रजा अपना में गाय के दूध-दही के सेवन करे के आदत डाले। जवना से ऊ लोग अपना के शारीरिक आ मानसिक रूप से एतना हृष्ट-पुष्ट कर ले जवना के परिणाम स्वरूप कंस जइसन राक्षसी प्रवृति के लोगन के आक्रमण के समय नन्द के सेना कम से कम सीना तान के डटल त रहे। ऊ ई भी चाहत रहले कि नन्द के नागरिक शारीरिक आ मानसिक रूप से एतना मजबूत हो जाए कि ओकरा में आपन लड़ाई लड़े के स्वयं में साहस होखे।

पीड़िया व्रत बहिन द्वारा अपना भाई के समग्र खुशहाली आ अपना भाई के प्रति ओकरा हृदय में केतना स्नेह बा ओकरा के व्यक्त करे वाला त्योहार ह। ई बात स्पष्ट हो जाई पीड़िया के एगो गीत से जवना में बहिन अपना भाई से आपन व्रत तोड़े खातिर उपहार में 'बारलधान' माँगतारी आ भाई ओकरा के ले आवे में महँगाई के दुहाई देत आपन असमर्थता व्यक्त करतारे आ अपना बहिन से कहतारन कि ऊ पीड़िया व्रत तोड़ देस लेकिन बहिन

ज्योत्सना प्रसाद

ज्योत्सना जी (जन्मस्थान: सिवान) हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी.ए. (प्रतिष्ठा), एम. ए. आउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी। हिंदी में उपन्यास "अर्गला" प्रकाशित बा दू गो उपन्यास "अंततः" आउर "मुक्तकुंतला" , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा। अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास "अल-रहीना" के हिंदी में "बंधक" शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन। जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलन में कविता पाठ। आजकल मुंबई में निवास।

कहतारी कि ऊ ई व्रत तोड़ ना सकेली काहेकि ऊ अपना भाई के दीर्घायु आ खुशहाली खातिर ही ई व्रत कइले बारी -

'चलले कवन (भाई के नाम) हो भैया मधुवन देशवा हो
आरे माँगेली कवन (बहिन के नाम) हो बहीना बारल धनवा हो
बारल धनवा ए बहिना बड़ा रे महँग भइले हो
आरे छोड़ी द हुआ हो ए बहिना पीड़िया बरतिया हो।"

(अपना भाई द्वारा बहिन के ई सुझाव देहल जाता कि ऊ पीड़िया व्रत छोड़ देस। एह पर उनकर बहिन का जवाब देतारी ई देखी-

"कइसे मैं छोड़ू ए भैया पीड़िया बरतिया हो
अरे भूखल बानी हुआ हो ए भैया तोरे बलिहरिया हो।"

एह तरह एह गीत में ई प्रत्यक्ष हो रहल बा कि पीड़िया त्योहार एक ओर जहाँ अपना भाई के प्रति बहिन के स्नेह दर्शावे के त्योहार ह त उहई दोसरा ओर अपना माटी से जुड़ाव के भी त्योहार ह काहेकि बहिन अपना भाई से कवनो कपड़ा चाहे कवनों गहना नइखी माँगत। ऊ माँगतारी आपन व्रत तोड़े खातिर सिर्फ 'बारलधान'।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य ह। एह से उहाँ के लोगन के जीविका के मुख्य साधन कृषि आ ओकरा से जुड़ल व्यवसाय ही बा। देश के एतना आगे बढ़ गइला के बावजूद आजो इहाँ कल-कारखाना के अभाव बा। एह से अधिकांश लोग प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूप से कृषि पर ही निर्भर करेला। गाँव में संयुक्त परिवार के प्रचलन बा। एक ही मकान में दू-दू ,तीन-तीन ही ना कवनों-कवनों घर में त चार –चार पीढ़ी के लोग एके साथे रहेला। सबके घर में बइठे के जगह मिल जाव एह से कई-कई घरन में मर्दाना आ जनानखाना दूगो खण्ड कइल रहेला। रात में सुते खातिर घर में अगर कुछ लोगन के जगह ना मिल सकल त घर के औरत त बाहर जाई ना बाकिर मर्दाना लोगन के दोसरा जगह अपना सुते खातिर व्यवस्था करे के पड़ेला। अगर अपना घर में जगह ना मिल सकल त बथान में सुते चल गइल। अगर ओकरो से काम ना चलल त कवनों पेड़ के नीचे आपन खाट डाल लेहल गइल। अगर जाड़ा के रात भइल त अलाव जला लेहल गइल आ क़िस्सा-कहानी कहते-सुनते रात गुजार लेहल गइल दुःख, चाहे सुख से कइसहू रात गुजरिए जाला।

प्राय: हर गाँव के अइसन परिस्थिति आज हो गइल बा कि जमीन के चंद टुकड़ा पर बड़ा-बड़ा परिवार के बोझ बा। काहेकि जमीन रबर त ह ना कि ओकरा के अपना हाथ से खींच के बढ़ावल जा सकेला आ दोसरा ओर ओपर आश्रित परिवार के संख्या दिन दूना रात चौगुना बढ़त रहेला। घर के अइसन स्थिति में अगर बेटी के भी ओह जायदाद में हिस्सा मिले लागित त माटी के देवता चन्दने में ओरा जाइत। कहे के अर्थ ई कि पूरा जमीन सिर्फ रिबन नाहिन ही ना होइत बल्कि झूर-डरेर में ही ओरा जाइत। बाकिर बेटी भी त ओही घर के सदस्य होले। ओकरो भी त अपना पारिवारिक सम्पति पर अधिकार आ सम्मान मिलही के चाहीं। एह से बेटी के अच्छा घर-वर देख के श्रद्धा से दान-दहेज देके विवाह क देहल जाला। (अपना तरफ ई कहल जाला कि गाँव में कोई बेटी बिना विवाह के आ कोई मुरदा बिना कफन के ना रह सकेला। अगर घर वाला के पास पईसा ना रहल त का भइल गाँव में चंदा लगाके भी बेटी के कन्यादान त कइए देहल जाला आ कन्यादान के महापुन्य के काम भी मानल जाला। एह से कई धार्मिक प्रवृति के लोग एह काम में बढ़-चढ़ के हिस्सा लेला। सम्भवत: कलांतर में इहे बेटिहा के श्रद्धा कुछ बेटहन के लालच आ माँगें के प्रवृति में अब परिवर्तित हो गइल बा जे असमर्थ पिता खातिर आज काफी पीड़ादायक सिद्ध हो रहल बा) एतने भर ना त्योहार पर बेटी के इयाद कइल जाला कभी खिचड़ी भेज के, कभी होली भेज के, त कभी तीज भेज के। बहिन भी एतने में संतुष्ट रहेले। एकरा से अधिक ऊ कुछ ना चाहेले। पीड़िया के एगो गीत में देखीं कि एकरा के केतना बढ़िया से चित्रित कइल गइल बा –

"ओह पार (नाम लेके) हो भैया खेलेले हो शिकार
एह पार (नाम लेके) हो बहिना मोटरिया लेले हो ठाढ़
चुप रह - चुप रह ए बहिना मत हो उदास

बाबा के सम्पत्तिया ए बहिना आधा देब हो बाँट (एह पर बहिन कहतारी-) बाबा के सम्पत्तिया ए भैया तोहरे के हो बाढ़ हम दूर देशी बहिनिया मोटरीए के हो आस।"

अपना समाज में मजबूत पारिवारिक जीवन के कल्पना कइल गइल बा जे पति-पत्नी के एक मजबूत डोर में बन्धला से ही सम्भव होई। एह से आमतौर पर घर के सदस्य द्वारा सुखी दाम्पत्य-जीवन के ही आशीर्वाद देहल जाला। एगो बहिन ई बात ठीक-ठीक समझेले कि ओकर नइहर ओकरा भाई-भौजाई से ही चली। काहेकि केहू के माई-बाप केतना दिन ले जिन्दा रही ? एही बात के मद्देनजर पीड़िया के एगो दोसर गीत देखीं –

(नाम लेके) भैया चलले अहेरिया (नाम लेके) बहिना देली आशीष हो ना
जीयस ओ मोरे भैया जीयस भैया लाख बरिस हो ना
भैया के बाढ़ों सिर पगिया भौजी के बाढ़ों सिर सेंदुर हो ना।"

अइसे त पीड़िया त्योहार एक क्षेत्रीय त्योहार ह आ क्षेत्रीयता आ धार्मिकता के दृष्टि से एकर जवन महत्व व ऊ त जग-जाहिर बा ही लेकिन एकरा साथे जब हम अपना बौद्धिक चेतना के कसौटी पर एह त्योहार के कसेब त हमरा सुखद आश्चर्य होई। कारण ई एक क्षेत्रीय त्योहार होते हुए भी अपना में एतना कुछ समाहित कइले बा। उहो एक प्रवचन कर्ता के बोझिल प्रवचन में ना बल्कि सरस ढंग से। ऊ सब विशेषता पीड़िया अपना में एतना सहजता आ सुन्दरता से आत्मसात कइले बा कि एक विश्लेषक के पारखी नजर ही ओकरा के देख पाई। आमलोग त ओह उदेश्य के बिना कुछ सोचले-समझले, ओकर विश्लेषण कइले अपना जीवन में ओह त्योहार के एक आवश्यक हिस्सा समझ के सहज रूप से उतार लेला। पीड़िया अपना में कई विशेषता के एतना सुगम आ

व्यवहारिक तरीका से समाहित कइले बा कि आश्चर्य होला।

एह बात में सत्यता बा कि हमार नजदीक से नजदीक रिश्तेदार अगर शारीरिक रूप से हमरा से दूर बा त हमरा जीवन में आइल कोई आकस्मिक घटना पर चाह के भी हमरा साथे ऊ खड़ा ना हो पाई। ओह परिस्थिति में हमार पड़ोसी ही हमार साथ देला। एह से अपना पड़ोसी से हमरा सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रखे के चाहीं। एह भावना के पीड़िया त्योहार के माध्यम से केतना सुंदर ढंग से रखल बा एह त्योहार के सामूहिक त्योहार बना के। एक महीना तक बसिए मुँहे एक साथे नित्य पीड़िया के कथा सुनल, रात के रोज अगर सम्भव ना भइल त कम से कम त्योहारन के दिने, पीड़िया जोड़ात समय एक साथे बइठ के पीड़िया के लगे गीत -मंगल गावला से पड़ोसी-पड़ोसी के बीच के सम्बन्ध त प्रगाढ़ होखबे करी आ एक-दूसरा के अच्छा से जान-समझ भी पाई।

पीड़िया त्योहार जवना घड़ी प्रारम्भ भइल होई निश्चित रूप से ट्रैक्टर त बाजार में नाहिए होई जे हमरा खेत के कोड़े आ जोते के काम में हमार मदद कर दित। आज तरह-तरह के ट्रैक्टर बाजार में आ गइल बा बावजूद एकरा जमीन के छोट-छोट टुकड़ा, चाहे आड़ा -तिरछा टुकड़ा पर ट्रैक्टर चलावल नाको चना चबाना जइसन ही होला। अइसन परिस्थिति में अपना खेत के जोतल-हेगावल बैल के कंधा पर ही रहेला। अगर हमरा खेती खातिर बैल चाहीं त सबसे पहिले हमरा गाय के सुरक्षा देबे के पड़ी। पीड़िया में पीड़िया लगवला के नाम पर दीवार पर जे कुछ भी कलाकारी होला ऊ सब गाय के गोबर से ही। गाय के गोबर अगर चाहीं त हमरा गाय के त पालही के पड़ी। एतने भर ना कि गाय के सिर्फ ओकरा बछड़ा के लोभ में ही पालल जाला। गाय के दूध त बच्चन खातिर अमृत सरीखे होला। एह से अगर ऊ अमृत हमनी के अपना बच्चन खातिर चाहीं त ओह अमृत के श्रोत के त अपना पास रख ही के पड़ी। वइसे भी कहल जाला कि भैस के दूध से जहाँ हमार शरीर अधिक मजबूत होला उहई गाय के दूध से दिमाग। अगर हमरा आपन बच्चा स्वस्थ शरीर के साथे प्रखर बुद्धि के भी चाहीं त हमरा गाय के दूध अपना बच्चा के पिलावे के ही पड़ी।

हम जवना स्थान पर रहेनी, ओकर प्रत्यक्ष प्रभाव हमरा स्वास्थ्य पर पड़ेला एह से हमरा अपना आस-पास के स्वच्छता पर विशेष ध्यान देबे के चाहीं। पीड़िया में पीड़िया के जवना स्थान पर प्रवाहित कइल जाला ओह स्थान के पीड़िया त्योहार आ भीड़-भाड़ के बहाने ही सही बहुत साफ-सफाई हो जाला। इहाँ तक कि सिर्फ ओह तट के चारोओर के ही ना बल्कि ओह पानी के भी साफ-सफाई कइल जाला जवना में पीड़िया के प्रवाहित कइल जाला। एह तरह से सफाई के प्रति जागरूकता लोगन में बढ़ेला।

पीड़िया एक तरह से अपना फसल खातिर ईश्वर के धन्यवाद देबे के भी त्योहार ह। एही से एह त्योहार में दिनभर उपवास रखला के बाद अपना खेत के बारल धान चाहे सुग्गापंखी धान से आपन उपवास तोड़ल जाला आ पीड़िया घाट पर जे गले मिलल जाला ओह में बताशा आ लड्डू के साथे फरुई यानी एक विशेष तरह के चावल के भूजा रहेला।

एह तरह से हम कह सकतानी कि पीड़िया त्योहार महज एक भाई-बहिन के स्नेह-सम्बन्ध के परिभाषित करे वाला त्योहार ही ना ह बल्कि एक अइसन त्योहार ह जे मानव-जीवन के व्यापक ढंग से परिभाषित करेला आ हमरा के एक अच्छा नागरिक,अच्छा पड़ोसी बने के प्रेरना देला। एतने भर ना एह सब से बढ़ के पीड़िया हमनी के एक अच्छा मानव बने के संदेश देला।

भोजपुरी स्वाभिमान सम्मेलन 6, पंजवार

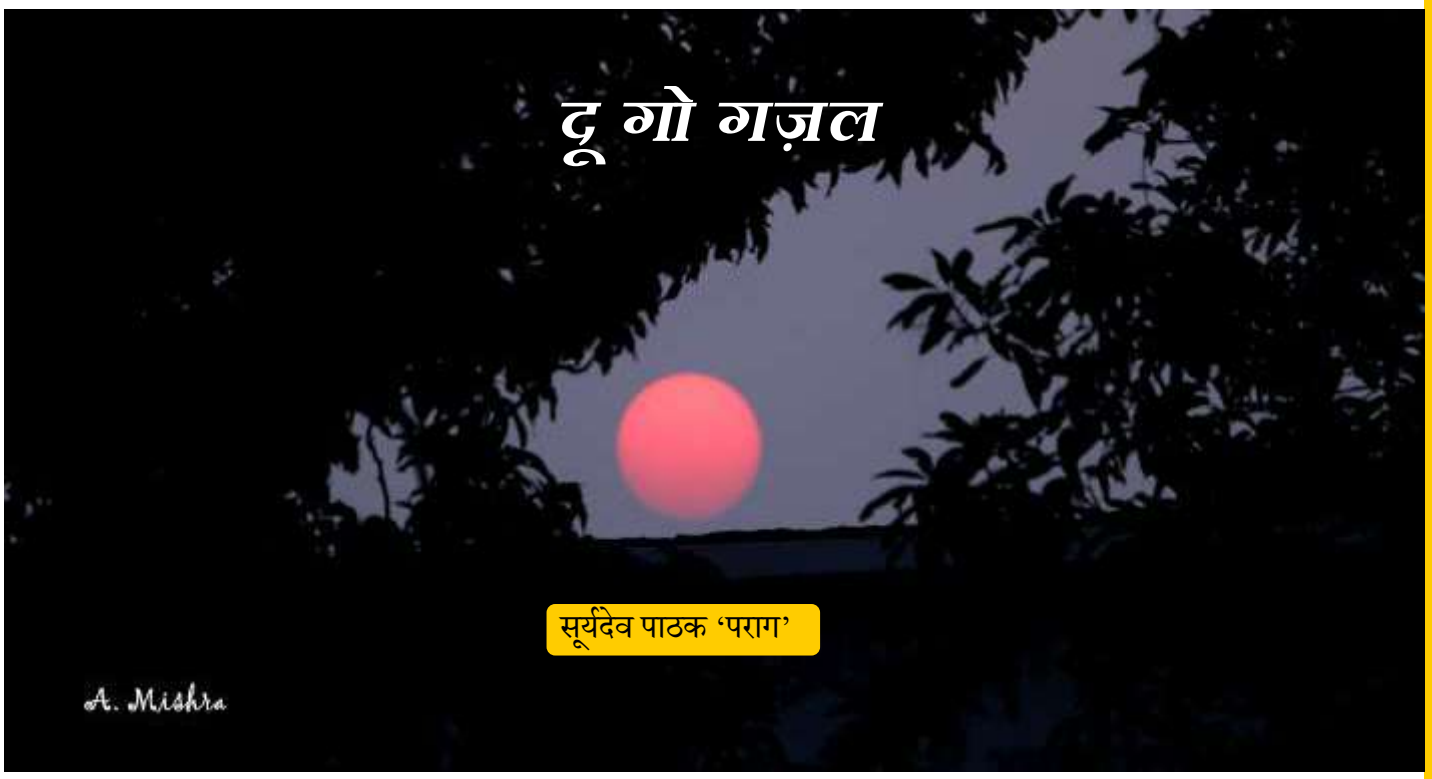

दू गो गज़ल

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

1.

उगल बाड़ें चनरमा नीक घर लागे
उजाला से मगर चोरन के डर लागे

बहल अइसन हवा, उजड़त गइल सब गांव
बसे खातिर सुहावन अब शहर लागे

खपत बढ़ गइल पेट्रोल-डीजल के
हवा के साथ में फइलल जहर लागे

विषइला साँप के मुँह में जहर होला
मगर इंसान विष से तर-ब-तर लागे

सभे दहशत में जिनगी जी रहल बाटे
इहाँ मउवत के साया हर पहर लागे

2.

बहुत बा शोर, भाई
लागल बा जोर, भाई

लड़ी केहू घरे में
बनी कमजोर, भाई

ना बीती रात जबले
ना होई भोर, भाई

कहाँ केकर इहाँ बा
कि हम तू तोर, भाई

बड़ा नाजुक बनल बा
दू दिल के डोर, भाई

कुआँ से निकल देखऽ
समुंदर ओर, भाई

www.bhojpurisahityangan.com

मउसी ईया

कुंदन सिंह

हमरा के चिन्हा तारु मउसी ईया !'

किरकेट खेले जात अचानक से मउसी ईया पर नजर परल त हम पूछ देनी।

'हँ चिन्हत नइखीं, कूदन हव'

कांपते हुए मउसी ईया के मुँह से आवाज निकलल जवन की एतना धीरे रहे कि खाली हमरा सुनाएल हमरा साथ में खड़ा संघतिया लोग के ना सुनाएल।

'कुछ खाये के मन करता मउसी ईया?'

औपचारिकता वश हम पूछ लेनी काहे कि हमरा और कुछ ना सुझल।

'हँ दू गो बिस्कुट खइति'

लगभग ओतने तेज़ आवाज में मउसी ईया के इ बच्चा वाला फरमाइश सुन के हमार मन कचोट गईल। दुआर पर धान के बोझा से टेक लगा के बइठल मउसी ईया के कुछ देर खातिर हम देखत रह गइनी।

'चलऽ यार आके खिया दिहऽ' साथे खड़ा संघतिया लोग के आवाज आइल।

'ना भाई तू लोग चलऽ हम आव तानि'

बोल के हम तेजीये मे धउरत अपना घरे भगनी और जाके अपना भतीजी के बिस्कुट के डिब्बा खोलनी। अइसे त एह डिब्बा में किसिम किसिम के बिस्कुट रखल रहत रहे लेकिन जब डिब्बा खोलनी त सिर्फ चार गो बिस्कुट रहे उहो "मेरी गोल्ड"। हम चारो बिस्कुट निकाल के वापस भगनी, शायद बिस्कुट के डिब्बा भी बंद ना कइले रहनी। पहुँचनी त मउसी ईया मुड़ी निचे कइके ओहिजा बइठल रहली। उनका शरीर के शायद ही कवनो अंग रहे जवनकि कांपत ना रहे। हम निचे उनका सोझा बईठ गइनी और कहनी कि मउसी ईया खा लऽ। मउसी ईया बिस्कुट हाथ में ले लेली आ धीरे-धीरे कुछ कहे लगलि, शायद आशीर्वाद देत होइहन लेकिन लइका लोग के याद आइल त हम उठ के दौड़ लगा देनी फील्ड के तरफ जहाँ लइका लोग किरकेट खेले ला हमार इंतजार करत रहे। हम देख भी ना पइनि की बिस्कुट मउसी ईया खइलि की ना।

मउसी ईया हमरा ईया के छोट बहिन रहली आ उनकर बियाह हमरा पटीदारी में भइल रहे। पापा उनका के मउसी कहस त हमनी के मउसी ईया।जहाँ हमार पापा दू भाई रहलन उहाँ मउसी ईया के छव गो बेटा आ दू गो बेटी। असमय ही अपना पति के गुजरला के बाद मउसी ईया ही सब बच्चा के पाल पोस के बड़ कइले रहली। उनका घर में केहु कमाए वाला ना रहे आ जवन भी धन सम्पति रहे उ हर सीजन में खेत से निकले वाला अनाज रहे जवन की एतना भी पर्याप्त ना रहे जेसे की साल भर उ आपन आ अपना लइकन के पेट भर सकसु। लेकिन मउसी ईया में हिम्मत त रहे उ हार ना मनलि आ चाहे माड़ भात होखे भा मकई के दरिया के भात खिया के बेटा लोग के जवान कर लेली।

अब का अब त मउसी ईया के सब दुःख दूर हो जाये वाला रहे। अब लइका बहरा जाके कमईहन सन और माई के आराम। मउसी ईया अब हमेशा खुश रहस। शायद दुखी त उ तब भी ना रहली जब उ बेसहारा रहली, अब का? अब त उनका के कोई आँख त देखाओ, उनकर छओ बेटा आँख निकाल लिहन सन। मउसी ईया के एगो अउरी खूबी बतावत चलेम की कोई के कुछ तकलीफ होखे मउसी ईया के लगे ओकर तुरत समाधान रहे। पेट दुखाता? तनी पानी गरम कके एगो बोतल पेट पर टघरा द ना नरम हो जाई। मुँह पाकल बा? अमरुद के टूसा चबा ल ठीक हो जाई। ए तरह के सैकड़ो उपाय उनका लगे रहे ।हमार ईया उनका के खीसे सिविलसार्जन कहस। उ हमरा ईया से हमेशा कहस कि देख लिहे बहिना तोरा दू गो बा तोरा दुःख होई लेकिन हमरा छौ गो बा एगो ना रखी त एगो रखी हमरा जिनगी में अब दिक्कत नइखे।

समय के पहिया चलते गइल, मउसी ईया अपना दुनो बेटी लोग के भी हँसी ख़ुशी विदा कर देली और छव गो पतोह भी बोला लिहली। गोदी में पोता-पोती खेले लगलन सन। एह बिच में भगवान हमरा ईया के भी एगो हार्ट अटैक के जरिये अपना पास बुला लेलन । लेकिन मउसी ईया.....

उनकर एगो बेटा गाँव में रह के खेती करेलन और बाकी पांच जाना आपन आपन परिवार देखता लोग। लगभग सब लोग अपना बाल बच्चा के बाहर ले गईल जहाँ भी नौकरी-चाकरी बा। लेकिन मउसी ईया के का होई उनका के के देखी?

कुंदन सिंह

छपरा बिहार के रहे वाला कुंदन सिंह जी , पेशा से मेकेनिकल इंजिनियर हई । हिन्दी मे गजल कविता कई गो पत्र पत्रिका मे प्रकाशित हो चुकल बा । कुंदन जी के भोजपुरी मे ई पहिला रचना ह । कुंदन जी बहुराष्ट्रीय कम्पनी मे कार्यरत बानी । एह घरी दिल्ली मे रहि रहल बानी

एगो गीत के बोल याद पड़ गइल..."खेत जायदाद सब बंटाई बीरना, कैसे माई के अँचरवा बाँटल जाई बीरना।"

मउसी ईया के अब उ समय आ गइल बा जब उनकर देखभाल के जरुरत बा। लेकिन देखभाल के करी सबके आपन-आपन लइका के भविष्य बनावे के बा। गाँव में रहि के त लइका ख़राब हो जइहें सन। मउसी ईया बेचारी जबतक देह चलल, जबतक अपने आप के सम्हार सकली तब तक कईली फिर बिछौना पकड़ लेली। उ बिछौना फिर धीरे-धीरे अखरे चौकी के रूप ले लेलख और मउसी ईया आपन नित्य करम करे लायक भी ना रह गइली। अब उनका जाए के इंतजार होखे लागल, लेकिन कहाँ अभी शायद उनका जिनगी के संघर्ष पूरा नइखे भइल, अभी शायद उनका और भी बुरा देखे के बा। बाद में लोग उनका के पानी-खाना भी पूछल छोड़ देलस और मउसी ईया अभीयो जियतारी।

हमरा उनका के बिस्कुट देला लगभग एक साल गुजर गइल होई। एगो खबर मिलल रहे की चौकी पर से गिर के उनकर डांण टूट गइल बा और उ अब आपन नित्य कर्म भी ओहि चौकी पर ही करेली जवना के धोवे पोछे वाला कोई नईखे। उनकर बड़कू बेटा से जब दुर्गन्ध बर्दाश्त ना होला तजवना कोठरी में उ बाड़ी ओमे दू लोटा पानी गिरा के झाड़ू मार देवेलन।

हमार बियाह के दिन धराइल बा लेकिन मउसी ईया के कवनो ठीक नइखे की उ बियाह देख पइहन की ना।

गीता में भगवान श्री कृष्ण कहले बाड़न की आदमी के अपना कर्म के फल एही जनम में भोगे के पड़ेला त अइसन का कर्म कईली उ की उनका मऊगत भी नसीब नइखे होत? उनका के बचपन से लेके आजतक जाने वाला जे भी बा ओकरा त याद नइखे अइसन कुछ। भगवान अपना बात के झूठ मत होखे दीं आ बुला लीं मउसी ईया के अपना पास।

वहम आ भय

समता सहाय

एगो फांसी के सजा पायिल कैदी से कहाईल तहरा के फाँसी के सजा ना देके जहरीला सांप से डंसवावल जाई। ओकरा आँख पर पट्टी बाँध दिहल गईल। अब पीन लेके ओकरा गोड़ में कसि के हला दिहल गईल। उ कैदी के प्राण छूट गईल डर-भय के मारे।

भय ओह कैदी के भीतरी अईसन हारमोन पैदा कईलस कि उ साँप के जहर के बराबर हो गईल। कहे के मतलब भय अईसन चीज ह जे प्राण भी ले लेवेला। गाँव-देहात में इहे भय भूत कहाला। वहम भी कह सकेनी।

गाँव में हल्ला रहे कि बर के फेंड़ के तरे एगो भूत रहेला। साँझ होत ना होत सभे उ रास्ता से आईल-गईल छोड़ देवे। ओही गाँव के एक जना पंडी जी कहनी, हम भूत-प्रेत से ना डेराई, आजमा ल लोग। अब एगो खूँटा दिआइल उनका के आ कहाईल कि रात के ओजा खूँटा गाड़ आएब ? अब रात में खूँटा लेके पंडी जी चल दिहनी गाड़े, अउर गाँव के लोग सुते चल गईल। भोर भईल हल्ला मचल पूरा गाँव में, पंडी जी सिधर गईनी। पूरा भीड़ लाग गईल।अब पंडी जी के लगे डरे केहू ना जाए कि भूत मरले बा। आखिर एक जाना ढेर हिम्मत कइके लगे गईले लास के हिलवले-डुलवले। देखल गईल खूँटा जाँते में पंडी जी के धोती जँता गईल रहे। पंडी जी भर मन परयास कईले होखी हें भागे के बाकीर खोंसायिल धोती के मारे भाग ना पईले होखीहें। जब उठत होखीहें तब उ रोक देत होखीत। अउर उहे भूत के भय उनकर प्राण ले लिहल।

साचो भय अउर भूत के कौनो इलाज नईखे।आपन सोच के हिसाब से भी शरीर में प्रक्रिया होखेला।

www.bhojpurisahityangan.com

गंगोत्री-गोमुख यात्रा

पी. राज सिंह

गंगा के उद्गम स्थल भ्रमण के इच्छा कवनो भी भारतीय खातिर एगो सामान्य आ स्वाभाविक इच्छा हो सकेला। यदि अवसर मिलल आ स्वास्थ्य साथ देहलस त उ ओह स्थान पर स्नान, जलांजलि, पूजन से भी ना चूकि। पुराण, मिथक के अनुसार राजा भगीरथ गंगा के प्रसन्न करे खातिर घनघोर तपस्या कईले कि उनकर पूर्वज राजा सागर के 60,000 पुत्रन के त्राण आ मोक्ष मिल सके। राजा सागर के पुत्र लोग मुनि कपिल के तपस्या के अनजान वश भंग कर देले रहे लोग। आ श्राप मिलला के कारण उ लोग भस्म हो गइल रहे। भगीरथ के तपस्या से खुश होके गंगा धरती पर अवतरित भईली आ राजा सागर के पुत्रन के पाप मुक्त कई के मोक्ष प्रदान कईली। गंगा स्नान के इहे परम्परा आज ले चलत आवत बा।

गंगा एह देश के कई सदियन से सामाजिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक जीवन के आधार रहल बाड़ी। गंगा धार से सिंचित भूमि के अन्न जल खा के ना जाने कई पीढी के भारतीय जन समुदाय पलल बढ़ल आ फेरु ओहि माटी में मिल गईल। आज देश में जवन सामाजिक सांस्कृतिक एकता लउकत बा ओकरा पाछे गंगा के प्रवाह के अभूतपूर्व योगदान रहल बा।

एह साल 17-19 अक्टूबर के संपन्न भईल हमार गंगोत्री गौमुख यात्रा दोसरका यात्रा रहल ह। पहिलका बेरि हम पर साल 2014 के मई महीना में ओहिजा गईल रहनी। हर बार के जतरा हमरा के कुछ नया अनुभव, कुछ नया सीख देहलस।

सबसे पहिले ई बता देहल उचित रही कि गौमुख हिमनद (ग्लेसियर) से जवन नदी निकलेली ओकर नाम भागीरथी ह। गौमुख से 18-19 कि.मी. आगे गंगोत्री धाम बा। एहिजा भी नदी भागीरथी ही कहाली। लगभग 225 कि.मी. अउर आगे अलकनंदा

पी. राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी। एह घरी इँहा के छपरा मे बानी।

आ भागीरथी के संगम देवप्रयाग में बा। संगम के बाद ही नदी के नाम गंगा हो जाला।

भागीरथी के उद्गम स्थल के दर्शन के अलावा हमरा नियर आदमी अउर कई गो कारण खोज लेला जेकरा चलते हिमालय, नदी, झरना आदि के पुकार आदमी अपना के रोक ना पावे। सब चिंता आ दैनिक जीवन के जिम्मेवारी छोड़ के सीधे पहाड़ ओरि भागेला। समतल के वातावरण से अलगा ठंडा वातावरण के आनंद, बर्फाच्छादित सफेद शिखरन के आनंद के अलावा हमरा साथे दू तीन गो अउर कारण जुट जाला जेकरा चलते हम पहाड़न के पुकार के अनसुना ना कर सकीं। एह में नया-नया जागल फोटोग्राफी आ ट्रेकिंग के सवख भी प्रमुख बा। पहाड़न के विशालता के अनुभव दर्शन, प्रकृति के नित बदलत रूप के आँखि से निहारल, स्वच्छ प्राण वायु जल के हृदय मन में समाहित कर लेहल आदि भी कारण बाड़ीसन। पहाड़न से लवटला के बाद बुझाला कि एह निस्सार जिनगी के कुछ अर्थ मिलल, शरीर के एगो नया ऊर्जा मिलल। इहाँ हम मोक्ष, पुन आदि के बात नइखीं करत। बिलकुल सांसारिक आ भौतिक लाभ के बात करत बानी। यदि मोक्ष, पुन आदि में राउर विस्वास बा त का कहे के ? सोना प सुहागा।

यात्रा के तैयारी : रउवा देश के कवनो भाग में होखीं यदि चार धाम जतरा (गंगोत्री , यमुनोत्री ,केदारनाथ आ बदरीनाथ) के मन बना लेहनी सबसे पहिले हरिद्वार पहुंची। हरिद्वार दू शब्दन के योग से बनल बा। हरि आ द्वार। कहल जाला कि हरिद्वार देवभूमि के प्रवेश द्वार ह। आज हरिद्वार एगो भीड़ भाड़ वाला शहर में बदल गईल बा बाकिर जब हर की पैड़ी में स्नान कर लेब त हरिद्वार के महत्व रउवा बुझा जाई। इहां से गंगा आपन पहाड़ी मार्ग त्याग कई के समतल में प्रवेश करेली। हर की पैड़ी में गंगा में पहाड़ी नदी के वेग बा। जल बिलकुल शीतल बा। घाटन पर खम्भा गाड़ल बा जवना में सीकड़ फंसावल बा। यात्री से अपेच्छा रहेला कि उ लोग खम्भा भा सीकड़ पकड़ के ही स्नान करी। ना त गंगा के तेजप्रवाह में बह जाये के डर रहेला। सामने भेंटा जाव त माटी के बर्तन में गरमा-गरम दूध आ जिलेबी खाये से भी ना चुके के चाहीं।

हरिद्वार से गंगोत्री लगभग 300 कि.मी. बा। मार्ग पहाड़ी आ घुमावदार बा बाकि यात्रा सबेरे प्रारम्भ कईला पर साँझ ले गंगोत्री पहुँचल जा सकेला। ठीक हरिद्वार स्टेशन के सामने बस आ टैक्सी पड़ाव दुनो बा जहाँ से ऊपर जाए के सवारी मिलेलीसन।

हरिद्वार से उत्तरकाशी : हरिद्वार आ गंगोत्री के बीचो बीच उत्तरकाशी बा। एह क्रम में सबसे पहिले एहिजा पहुँचल जरूरी बा। फेरु एहिजा से गाड़ी बदल के गंगोत्री जाईल जाला। अबकी के यात्रा में चूंकि हमरा साथे कैमरा भी रहे एह से हम छोट गाड़ी जइसे की बोलेरो आदि पसंद कईनी आ आगे वाला दुनो सीट बुक कर लेहनी जेमे जे रास्ता में फोटो खींचे में कवनो असुविधा ना होखो। हरिद्वार से उत्तरकाशी के 5 - 6 घंटा के सफर बा। बीच में चम्बा में गाड़ी रुकल ताकि यात्री कुछ जलपान कर सकस। गवई भोजपुरिया संस्कार के कारण पहाड़ पर के सीढ़ीदार खेतन के प्रति मन में आकर्षण पैदा हो गईल रहे। चम्बा में ओह खेतन के कुछ उपज लउक गईल। पहाड़ी अन्न में सांवा भी बिकात रहे। मडुआ के आटा एक किलो के एगो पॉलीथिन में भी सजावल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

सांवा के खेती हमनी के इहाँ से उचट गईल बा । अब मडुआ खातिर भी ढेरे रासायनिक खाद छींटल जात बा । बस देखे के का रहल ह , एक किलो सांवा आ एक किलो मडुआ के पीसल आटा कीन लेहनी । अउर एक किसिम के अनाज जेकरा के उत्तराखंडी लोग नमक मरिचा के साथे खाला भा दूध में फुला के खाला हमार बैग में स्थान बना लेले रहे । इहाँ धेयान देबे के बात ई बा कि उत्तराखंड में पहाड़ी खेती में रासायनिक खाद के चलन ना के बराबर होला । एगो किसान के ई भी शिकायत सुने के मिलल कि छोट-छोट सीढ़ीदार खेतन में छींटल गोबर साल भर ना रह पावे । बरसात के पानी के साथे बह के नीचे चल जाला ।

टिहरी बाँध के जलाशय : आगे रास्ता में टिहरी बाँध के बड़ जलाशय भी देखे के मिलल । भागीरथी आ भिलांगना के संगम पर एगो बहुत बड़ बाँध बना देहल बा । शायद इ विश्व के तीसरा बड़ बाँध ह । जल विद्युत से उत्तराखंड के रौशन करे के योजना रहे । उत्तरकाशीके रास्ता टिहरी बाँध से ना गुजरे बाकिर बांध के कारन कई मीलन तक पसरल जलाशय के देखल जा सकेला । अब इहाँ से गंगोत्री तक भागीरथी के साथ ना छूटे । कभी पहाड़ के ऊपर से त कभी बराबरा पर भागीरथी के दर्शन होत चलेला । पहाड़ी रास्ता उतार भा चढ़ाव पर घुमावदार होला । देवदार, चीड़ आदि के जंगलन के बीच से भी गुजरेला । छोट बड़ झरना भी सहजे लउकत रहेला ।

बाघ के दर्शन : उत्तरकाशी अभी भी 30-35 कि.मी. दूर रहे । गाड़ी घुमावदार रास्ता से पहाड़ के चोटी से लगभग कुछ ही नीचे बढ़ल जात रहे । किरिन बुता गईल । आस पास के गाँव के कुछ लइका जवन बहालि खातिर दौड़ लगावत रहले पाछे छूट गईले । कुछ मेहरारू जे लकड़ी पानी ले के भी लवटत रहली, पाछे बीत गईली सन । बस 50 -100 मी. आगे गईला पर ड्राइवर एक ब एक चिलाइल, " बाघ, बाघ !"... आगे सड़क पर हम एगो बाघ के पास के झाडी में जात देखनी । धीरे-धीरे गाड़ी आगे बढ़लत 20-25 मी. आगे एगो अउर बाघ लउकल । दोसर की बाघ हमनी के गाड़ी के गति धीमा देख के गुर्राए के भी कोशिश कईलस । ई एगो एकदमे दुर्लभ दृश्य रहल । बस मात्र कुछ सेकंडन के । जवन बाघ कॉर्बेट पार्क आ रणथंभोर के सरकारी जीप में बइठ के घुमत घरी ना लवुकल ऊ अनसोहातो उत्तराखंड में दीख गईल । पता ना उत्तराखंड सरकार के बाघन के ई उपस्थिति के भान बा कि ना ?

रात्रि विश्राम उत्तरकाशी में भईल । रात के भोजन के साथे पहाड़ी गाय के दूध के मांग भी हमार पूरा भईल । भागीरथी के तट पर गाँव, जंगल के खर-पतवार आ गाय के दूध, ई सब हमार रोमांटिक कल्पना से बिल्कुल मेल खात ।

गंगोत्री तक : यदि रउवा आपन गाड़ी से भ्रमण पर निकलल बानी त रउवा लगे ठहरे के दर्जनों विकल्प बा । जिला मुख्यालय से 10 -15 कि.मी. आगे-पाछे कई गो साधारण होटल शांत वातावरण में नदी के किनारे मिल जइहें सन जहां मूलभूत सुविधा के साथे भोजन के भी व्यवस्था रहेला । इ होटल स्थानीय निवासी लोग बनवले बा आ सस्ता भी बाड़न सन ।

उत्तरकाशी से गंगोत्री तक बस सेवा नइखे । टैक्सी ही एकमात्र साधन बा । आदतन फेरु हम आगेवाला दुनो सीट बुक कर लेहनी । एहिजा हमरा कुछ प्रबुद्ध बंगाली लोग से भेंट भईल । ई लोग बीच वाला सीट पर बइठल रहे । बंगाली पर्यटक लोग बड़ संख्या में दुर्गापूजा के बेरि उत्तराखंड आवेला । उत्तरकाशी से गंगोत्री के 4 - 5 घंटा के सफ़र बा ।

हार्सिल : उत्तरकाशी से आगे एक दूगो बढ़िया चट्टी आ पर्यटक के आकर्षण के गाँव भी बाड़ी सन । प्रकृति के गोद में भागीरथी के किनारे एगो बड़ा सुन्नर गाँव बा हार्सिल । सेना के एगो छोट कैम्प भी एहिजा बा । गाँव से एक ओरि कुछ किलोमीटर ऊपर चीन के सीमा बा । आबादी में मुख्यतः भूटिया जाती के लोग बा । ई लोग बौद्ध ह । एगो छोट आ सुन्नर कालचक्र वाला गोम्पा भी बा । पृष्ठभूमि में बर्फ से भरल एगो पहाड़ साफ़ चमकत, लउकत रहेला । यदि निज के सवारी होखे त अढ़ाई घंटा के एहिजा ठहराव के हम कहब ।

थराली : हार्सिल से 2 -3 कि.मी. आगे एगो छोट चट्टी बजार नियर स्थान बा थराली । गंगोत्री मार्ग के ई अंतिम गाँव ह । इहाँ ठहरे खातिर दू तीन गो होटल भी बाड़न सन । यदि मई-जुलाई ले रउवा गंगोत्री यात्रा पर बानी त ई चट्टी सुनसान बुझाई। बरसात बीतते ही ई स्थान सेव के एगो आढ़त के केंद्र बन जाला । आस पास के पहाड़न पर सेव के बगान बाड़न सन । उहाँ से सेव तूर के इहाँ आवेला । व्यापारी किसान से सेव उठा के देश के शहरन में भेजेले । थराली के सेव बहुत स्वादिष्ट आ मोलायम होला । ओह में बड़ा सुन्नर खुशबू भी होला । ई खुशबू रउवा नाक से कुछ दूर सेव राख के अनुभव कर सकेनी । अइसन सेव जल्दी मैदान में देखे के ना मिले । एह से हमार अनुशंषा बा जतरा से लवट के आवे घरी जतना ढ़ो के ले आ सकेनी ओतना ढ़ो के लेले आईं जेमे जे हित मित्र गंगा जल के साथे साथे सेव के सवाद के भी आनंद ले सके । हमरा आज मात्र दू किलो ले अईला के अफसोस बा । ई सारा इलाका जाड़ा में भारी बर्फबारी के जद में आ जाला आ सभे नीचे आ जाला ।

गंगोत्री धाम : 3000 मी. के ऊंचाई पर स्थित गंगोत्री धाम गंगा माता के मंदिर खातिर विख्यात बा । अमृतसर के स्वर्ण मंदिर जईसन एह मंदिर के भी सोना के पत्तर से तोपे के शायद प्रयास हो रहल बा । एह बार के यात्रा में मंदिर के अगिला भाग (छाजन) पर सोनहुला पत्तर हम देखनी । परसाल ई ना रहे । दुनो तरफ से सदाबहार देवदार , चीड़ के पेड़ से लदल पहाड़न के बीच से पातर आ शोर करत अनवरत बहत भागीरथी । पहाड़ के ही समतल बना के एक ओरि मंदिर के स्थापना कईल बा । मूल गंगोत्री मंदिर के स्थापना एगो गोरखा सैनिक सरदार अमर सिंह थापा के द्वारा कईल गईल रहे । नदी के दुनो ओरी कई प्रकार के संत समाजन के

आश्रम आ निवास बा। ऋषिकेश के घाटन नियर ही इहाँ नदी के किनारे घाटन के निर्माण एह घरी चल रहल बा।

गंगोत्री धाम में यात्री , पर्यटक खातिर हर प्रकार के सुविधा उपलब्ध बा। पूजा पाठ , यज्ञ अनुष्ठान , ठहरे भोजन के सुविधा आदि। भोजन, ठहरे के व्यवस्था बहुत महँगा नइखे। 200 रु. में हमरा एगो कमरा मिल गईल जवना में मोट फोम के गद्दा, मोट रजाई, बाथरूम आदि के व्यवस्था रहे। रात इहाँ काफी ठंडा हो जाला। स्वेटर, पैंट, मोजा आदि लगवले हम रजाई में लुकाये के कोशिश कईनी तबो ठंडा के कारण अछराहे नींद लागल।

निर्माण काम में लागल, पत्थर तुरत मिस्त्री मजदूर के काम करत लगभग सभे हमरा भोजपुरिया मिलले। बात के टोन से अनुमान लगा के हम कुछ अउर गहराई से पड़ताल कईनी त पता लागल कि चम्पारण जिला के एगो बढई मजदूरी करे बहुत पहिले आईल रहले। आज ऊ देहरादून के बड़ ठीकेदार बाड़े। ओहि आदमी के स्रोत से चम्पारण के सैकड़न लोग के उत्तरकाशी आ गंगोत्री में रोजगार मिल रहल बा। मैदान के हिसाब से मजदूरी भी कम नइखे 400 रु. प्रतिदिन।

भागीरथी के तट पर कुछ फोटो लोग खींचेला। साँझ के समय एगो दुर्लभ फोटो खींच लेबे के अवसर मिलल। दूर के बरफ वाला पहाड़न पर रुई अस बादलन के लुकाछिपी आ सुरुजदेव के सोनहुला किरिणीयन के खेल एगो दुर्लभ आ मनोहारी दृश्य होला। बहुत कम 2-4 मिनट के खेल के समय कैमरा हमार काम करे में सफल रहल। राउर मोबाईल टावर एहिजा ले काम करी। इंटरनेट के गति बहुत धीमा रहेला। गंगा आरती के बाद प्रसाद के रूप में हमरा गंगा तुलसी के चार-पांच गो बहुत ही सुगंधित पत्ता भेंटाइल। गंगा तुलसी एगो छोट पवधा ह। एने ना मिले। राजा भगीरथ के तपस्थली के रूप में एगो कुण्ड आ छोट मंदिर भी गंगोत्री मंदिर के सटले मिलल।

खरीदारी : कई प्रकार के रंग के शालिग्राम पत्थर (40 रु. प्रति) , कई प्रकार के रुद्राक्ष आ माला , भेड़ के ऊन के बनल चादर (साधारण आकार 600 रु , बड़ आकार के 900 रु प्रति) आ टोपी , मोजा आदि। लवटत घरी थराली के स्वादिष्ट आ खुशबूदार सेव। एह धाम पर बहुत मोल मोलाई ना होखे।

(भागीरथी के उद्गम गौमुख यात्रा के सम्बन्ध में अगिला अंक में , क्रमशः)

www.bhojpurisahityangan.com

अंगूर खट बा

डा. उमेश जी ओझा

गोगी जतना सुनर वोतने पढाई लिखाई में तेजो रही। उ जब हमरा से मिलत रही तब आपन इच्छा कहानी भा कविता लिखे के जाहिर करत रहली। कहत रहली **"हमहूँ कहानी कविता लिखल चाहत बानी। हमरा के लिखे सिखा दिहीं।"** यह प हम उनका के सलाह देत रही कि कहानी भा कविता के किताब पढऽ आ वोकरा में लिखल माने के समझे के कोशिश करऽ। आ वोसही कुछ लिखिके शुरू करऽ। करीब 20 बरीस बाद गोगी से हमार भेट भईल रहे। भेट भईल त हमही उनका से पूछ दिहली कि "का हो गोगी, का हाल बा, का करत बाडु ?"

'एकदम ठीक बानी, करब का एगो सफल गृह लक्ष्मी आपन घर गृहस्थी के बढ़िया से देखरेख कर रहल बानी।"

"का भईल, कहानी कविता लिखल शुरू कईलु की ना ?" हमरा बात प आपन मुंह बिजकावत कहली- का कहीं , एम.ए. के परीक्षा हो गईल रहे। घर में खाली बईठल रहीं। बिना मतलब के असही खाली बईठल रहे से बोर होत रहनी। सोचलीं की काहे ना, एही समय में कहानी , कविता के किताब पढ़ल जाव। ईहे सोची के आपन बिछावन से उठली आ घर में राखल एगो भोजपुरी पत्रिका उठवनी। बिना मन के पत्रिका के पन्ना पलटे लगनी। पन्ना पलटत एगो प्रचार लउकल। जवना में लिखल रहे कि " अगर रउरा में कला बा आ लिखे के शौक बा त उठाईं कलम आ लिख भेजीं कवनो बढ़ियाँ कहानी भा कविता। बढ़ियाँ कहानी कविता के छापल जाई आ पुरस्कारो दिहल जाई आ लेखक के सम्मानित कईल जाई।" प्रचार देखते हमार सभ बोरियत गदहा के माथा से जईसे सिंग गायब होखे, ओसहीं गायब हो गईल। तन बदऽन में गजऽब के फुरती हो गईल। सोचे लगली अब एगो नया कहानीकार भा कवी के जनऽम त होईये जाई। लिखे के भावना से भीजल ,पुरस्कार आ सम्मानित करेके दबाव से आखिर में सबसे पहिले कविता लिखे के मन बनाके पहुची गईली एगो कवित्रि मित्र के लगे। आ उनका से पूछली की " दीदी रउरा कईसे कविता लिख लेत बानी। हमहू लिखे के शुरू कईल चाहत बानी बताई कि कविता कईसे लिखाई।" उ कवित्रि हंसत जवाब दिहली, " देखऽ गोगी, कविता लिखे खातिर एगो टुटऽल भा ठोकरवाल दिल होखे के चाहि। जवना में खुबे दरऽद भरऽल होखे त अपने आप कविता कागज के पना पऽ उतरऽत चलऽल चल जाई।"

कवित्रि के बात मानिके आपना घरे आ गईली। आ अपने आपके एगो कठोरी मे भीतरी से बन कऽ लिहनी। आ अपना बारे में सोचे लगनी, आजु आपना बारे में सोचत बुझाईल कि साचो के उनका से खुशी केहु नईखे। लईकाईं में माई-बाबुजी आ भाई-बहिन के ढेरी पेयार दुलार मिलल। जवानी में जेकरा से पेयार कईनी ओकरा से बिआहो हो गईल। अब एगो बेटा आ पतोहियो आ गईल बाड़ी दुनो आदेश माने वाला आ खुब पेयार करेवाले बाड़न। बेटी आपन ससुराल में खुश। कवनो नाता रिस्ता धोखा नईखे देले आ ना ही ठगले बा। एह प परेशान हो उठली। जब हमरा लगे कवनो दरदे नईखें त हमार कविता कईसे बनी ?"

दूबारा आपन कवि मित्र लगे पहुच गईनी। आ आपन तकलीफ बतवनी। एह प उ बोललली कि "गोगी कवि बने खातिर कल्पना भा सपना के सहारा ल"। वोकरा बाद कल्पना आ सपना के सहारा लेबे के कोशिश कईली बाकि उहो में जीत हासिल ना कर पवलीं। मनेमन बड़बड़ईनी- चलऽ छोडऽ कविता फविता लिखल ई हमारा बस के बात नईखे। ऐकरा में माथा खपवला से बढ़िया बा कि कहीं दूसरा ओरी दिमाग लगावल जाव। आखिर में कविता से हारी के अब कहानी देले मुडऽ गईनी।

फेरू से अपने आपके एगो कोठरी में बन कईली आ सोचे लगनी " कहानी के मशहूर करके फरमुला तऽ उनका मालुमें बा। कहानी में लव, इमोशन, ड्रामा, कॉमेडी, सेक्स, वायलेन्स , थ्रिल के मसाला होखे के चाहीं"। ओकरा बाद रोज कईगो लेखकन के कहानी पढ़त सैकड़ों कहानी छानी मरनी। आपन दिमाग में कहानी के रूप भरत आपन सोचे के शक्ति के अनुरूप एगो लमहर कहानी लिख लिहनी। कहानी लिखला के बाद ओकरा के टाईप करवाके लिफाफा में डाली के वोह प टिकट साटी के पोस्ट कऽ दिहनी। कहानी भेजला के बाद सब केहु के कहत चलनी कि उ बढिया कहानी लिख के

डॉ. उमेश जी ओझा

जमशेदपुर झारखंड के रहे वाला डा. उमेश जी ओझा , पिछिला कई साल से भोजपुरी मे लिख रहल बानी। इँहा के सैकड़न लेख कई गो अलग अलग पत्र पत्रिका अखबार मे छपि चुकल बडुवे। पत्रकारिता मे डिप्लोमा के संगे संगे एम काम भी कईले बानी आ एह घरी जमशेदपुर मे रहि के झारखंड सरकार के सेवा दे रहल बानी।

भेजले बाडी जरूरे छपी पढ़िह लोग। आ आशा भी बा कि कहानी के पुरस्कारो उनके मिली। एक महिना बाद पत्रिका के सम्पादक के चिट्ठी गोगी के मिलऽल जवना में लिखल रहे कि कहानी के रद्द कर दिहल गईल बा, कारण कि हमनी के कहानी मंगले रहींजा कवनो ग्रन्थ ना, लिखे खातिर धन्यबाद, कहानी छोट करी, फेरू सोचल जाई, असहीं लिखत रहीं"।

अब हमरा खातिर एगो नया समस्या आ गईल रहे कि कहानी कईसे छोट करीं ? कहाँ से छोट करी, कहवाँ से काटी, कुछुओ समक्ष में ना आवत रहे। परेशानी में मनेमन सोचनी कि काहे ना दोसरों के सहायता लिहऽल जाव। सबसे पहिले मिलली जंगल झाड के हरियाली के देखरेख करेवाला से उनका से आपन समस्या बतवनी, उ कहानी के सब हरियाली छांट के राखी दिहले। उनका से विदा लेके मिलनी आपन सबसे नजदिकी नेता जी से, उ कहानी में शब्दन के जोड़तोड वाक्यन के दल बदल आ कहानी के माने के दोहरीकरण कऽके कहानी के छोट कर दिहले। आखिर में मिलनी डाक्टर साहब से, उ कहानी के तबियत के चिंताजनक बतावत अपना अस्पताल में भर्ती कऽ लिहले। ओकरा के उनका लगे से छोड़ावे खातिर उनकर बिल चुकावे के पड़ऽल।

ओकरा बाद अब एगो नया ढाँचा में कहानी तइयार रहऽल। उ अपने आप में नया जोश, नया उमंग, नया ताजगी लिहले पाठक के होश उड़ावे खातिर तेयार रहल। फेरू से कहानी के पोस्ट कर दिहल गईल। कहानी पत्रिका में छपी गईल। पाठक के प्रशंसा भी आवे लागल। लगले हाथे उ पुरस्कारों जीत लिहलस। बाकि ई खुशी जादा दिन तकले ना रह पावल। पता चलऽल कि लेखक कहानी चोरावे के दावा ठोकि के केस कर दिहले। एतना सभ भईला के बाद कहानी आ कविता लिखे के भूत उतर गईल रहे। उ बस एके बात सोचत रही ई हमरा बस के बात नईखे , अंगुर खट बा भाई।

चिरई रोज आवेले
मीठ मीठ गीत सुनावेले
मन मोह लेले
मधुर रस लय से
रंगीन पाँख के साथ उड़ेले
(जईसे एक शिष्य भरेला उड़ान)
समूचा संसार अपना
सुंदर अंखियन से देखेले
आ फेर रोज सबेरे
आपन मधुर संगीत सुनावेले
नन्हा-मुन्ना के जीवन के राग:

पराया घर के बेटी

जनकदेव जनक

सजू के शादी के दू बरीस बीत गइल रहे। अब उ एगो लइका के माई बन गइल रही। ओकरा बादों उनकरा घर में शांति ना रहे। हरमेशा सास-पतोह में झगड़ा होते रहे। उ इहे सोचत रहस कि कवन अइसन काम करस, जेकरा से उनुकर सास राधा आ ननद मुन्नी खुश हो सकस। सबसे बड़ा दुख उनुका तब होखे जब राधा से कुछों पूछला पर जबाव देस कि मुन्नी बबुनी चाहे जमाई बाबू से पूछ ल, उहे लोग तोहरा के ठीक से समुझा दिही कि का करे के बा कि नइखे करे के।

एक दिन संजू घर के कपड़ा धोवत रही। ओकरा में उनका मरद संजय के कपड़ा भी रहे। साबुन घिसला से खिया के छोट हो गइल रहे। तब उ अपना पड़ोसी जमुना से एगो साबुन मंगवा लिहली,बाकिर जमुना से साबुन लेत उनकर ननद मुन्नी देख लिहली। इ घटना उनका खातिर महंगा पड़ल। मुन्नी अपना माई के कान फूंक दिहली। ई बात सुनते राधा बोल पड़ली,“ अरे मुनिया, घर के सभे लोग मर गइल रहल ह का रे कि तोर भऊजी जमुनवा से साबुन मंगवा लेलस हिअ। संजय के डयूटी से आवे दे तब एकर सहकल निकालत बानी। अबहीं से एकर पांव चौखट से पार होखे लागल त पता न बाद में का करी ? ”

रोज रोज के झगड़ा आ खोभसन से संजू के देह दुबरा के आधा हो गइल। चिंता आ फिकिर से उनुकर दिमाग हरमेशा गर्म रहे लागल। बार-बार एके बात दिमाग में आवे कि घर में कमाये वाला उनकरे पति संजय बाड़ेंन ,ओकरा बादों एह घर में उनकर कवनों मान सम्मान नइखे। काहे ना अपना मरद पर आपन अधिकार जता के दबाव बढ़ाई। हर महिना उनुकर तन्खाह के पइसा हथिया लिंही। तब सास -ननद के नकेल कसल जा सकेला।

संजू के मरद संजय भारत कोकिंग कोल लिमिटेड के पूर्वी झरिया क्षेत्र में एकाउंटेंट रहले। माई बाबू के काफी दुलरूआ रहस। हर माह उ आपन तन्खाह अपना माई के हाथ में देस। बाकिर एह माह त संजू उनुकरा पाकिट से तन्खाह निकल लेले रही। जब संजय के मालूम भइल त उनकर हाल सांप छुछुंदर लेखा हो गइल। माई उनुकर बार- बार पइसा मांगस। दो चार दिन बहाना मरले, बाकिर कब तकले। उ अपना माई के देखते कन्नी काट के निकल जास। एक तरफ माई के ममता रहे त दुसरा तरफ मेहरारू के पियार। घर में बढ़त तनाव से उनुका ऑफिस में भी काम करे में मन ना लागे।

एक सप्ताह बाद संजू अपना मरद संजय के 20 हजार रुपया देत कहली,“ ई रुपिया घर खरच खातिर ह। माई के दे दिंही। बाकी रुपिया हमारा लगे रही। ”

“ठीक बा रुपिया राख,बाकिर बेहिसाब खरच मत करीह!”

“ जहवां खरच होता उहवां त बोलते नइखीं, उलटे हमरे पर चाप चढ़ावत बानीं,काहे ?” संजू सहजभाव से पूछली।

“ एह घर में के फिजूल खरच करत बाटे।” एकाएक आक्रोशित होत संजय बोल पड़ले।

“ चिल्लाई लोग मत, दिमाग पर काबू राखीं। हम पूछत बानी कि जमाई बाबू के घर दुआर बा कि ना, दू बरीस से एह घर में सरनारथी नियर काहे राखल गइल बानी। बेहिसाब खरच त ओही लोग पर होता। बोलीं, चुप काहे बानीं।”

हम ना जननी कि तू हमारा कोखी से मेहरी के गुलाम जनम लेबे। आरे निकालहीं के बा त बहिन के ना माई-बाबू के निकाल द,जेसे तोहरा मेहर के छाती ठंढ़ा हो जाव!”

संजू के बात में दम रहे। एह से संजय अपना मेहरारू के सामने टीक ना पवले। चुप चाप हाथ में रुपिया लिहले उ बथानी गइलें। उहां उनुकर माई ना रहली। एह से रुपिया अपना बहिन मुन्नी के दे दिहलें।

अब घर में जमाई बाबू राहुल आ मुन्नी के लेके झगड़ा होखे लागल। कबहूं ननद-भऊजाई लड़ पड़स त कबहीं सास पतोह के रगड़ा शुरू हो जाव। एहीं बीच संजू के कीनल एगो शीशा के गलास घर के सफाई के दौरान मुन्नी से फूट गइल। एकारा बाद ननद - भउजाई में जबरदस्त नोंक झोंक भइल। संजू मुन्नी के भिखारीन कह दिहली, ई बात राधा के मालूम हो गइल। ऊ अलगे संजू पर बरस पड़ली।

“ तोर अतना मजाल कि हमारा बेटी के भिखारीन बोल देले ह, उलटा सीधा हमरा बेटी के बोले वाला ते हईस के? ” खीस में सास राधा फट पड़ली।

“ ई घर हमार ह कवनों धरमशाला ना, हमार बोली लोग के ठीक नइखे लागत त इहां से उ अपना घर चल जासु। ”

“हम अपना बेटी के राखब देखत बानी के निकालत बा ?”

“ केकरा बल पर राखेंम, ना जमाई बाबू कमात बानी ना ससुर जी, हरमेशा उँहे के मुड़िये प ठीकरा फोड़ाई का ? ”

संजू के जबाब से राधा तिलमिला उठली। उनुकर बोलती बंद हो गइल। पागल कुकुर नियर भँउकत मुन्नी के साथे बथान के तरफ भाग गइली।

ऑफिस से अइला के बाद संजय के मन घर में ना लागल। उ अपना बथान में जा के बइठ गइलें। ओहीजा माल जाल के खियावत सोचे लगलें। पता ना एह घर में केकर नजर लाग गइल बाटे। हंसत

www.bhojpurisahityangan.com

खेलत जिनगी नरक बन गइल बा । संजू के बात से जहवां माई परेशान बिया, ओहीजा बहन के भी घर काटे दउड़ता। बाबू जी फेरू से फेरी के काम शुरू कर देले बानी । माथा पर कपड़ा के गठरी लेले गली कूची में घुमल फिरत बानीं । का करीं कुछ समझ में नइखे आवत। ओही टाइम मुन्नी आ गइलीं । भाई के उदास चेहरा देख के बोल पड़ली, " भइया काहे मन मरले बाड़,ऑफिस में कवनों बात भइल बा का?"

"ना मुन्नी कवनों बात नइखें,अइसही बइठल बानी ।"

" ना भइया, तू कुछ छुपावत बाड़, सांच सांच बताव । हमार किरिये ,जरूर कवनों बात बा ।" मुन्नी अपना भाई पर अधिकार जमावत पूछ बइठली ।

"का कहीं कहल जात नइखें, जानते बाड़ू राहुल बाबू के लेके घर में कोहराम मचल रहता । हम चाहत बानी कुछ दिन खातिर तू लोग अपना घर चल जइतू ।" अपना आत्मा के मार के संजय बहिन से ई बात जइसे बोलते रहस, तले उनुकर माई आ गइली आ लतारे लगली ।

" हम ना जननी कि तू हमारा कोखी से मेहरी के गुलाम जनम लेबे । आरे निकालहीं के बा त बहिन के ना माई-बाबू के निकाल द,जेसे तोहरा मेहर के छाती ठंढ़ा हो जाव !"

एह घटना के बाद मुन्नी अपना मरद के साथे धनबाद में रहे लगली । बीच में जब भी मउका मिले, माई- बाबू से मिले खातिर आ जास । आपन दुखम -सुखम सुना के फेरू लवट जास । एक दिन मुन्नी अपना माई से कहली, " धनबाद वाली जमीन हमरा मिल जाइत त ओहमें घर बना लिहतीं, भाड़ा के मकान में रहल बड़ा कठिन बा । रोज कबहूँ पानी खातिर त कबहीं बिजली खातिर मकान मालकिन से चख चख होत रहत बाटे। घर बन जाई त तुहूं लोग आ के रह सकत बाड़ू लो । "

राधा के ई बात पसंद आइल । उ मुन्नी से कहली कि जमीन लेवे के बा त अपना बाबू जी से बोल । काहे कि उहें के नाम से जमीन बाटे । मुन्नी के बगल में बइठल उनकर बाप धीरज हामी भर दिहलें । बेटी दामाद के नामें जमीन रजिस्ट्री हो गइल ।

मुन्नी के मरद राहुल लालची किस्म के आदमी रहस । ओकरा पास स्वाभिमान नाम के कवनों चीज ना रहे। धनबाद में उ एगो प्राइवेट कंपनी में काम करत रहस। अतना पइसा मिल जाव, जेसे दुनू परानी के जीवन बढ़िया से कट सकत रहे। बाकिर जब राधा जइसन सास घर जमाई बनावे के तइयार रही त राहुल के का इतराज। उ मुन्नी के साथे ससुराल में बैठ के गुलछर्रा उड़ावत रहस आ आपन पइसा बैंक में जामा करस। ओही पइसा से जमीन मिलला के बाद घर बना लिहलें ।

संजू के जब धनबाद वाली जमीन पर मुन्नी के घर बने के खबर मिलल त उ उनका पैर के नीचे से धरती घिसक गइल । विश्वास ना भइल। उ जा के घर देख अइली । अपना मन के आक्रोश अपना सास-ससुर आ पति पर उतरली । सास ससुर के हुक्का पानी बंद कर दिहली ।

बेटा के चुपी आ बहू के बेरूखी से संजय के पिता धीरज बेमार पड़ गइलें । ऊ बार बार घर के बिगड़त हालात के सुधारे के कोशिश कइलें, बाकिर हालत आउर बिगड़त चल गइल । अब मन मारके कपड़ा के फेरी में आपन समय काटत रहलें ।

धीरज के बेमारी से राधा के हेकड़ी भी भूला गइल रहे । सबसे बड़ा दुख त उनुका अपना बेटी -दमाद पर होखे । जब ले घर ना बनल रहे हर टाइम, दुनो के दुनो घर के माटी कोड़लें रहलन स । घर बनला के बाद त साफे भुला गइल बाड़न स । ऐने मरद के बेमारी से राधा के हाथ खाली रहे । सोचली कि बेटी -दमाद के मदद से धीरज के कतही अस्पताल में भरती करा दी । एहे सोच के बेटी के घर गइली ।

धराऊ कपड़ा पहिर के मुन्नी आ राहुल कतहीं जाये के तइयारी में रहे लोग, ओही समय में राधा पहुंचली । दुनू जाना देख के बड़ा खुश भइल लोग । मुन्नी हंसत बोलली कि बड़ा खुशी के मउका पर आइल बाड़ू माई, एगो बिआह समारोह में जात बानी स, कंपनी के मालिक के बेटी के शादी बा ।

" हम बारात करे नइखीं आइल बबुनी, तोहरा बाबूजी के तबियत बहुते खराब बाटे । उनुकरा के कतही भरती करा द लोग। " ई बात कहत राधा के आंख छलछला आइल ।

" आरे माई ,एह खुशी के मउका पर का रोवे धोवे लगलू । पाकल फल के कहिया ले गाछ पर टंगले राखब । चलीं, बारात से अइला के बाद भरती करावे के बारे में सोचल जाई।" राधा के दमाद राहुल मुन्नी के बोले से पहले बोल पड़लें ।

दमाद के बोली राधा के करेजा में गोली नियर लागल । दिल दिमाग झनझना गइल । उनकर आहत मन कहलस कि बेटी के ममता में पतोह के दुश्मन बना लिहनी, अब त बेटी दमाद के अपनान त सहे के पड़बे करी । आंखी में लोर भरलें ऊ उहां से गोड़ पटकत घरे भगली ।

ऐने संजू जबसे मुन्नी के घर देख के आइल रही तब से उनकर दिन के चैन आ रात रैन उड़ल रहे । हरमेशा मरद मेहरारू में

जनकदेव जनक छपरा सारण (बिहार) के रहे वाला, जनकदेव जनक जी हिन्दी , भोजपुरी मे कहानी, लेख, साक्षात्कार, नाटक, नुक्कड़ नाटक ,संस्मरण आदि का लेखन करेनी , आकाशवाणी पटना से वार्ता प्रसारित भईल बा । प्रभातखबर मे भोजपुरी पाती " चिठ्ठी बुचना के माई " साल 2003 से 2009 तकले स्तम्भ लेखनमे प्रकासित भईल बा । झारखंड सिने अवार्ड रांची 2008 मे शामिल भोजपुरी फिल्म "आजा हमार राजा " के सर्वेश्रेष्ठ कहानी लेखन के पुरस्कार । एह घरी प्रभात खबर झरिया कार्यालय मे उप संपादक बानी ।

महाभारत छिड़ल रहे । संजू कहत रही,“ तोहरा अपना बाल बच्चन के फिकिर नइखे,बाकिर हमरा त बाटे । तू जवन कमइल तवन अपना माई, बहिन आ बहनोई पर लूटा दिहल। चार कट्ठा धनबाद में जमीन रहे ,उहों तोहार बहिन छीन लिहलस। ओह में तोहार हिस्सा ना रहे का ?”

“ जमीन त बाबूजी के नावे रहे । ऊ अपना बेटी के दे दिहलें त का हम जिंदा ना रहब ।”

“ तोहरा जिंदा रहे के बा त रह, बाकिर जबले ओह जमीन के बदले जमीन ना मिली, हमार छाती के आग ठंढ़ा ना होई । ”

संजय के अइसन लागल कि संजू पगला गइल बिया । उ जतने पियार से समुझावे के कोशिश करस, उ ओतने बढ़ चढ़ के बोलत रहे। संजय के लागे कि एक तरफ बाप बेमार बाड़ें, झगड़ा के डर से उनुकर इलाज नइखे हो पावत । घर में जबले रहब झगड़ा होते रही, इहे सोच के ऊ घर से बाहर जाय़े लगले । तबही संजू गुस्सा में नागिन खानी फन कढ़ले उनकरा आगे आके खड़ा हो गइली आ बोललीं,“ आपन भलाई चाहत बाड़ त फैसला क के जा ।, एह घर में हम रहेब ना त ई बूढ़ा बूढ़ी ।”

“ तोहार अतना मजाल कि हमारा जीते जी माई बाबू के घर से निकाल देबू, तोहार हाथ गोड़ तुड़ के जिंदा जमीन में गाड़ देहब ।” खिसिया के ऊ जइसे मारे खातिर संजू के ऊपर हाथ उठवले , ओबी बीच उनुकर बेमार बाप बीच में आ गइले । संजय के ऊठल हाथ रूक गइल । ऊ बाप के सामने खड़ा ना हो पवले, तुरंत घर से घिसक गइले ।

“ अरे बेटी, शांत हो जा। जादे गुस्सा ठीक नइखे । हमनी के घर से निकाले के जरूरत नइखे । हम दुनू परानी अबही घर छोड़ के चल जात बानी स । जाते जाते तोहरा से ईहे कहब कि बेटी के ममता में खुदगरज बन गइल रहीं । जवना से तोहार हक मार देले बानी । एह बेइमानी के सजा सिर माथे पर । जब आपन जामल खून दगा दे देलस,त तू त पराया घर के बेटी हउ ।” अतना बोल के धीरज अपना राधा के साथे घर चउखट पार कर गइले ।

अचानक ई बात संजू के करेजा में धक से लागल । आसमान में उड़त उनुकर मन धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ल । सास ससुर के जात देख के उनुकर आंख बरस पड़ल । दुनू जाना के रोके खातिर पीछे दउर पड़ली ।

भोजपुरी स्वाभिमान संमेलन 6, पंजवार

सुपर मैंन

सरोज सिंह

लेखिका के ओर से : जईसन की एह महिना के विषय रहल भोजपुरी साहित्य में आधुनिक प्रयोग । भोजपुरी कहानी लिखे में जदि अपना गाँव जवार के पृष्ठभूमि रहे भा आत्मकथात्मक संस्मरण रहे भा क्षेत्रीय पारिवारिक ताना बाना प कहानी लिखे के रहे त लिखल सुगम होला काहे से कि सब्द-भासा में कवनो ख़ास फेर बदल ना करे के पड़े ला मगर जदि कहानी आज के परिपेक्ष्य में शहर के सन्दर्भ में लिखे के होखो तब लिखल तनी मुश्किल बुझाला शहरी वातावरन में हमनिके बोलचाल के भासा हिंदी और अँग्रेजी हो गईल बा ओके भोजपुरी में रूपांतरित कर के लिखल कहानी के बनावटी बना देत होई ...व्यावहारिक न रह पावत होई जइसन कि हमरा बुझाता एकर सबसे ख़ास कारन बा भोजपुरी भासा के स्कूल,कॉलेज ,कार्यालय के वातावरण में कम से कम प्रयोग ..बांग्ला, पंजाबी ,मराठी ,दक्षिण भारतीय भासा कुल सार्वजनिक जगह पर बेफिक्री से कहल, बोलल, सुनल जाला ! ए बार हम आपन एगो हिंदी बाल कहानी "सुपर मैन" के भोजपुरी में रूपांतरित कर के लिख रहल बानी .. कहानी केतना यथार्थ परक बन पड़ल उ त पाठक वर्ग निर्णय करी !

तीसरा घंटा के ख़तम भईला प वैभव सुपर-मैन के डमी बैग से निकाल के अमन के देखावत कहलस

"अमन, ई देखS"

"बाह सुपरमैन!!! के देहलस? सुपरमैन ओकरा से लेत अमन वैभव से पुछ्लस । वैभव अगरात कहलस "हमार पापा हमरा के जनमदिन पर देहलन हं"

मैथ्स टीचर मिस मेथ्यु के क्लास में घुसत देख, वैभव तुरंते सुपरमैन अमन से छीन के बैग में रख लेहलस। मिस मेथ्यु प्राइमरी सेक्शन के हेड-मिस्ट्रेस रहली, कुल लईका उनका से थर्रात रहलन सं, जदि उ गेलरी में निकल जास त मजाल रहे कि कवनो बच्चा लउक जाओ उहाँ? लंबा नाक, गोल फ्रेम के बाइफोकल चश्मा से तरेरत आँख.. अक्सर उनका हाथ में लमहर सोंटा रहे । कहे के माने की दहसत के दोसर नाव रहली मिस मेथ्यु। रजिस्टर अउर बैग मेज पर रखत मिस मेथ्यु बुलंद आवाज में कहली,

"सबकेहू आपन-आपन होमवर्क देखावS"

झटपट सबके होमवर्क कॉपी खुल गईल, एक-एक करके मिस मेथ्यु सबके कॉपी जांचे लगली । केहू के डांट पड़े, केहू के शाबाशी मिले त केहू के फेर से होम-वर्क करे के हिदायत देत उ अमन के लगे आ गईली, अमन झटे खड़ा होके कॉपी मिस के धरा देहलन।

"उम्ह..हं, अमन काम में सफाई ले आवS", कहत मिस मेथ्यु अमन के कॉपी लौटा देहली । बगले में वैभव कॉपी बंद कइले सर झुकाके बईठल रहलन । मिस मैथ्यू के माजरा समझत देर ना लागल, आवाज में सख्ती ले आवत कहली, "वैभव, आपन कॉपी देखावS"

"सॉ..री मिस, होमवर्क नइखी कइले" कहत वैभव के गोड़ काँपे लागल।

काहेंSSS? मिस के पूछला प वैभव एकदम सहम गइल

"मिस, मम्मी हॉस्पिटल में..." वैभव अभी एतने बोल पावले रहल तब्बे बीच में बात काटत मिस मैथ्यू चिघड़ली,

"अच्छा? आज मम्मी अस्पताल में, काल पापा अस्पताल में,...सब झूठा बहाना बा, पता बा नू होम-वर्क ना कईला प का सजा मिली ? भर-दिन डेस्क प कान पकड़ के खड़ा रहबS" वैभव के गुस्सा में डपटत मिस मेथ्यु कहली ।

कान पकड़त वैभव कहलस "सॉरी मिस"

"हम्म, तू नया बाड़S एहिसे माफ़ कर देतानी मगर काल दुनु दिन के होमवर्क कर के ले आइबS, अउर ई बार हिप्पी नियर काहें बढ़ल बा?" काल बार कटा के न अईलS त समूचा क्लास के सामने चोटी गूंथ देब, बुझलS?

"यSS यस मिस", सहमत वैभव कहलन।

मिस मैथ्यू पिछला बेंच के लईकन के कॉपी जांचे आगे बढ़ गईली। अमन अउर वैभव के बुझाईल जइसे अभी-अभी गॉडज़िला ओकनी के सूंघ के आगे बढ़ल होखे। अमन अचरज से वैभव के कॉपी खोलके देखे लागल कि, केहू कइसे मिस मेथ्यु के होम-वर्क में फांकी मार सकेला ?

"ए वैभव, काल होम-वर्क जरुर कर लिहS, तहरा नइखे पता, रोहित के मिस एतना डटली कि, ओकर पाएँट गील हो गईल रहे, कुल लईका ओह्के आजुओ रिगावे लेसं" अमन कान के जरी

सरोज सिंह

बलिया , युपी के रहे वाली सरोज सिंह जी , हिन्दी भोजपुरी आ बंगला साहित्य मे उभरत एगो बरिआर नाव बानी । हाले मे इँहा के लिखल हिन्दी काव्यसंग्रह " तुम तो आकाश हो " आईल ह । भोजपुरी मे सैकड़न गीत गजल कविता कहानी के रचना कई चुकल बानी । पाक कला मे दक्ष सरोज जी एह घरी गाजियाबाद मे बानी ।

खुसपुसात वैभव के होसियार कईलस।

अमन इंदिरापुरम के महागुन-मेंशन में रहत रहल अउर वैभव ओकरे सोसाईटी से कुछ दूर गौर-ग्रीन सिटी में रहत रहे। दुनु एकही स्कूल-बस से आवत जात रह्लसं एहिसे से दुनु में दोस्ती हो गईल रहे। स्कूल से लौटते समय बस में अमन वैभव से पूछलस,

"सांच बतावS, मम्मी होस्पिटल में बाड़ी?

"हं अमन" कहत वैभव अउर उदास हो गइल, बात बदलत अमन कहलस "आछा, वैभव, अपन सुपरमैन देखावS"

वैभव खुस होक बैग से सुपरमैन निकाल लेहलस अउर दुनु ओकराके हवा में सुपरमैन के तरह उड़ावे लगलन। अमन के स्टापेज आवते ही, गला में वाटर-बोतल अउर बैग पीछे टांगत अमन वैभव के बाय-बाय बोलत उतर गइल। अमन अपना मम्मी के खड़ा देख अगरात उनकर अंगूरी पकड़ के चले लागल। मम्मी उनकर बैग अउर बोतल ओकरा से लेके चलत पुछली,

"त कइसन रहल आज के दिन?

"नीक रहल मम्मी, इंग्लिश मैम गुड देहली ह, साईंस टीचर आज "आवर एनवायरनमेंट' पढइली, मैथ्स टीचर ख़राब लिखावट खातिर डटली, फेर कुछ याद करत कहलस "मम्मी,पता बा.. आज नु वैभव के मैथ्स पिरियड में खूब डांट पड़ल होम वर्क ना कइले रहल एसे"

"कवन वैभव? उहे नया दोस्त जे "गौर-ग्रीन" में रहेला?
हं, ओकर मम्मी हॉस्पिटल में एडमिट बाड़ी" उदास होत अमन कहे लागल

"ओह इ त बुरा भईल, कवनों बात ना उ जल्दी ठीक हो जइहें"

"मम्मी, ओकरा लगे नु, एगो छोट सुपरमैन भी बा"

अच्छा!! कहत ममता, अमन के साथ लिफ्ट में पहुच गईली। चउथा फ्लोर पर लिफ्ट के खुलते ही निक्की के जोर-जोर से रोवे के आवाज सुनाई देवे लागल। अमन के हाथ छोड़ा के ममता तेजी से फ्लैट के दरवाजा खोललली, उनकर आया झुंझलात छव महीना के निक्की के कान्हा प थपकी देत एने से ओने घुमावत रहल।

"ओह्ह, आज फेर जाग गईल" कहत ममता निक्की के कोरा ले लिहली, माई के कोरा आवते ही निक्की एकदम चुप हो गईली।
"मम्मी इ तहरा कोरा आवे खातिर जान बुझ के रोवेले, आज फेर हमरा आपन ड्रेस खुद बदले के पड़ी" खिसियात अमन कहलस
ओकर बात सुनके ममता हंसत आया से कहली "शांति अमन के ड्रेस बदल के खाना खिया दे, तले ले हम निक्की के खिया दीं।"
रोज के तरह अमन खाना खा के होमवर्क करे बैइठ गइल। सांझ के अमन सोसाईटी के लईकन के संगे खेले जाए, फेर अपना फेवरेट कार्टून शो देखे ओकरा बाद थोड़ा देर निक्की के संगे खेले फेर रात के खाना खा के सुते जाय। रोज के इहे रूटीन रहे।

मम्मी, इ सवाल कइसे हल होई नइखे बुझात"

"रुक, आवSतानी" कहत ममता निक्की के प्रैम में लेटा के, अमन के लगे आके सवाल समझाए लगली अउर ओकर काल के टाइम-टेबल ठीक करे लगली, तब्बे उनकर एगो कॉपी पर नज़र गईल जे पर वैभव गुप्ता 3rd-B, मैथ्स होमवर्क कॉपी लिखल रहल।

"अमन, वैभव के कॉपी तहरा लगे कइसे आगईल?

"ना त? हम त कवनो कापी वैभव से नइखी लेहले?" कहत ममता के हाथ से कॉपी लेके देखे लागल,
ओकरा याद पड़ल कि, जब उ वैभव के कॉपी खोल के क्लास में देखत रहल तब्बे इंटरवेल के घंटी बज गईल रहे। हड़बड़ी में गलती से उ कॉपी ओकरा बैग में रखा गईल होई।

"ओह अब का होई? ओकर कॉपी में होम-वर्क ना होई त काल ओकरा सजा मिल जाई" अमन इ सोच के ही घबरा गईल।

"इ त सांचो बुरा भईल अमन! ओकर फोन नंबर बा तहरा लगे?

"ना मम्मी, चलS ना ओकर कॉपी दे आवल जाओ?

"ओकर घर के पता बा तहरा लगे अमन?"

"वैभव गौर-ग्रीन में रहेला, उ एकबार कहले रहे कि ओकर बालकनी से स्विमिंग-पूल देखाई देला।

"अरे अइसे-कइसे चल दीं अमन, नंबर-पता कुच्छो मालूम नइखे" एतने में बगल के फ्लैट से मिसेस सिन्हा आ गइली गपसप करे

"उफ़ अब इ आंटीजी जल्दी हिले वाली नइखी, इनकर बतकही अब ख़तम ना होइ" अमन चिढ़ के मारे बुदबुदाए लागल।

"अब वैभव होमवर्क कइसे करी? उहो दू दिन के पूरा काम, ओफ, एतना सारा होम-वर्क त हमहू ना कर पाईब, एसे बढ़िया होई कि, हम ओकर कॉपी खुदे दे आईं, रास्ता त पता बटले बा। मम्मी के बताईब त जईहें भी ना अउर ना जाए दिहें, हम झट से ओकर कॉपी देके चल आईब" सोचत अमन वैभव के कॉपी बुशर्ट के अन्दर घुसा के बाहर जाये लागल। अमन के जात देख ममता टोकली

"कहंवा अमन?

"पार्क में" अमन कहलस।

"ठीक बा 6 बजे ले आ जईहS"

"ठीक बा मम्मी" कहत अमन तेजी से घरे से निकल के नीचे पार्क में आ गइल। पार्क में आपन संघतिया कुल के खेलत देखके, अमन के एकबेर मन भईल कि वैभव के कॉपी दिहल छोड़के ओकनी के साथे खेले लागे मगर फेर... मिस मैथ्यू के भयानक चेहरा अमन आगा घूम गईल। एकरा पहिले अमन अकेले आपन सोसाईटी गेट से बाहर कब्बो न गईल रहे, गार्ड भी ओकरा के अकेले जाये ना दिही अभी इहे कुल सोचत उ गेट तक पहुचल रहे कि तब्बे ओकरा अपना ब्लाक के रोहित भईया कोचिंग खातिर गेट के बाहर जात लउक गईलन। अमन दउड़ के रोहित के हाथ पकड़ के चले लागल।

"नमस्ते भईया हमरा अपना दोस्त के लगे जायेके बा उ गौर-ग्रीन में रहेला,तू हमरा के गेट के बाहर ले छोड़ द, बाकि रास्ता हम देखले बानी "मनावन करत अमन रोहित से कहे लागल। "ठीक बा"कहत रोहित अमन के गेट के बाहर ले आइल।

"थैंक यु रोहित भईया" कहत अमन गौर-ग्रीन के तरफ बढ़ गईल । अमन खुद के आज बहुत समझदार और अनुभवी बुझे लागल, ओकरा लागल कि मम्मी बेकारे अकेले बहरा जाए से बरजेली अब उ कहीं भी अकेले आ जा सकेला । दुनु हाथ से वैभव के कॉपी छाती से चिपकइले पूरा आत्मविश्वास से चलल जात रहे। बहरी लोगन के उ जतावल ना चाहत रहे कि, अकेले बहार के दुनिया में ओकर पहिला कदम बा। घन आबादी वाला इ एरिया में मोटर-गाड़ियन के कतार कब्बो बंद ना होला, लोग-बाग भी आवत-जात रहलं। कुछ दूरी तय करे के बाद अमन के गौर-ग्रीन के बिल्डिंग देखाई देवे लागल। उ अउर हौसला से आगे बढ़े लागल । अब रोड के ओहपार गौरग्रीन के गेट देखाई देत रहल, जहंवा से वैभव रोज स्कूल खातिर चढत रहे, अमन खुश हो गईल ..सड़क पार करे खातिर एने ओने कुछ देखलस फेर सामने पान के दोकान के लगे खड़ा भईल आदमी से पूछलस,"अंकल इहाँ ज़ेबरा क्रासिंग केने बा? हमरा रोड क्रॉस करे के बा"

बच्चा के भोला-भाली सवाल प दूकानदार अउर उ आदमी दुनु हँसे लगलनसं। गुटका के पाउच फाड़ के गुटका फांकत उ आदमी कहलस

"बाबू इहाँ ज़ेबरा क्रासिंग नइखे" हुंह, वैइसे भी इहाँ एतना नियम-कानून के मानेला? आवS हम रोड पार करा दीं?"

"उ त ठीक बा अंकल जी.... मगर पहिले ई बताईं कि, राउर पीछही कूड़ा-दान बा तब्बो रउवा पाउच ज़मीनी पर फेंकले बानी ?" अउर पान वाले अंकल जी राऊर दोकान के आगे केतना गन्दगी बा? जदी आपलोग हमरे स्कूल में रहतन त सजा मिल जाइत"

एतना छोट बच्चा के मुहं से अइसन बात सुनके दुनु जना सन्न हो गईल लोग, उ आदमी तुरंते पाउच उठाके कूड़ा-दान में डाल देहलस। पानवाला दुनु कान पकड़ के कहलस "गलती हो गईल बबुआ हमहु स्कूले गईल बानी बाकि तोहरा नियर सबक इयाद ना क पवनी, आगे से याद राखब"

तबले अमन के एगो मेहरारू ठेला से सब्जी खरीदके रोड पार करे खातिर दायें बाएं नज़र घुमावात लउकल।अमन तुरंते उ मेहरारू के लगे दउड़ के पहुचल अउर इशारा करत पुछलस" "आंटी जी आप गौर-ग्रीन में रहेनी? हमरो उहें जाएके बा, हमार दोस्त रहेला ओकरे घरे जायेके बा, का आप हमरा के उहाँ पहुचा देब?"

"हं बाबू" मेहरारू स्नेह से ओकर हाथ पकड़ के रोड़ पार करा के गौर ग्रीन के भीतर ले अइली। फेर पुछली

"तहार दोस्त कवना ब्लाक में रहेला फ्लैट नंबर पता बा?

ना...दोस्त के नाम नाम वैभव गुप्ता बा, स्वीमिंग पूल से ओकर बालकनी लउकेला, आंटी जी आप स्वीमिंग पूल बता दीं केने बा?

"सामने जवन पार्क लउकता नू ओकरे बाएं तरफ बा, हम समान घरे राख़ के आवSतानी, फेर जोहल जाई तहार दोस्त के"

"ठीक बा आंटी जी,थैंक यू" कहके, अमन सीधे पार्क में चल गइल, उहाँ खेलत लईकन में वैभव के खोजे लागल, मगर वैभव ओकरा कहींयो नज़र ना आईल बाकि स्वीमिंग पूल लउक गईल । तेज़-तेज़ चलत पूल के पास के सब बालकनी के देखे लागल मुह ऊपर बवले -बवले ओकर माथा चकरा गईल ।हेतना बालकनी में कवन बालकनी वैभव के होई, जोहल मैथ्स होमवर्क करे से भी कठिन काम बुझाईल ओकरा।अमन फेर उदास होगईल थक हार के स्वीमिंग पूल के सीढी पर बईठ गईल। आंटी जी भी कह के गईली मगर अईली न अब ले। सूरज देवता भी अंजोर लेहले अपना घर की ओरी जाए लगले, अन्हार होत देख के अमन के डर लागे लागल,अब ओकरा घरे पहुच जाए के चाहीं, अभी ई सोचते रहल कि तब्बे ओकरा मम्मी के चीखत आवाज सुनाई पड़ल ... अ..म..न..... सर उठाकर देखलस त मम्मी ओकरे तरफ बदहवास भागल आवत रहली अउर पीछे-पीछे सिक्युरिटी गार्ड भी ।ममता अमन के सीना से चिपटा लेहली जइसे बुझात रहे कि, अमन अभी-अभी किडनेपर के चंगुल से छूट के आ रहल बाड़े।

"तहरा के बरजले रहनी नू ....ख़बरदार जे कब्बो बिना बोलले गेट से बाहर क़दम रखलS त, पता बा हम केतना डेरा गईल रहनी?"

"मगर मम्मी, वैभव के कॉपी..."

"कवनो बात ना सॉरी बोल दिहS वैभव के, अभी घरे चलS" अमन उदास मन से घरे लौट आइल। एतना मेहनत बेकार गईल अउर डांट पड़ल उ अलग...। आज ओकर निक्की के संगे खेले के भी मन न कइल।बेमन से खाना खाके आँख बंद कर के सुते के कोसिस करे लागल, मगर आँख बंद कइला के साथे ही हाथ में सोंटा लेहले मिस मेथ्यु के कलटाइन अउर वैभव के रोआईन चेहरा अमन के आगा घूम गईल ,हडबडा के अमन उठ के बईठ गईल।

कमरा के बत्ती जरा के अमन वैभव के कॉपी निकाल के ओकर होमवर्क करे लागल ....

देर रात तक कमरा के बत्ती जरत देख ममता धीरे से कमरा में झंकली। अमन के लिखत देख सब बुझ गईली...दुलार के मारे उनकर मन कइल कि अमन के माथा चूम ली, बाकी बिना डिस्टर्ब कइले उहाँ से चल गईली ।

सवेरे ममता प्यार से दुनु गाल थपथपा के जगईली त अमन झट से उठ गइल। आज बहुत खुस रहल ।अपना दोस्त के चेहरा प ख़ुसी देखे के बहुत जल्दी रहल ओकरा ।

अमन एह उम्मीद में रहल कि, वैभव आज डरल-सहमल आई मगर उ त चहकत बस में चढ़ल आज ओकर बार भी कटल-संवरल रहल। अमन के बगल में बइठते वैभव कहे लागल,"पता बा अमन, मम्मी हॉस्पिटल से आ गईली अउर साथ में हमार छोट खूब सुनर बहिन भी आईल बिया तहार निक्की जईसन।

"अरे बाह!"सुनके अमन भी खुस हो गईल।

"अमन, तू अईबा नू, हमार बहिन के देखे ?"

अमन ओरहन देत कहे लगलन "हुंह, आईब तब नू जब तहार घर के पता होई? काल सांझ के तू कहाँ रहलS? तहार फ्लैट खोज-खोज

www.bhojpurisahityangan.com

के परेसान हो गईनी ।"

"बी-ब्लाक, 201 गौर ग्रीन " बस इहे पता हवे अउर हम काल सांझ के मम्मी के होस्पिटल लेवे गईल रहनी।अमन तुरंते वैभव के पता आपन डायरी में नोट कर लेहलस।

क्लास में घुसते होते ही वैभव के चेहरा प घबराहट लऊके लागल रहे ....पहीला... दुसरा... तीसरा...फेर जैसे ही चउथा पीरियड के घंटा बाजल वैभव के चेहरा रोआईन-पराईन होखे लागल आज त सबके सामने बेंचपर कान पकड़ के खड़ा होखे के पड़ी । अमन कनखिया के वैभव के कुल हाव-भाव देखत रहे अउर मने-मने मुस्कियात भी रहे । एही बीच उ मौका पा के वैभव के कॉपी बैग से निकाल के झट से वैभव के बैग में रख देहलस। मिस मैथ्यू के क्लास में घुसते ही समूचा क्लास में सन्नाटा छा गइल।

"आपन-आपन होमवर्क देखावS "

मिस मेथ्यु के बोले भर के देर रहल, कि सबके कॉपी मेंज पर खुल गईल, वैभव भी आपन कॉपी निकाल के मेंज प धर दिहलन बाकी खोले के हिम्मत ना भईल।

जइसे-जइसे मिस मेथ्यु कॉपी चेक करत जात रहली, वैभव के धुकनी बढ़ल जात रहे।

अमन के बारी आवते ही झटे आपन कॉपी मिस के धरा देहलन।

"बढियां काम" कहत मिस अमन के होमवर्क में स्टार बना के लौटा देहली अउर वैभव के घूरत कहली

"वैभव कॉपी देखावS,"

मिस के तेज़ आवाज़ सुनके हांपत-काँपत वैभव खड़ा हो गइलन मगर कॉपी देवे के हिम्मत ना भईल, अमन झट से ओकर कॉपी खोलके मिस को पकड़ा देहलन। मिस मैथ्यू, कबो कॉपी के देखस कबो वैभव के ।

"बढियां काम, वैभव, होमवर्क सफाई से कइले बाड़S "

एक स्टार देके कॉपी वैभव के लौटावत, हेयर-कटिंग पर निगाह डालत आगे बढ़ गईली ।

वैभव के बुझाईल जइसे कवनो सपना देखSता। आँख फाड़-फाड़ के कॉपी खोल के निहारे लागल....तसल्ली भईला के बाद उ एक नज़र अमन के देखलस। लिखावट अउर अमन के चेहरा के हंसी देखके उ सब बुझ गईल।

"थैंक यू अमन, तू हमरा के गॉडज़िला से बचा लिहलS" वैभव प्यार से अमन के कंधा प हाथ रखत कहलस।

इंटरवेल में वैभव बैग से सुपरमैन निकालके अमन के देत कहलस" ल अमन इ सुपरमैन अब तहार भईल"

आयं सांचो.... पर इ त तहार सुपर-मैन ह नू ? अमन के जैसे विसवास ना भईल।

वैभव गर्व से सीना तान के कहलस "हमार सुपरमैन त तू हवS अमन"

दुनु अपना-अपना सुपरमैन के पा के बहुत खुश हो गइलेसं ।

www.bhojpurisahityangan.com

आलू अगोराई

मित्रसेन सिंह

ई किस्सा बा हमरा गाँव के आ हमरा लईकाइ उमिर के। हमार एगो चचिया भाई हऊवे हमरा से तीन दिन छोट । बतवला के जरूरत नइखे कि दुनो जने लंगोटिया यार रहनी जा। माघ के दिन रहे आ आलू के फसल पाक के तैयार रहली स । हमनियो के खेत में भईल रहे आ कोड़ि के बीनात रहे। दिन भर बीनला के बाद साँझी ले आलू के पहाड़ खड़ा हो जाए आउर फिर ओके बोरा में भरल जात रहे । कबो-कबो रात ढेर चढ़ जाओ त ओके ओहि जन खेतवे में राखि के अगोरल जाओ रात भर । ओइसे ओह ज़माना में गाँव में केहू के चोरावे के जरूरत ना पड़त रहे आ मँगला प कई सेर आलू सेतिहे में मिल जात रहे । किसान खेतिहर के दुर्दशा तबहियो होखे आ चोरी के घटना में आलू छोड़ के बोरा लेके भागे वाला कथा खूब होखे स। आलू के खेत में कई बेर पानी पटावल रातिये के संभव होखे जब २-४ घण्टा खातिर बिजुरी आवे। आज क लोग चिहाला कि कईसे ओतनि रात में केहू पानी में हेली, उहो जाड़ा के दिन में त हमरा होश परेला कि हमनी के खेत में पानी पटावत घरी पनीये में ढुकल रहीं । काहें से कि बहरा निकलला प जोरदार ठंढा लगे। अब ई कुल्हि बात उहे बुझी जे ई कुल कईले होखी। किस्सा त बहुत बा।

हँ त ओहि समय के बात बा, हम आ हमार भाई 7-8 साल के रहनीं जा। खेत में रात के रुकल कई बेर गयल रहे बाकि अकेले कबहुँ ना। एक बेर के बात बा, हमनी के रात के रुके क जोजना बनल आलू अगोरे खातिर। आ संगे रहलें सुक्खन पंडित। पंडित जी सयान रहें आ हमनी के उनकर असिस्टेंट। साँझ भईला से पहिलवे सुक्खन पंडित के कउनो काम क अकाज भईल आ उँहा के "अभिये आवत हईं" कहि के सटक लिहलें। काम का रहे ई आजु ले पता ना चलल। वइसे गाँव में भदही कहार के लईकी के नाँव सिरीदेवी आ सुक्खन पंडित के सन्नी देओल धराईल रहे ओह ज़माना में । आ बेचन अहीर चीलम के राख बुझवला से पहिले सुक्खन पंडित के जरूर याद करेलें । हल्ला त कई किसिम के रहे बाकि मुद्दा इँहवा आलू के बा। त पंचों भईल अईसन कि सुक्खन पंडित के रानीपुर टांसफारमर से ई सूचना मिल गईल रहे कि आजु रात लाइन ना आई। अब आलू अगोरला खातिर दू गो लईका रहबे कइलन सन। त उँहा के चल दिहनी दोसर लाइन जोहे। एह सूचना के घरे जाके बतवला के मौका रहे ना आ हमनी के चाहतो ना रहलीं जा। अब हम दुनो जाना खूब खुस कि आज रात अकेलहीं आलू अगोरे के मिली, केतना बहादुरी के काम। 7-8 साल की उमिर में जवन स्वतंत्रता सेनानी लेखा फीलिंग आईल कि अब का बताईं।

गते-गते किरिन डूबे लागल आ अन्हार भईल। जे गाँव देखले होई ऊ एह बात के खूब जानी कि गाँव के अन्हार का होला। ओकर आपन अलगे साम्यवाद होला आ अपने जंगलराज होला। गाँव के लोग प्रकृतिवादी होला आ अन्हार भईला खा पी के सुति परेला सब। खेत के बात अलगा होला। सबसे पहिला बात त जतनी कुक्कुर आवारा होलन स ऊ अन्हार भईला प खेत छोड़ के गाँव ध लेलन स। आ खेत में आवाजाही सुरु होखेला..... सियार के। पहिले कभी कभी हुँड़ारो होत रहन स बाकि अब ना भेटालन कुल्हि। हमनी के एगो मड़ई लेखा मचान में पुअरा बिछा के सुत्तल रहलीं जा आ अपना बहादुरी के बेवकूफी में कन्भर्ट होत देखत रहलीं जा। बगली में सउदिया वाला टारच रहे आ बहरा नेवार वाली खटिया बिछल रहे। फरसा कुदार खाँची दउरा आ खेती के बाकि छोट मोट समान लगिए धयल रहे । रेडियो सिलोन भा बिबिध भारती जईसन कुछ बाजत रहे तले त पीछे से दो का जाने कि सियार रहे भा हुँड़ार रहे जोर से चिघरबे त कईलस । हमनी क लईकाह उमिर । कहला के जरूरत नईखे कि अगला दुइये खन में हमनी क गाँव वाला सड़की पर सरपट दौड़ रहल बानी जा। कोस भर प गाँव रहे आ साँस लिहला से पहिले हमनी क अपना दुआर प ठाँढ़ रहली जा। हमनी के पोसुवा कुक्कुर के भूंकल सुन के हमार सरगवासी बाबा सबसे पहिले बहरे अईलें, काहें से की उंहा के दलानी में सुतत रहनी । हमनी के हाँफत-काँपत मुंह से बोली फूटे ओकरा पहिलहीं दस सवाल, के हऊवे उंहवा खेत पर ? काहें भगला ह सन आदि इत्यादि। रऊँवा लोग आश्चर्य करब सुन के बाकि जईसहीं बाबा ई जनलन कि हमनी के भागल आवत बानी जा, सोटा उठऊलन आ लगलन सोटहरे ओही बेरा । "का रे बेईमान सन कुल्हि समनिया छोड़ के भागि अईले? चल लवट तुरत, भिनसहार भईला से पहिले गाँव में लऊकिहा जन ।" आपन आपन माई के दुलरुवा हमनी क एह बेवहार से अवाक हो गईलीं जा। आउर कऊनो भाव क होश ना परत बा काहें से की बाबा के सोंटा बरसले जात रहे। हमनीं क फेरु

मित्रसेन सिंह

मित्रसेन सिंह जी उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिला के रहे वाला हईं । एगो भारतीय टेक्नोलोजी आ कंसल्टींग कम्पनी में मैनेजर के पद प काम कई रहल बानी। इँहा के आपन ब्लाग लिखेनी, वर्तमान में इंग्लैंड के लंदन शहर में रह रहल बानी ।

ओही सांस में वापस खेत पर आ गीरत- ढम्हीलात फेरु ओही पुअरा के बिछौना में ढुक गईलीं जा। आजु ले एतना दुःख आ एतना क्षोभ कऊनो बात पर न भईल रहे बाकि ओकरा ले बेसी हुँड़ारन के हदास रहे ता रोवल धोवल बंद हो गईल तुरते। कब सुतलीं जा आ कब सबेर भईल केहू ना जनलस। रात भर क भुखाईल रहलीं ता उठला के बाद कऊड़ा में आलू भूजे लगलीं जा। तबले त ओने से बाबा एगो पोटरी में गरम गरम रोटी आ घुँघुनी बन्हले आवत लऊकलन। एकदम किरिन उगला घरी के बात बा आ ओतना सबेरे ऊ कईसे नास्ता बनवलन आज ले हमनी के ना बुझाईल। हमनी क बाछा नियर उछड़त उनकरा के धरहीं जात रहलीं जा की रात वाली घटना मन परा गईल। फेरु का, फेरु रोवल पीटल आ बिद्रोह सुरु हो गईल हमनी के । हउ पोसुवा कुकुरवा संगही रहे बाबा के आ उहो लगल हमनिये की ओर से भूंके। बाबा ई कुल सोच के आईल रहलन आ फिर केतनो ता हमनी के बाबा रहलन। बात के बात में हमनी के मना लिहलन आ फिर कुल्हि अदावत भुलाई के हमनी क घुँघुनी चांपे लगलीं जा, आ बाबा के देहीं प लोट लोट के खेल तमाशा सुरु कई दीहलीं जा।

कई साल बीत गईल आ कभियो केहू ई ना पूछल कि काहें ला उन्हा के एतना सख्ती देखवलन। समान के चिंता के बात त कभी ना रहे बाकि ई कहला के बात नईखे कि एगो लईका के, खास तौर से किसान के लईका के बहरा निकसला खातिर ई कुल अनुभव आ ओसे उपजे वाला हिम्मत केतना जरूरी होखे ला। बाबा हमनी के छोड़ के चलि गईलन बाकि आज जब हम देस बिदेस घूमीं ला आ कऊनो संकटमय स्थिति आवे ले हमरा सोझा ता बाबा के ऊ मार हमरा जरूर होस परेला आ ओसे ढेर बाबा होस परेलन.....

टीम आखर

'फोक' के झोंप में भुलाइल लोक के तलाश (भाग-4)

मचिया बइठल कोसिला रानी बनाम् अरज करत हिरनी

प्रमोद कुमार तिवारी

लोक साहित्य के जब कबो बात होखेला तऽ ओकरा भदेशपन के, ओकरा माटी के गंध के तऽ खूब बात होला, लोक के पिछड़ापन, रूढिवादिता अउर कम समझ के भी लोग अकसरहां रेखांकित करेले बाकिर लोक के विवेक के बात कम होखेला। लोक कवनो बात के कइसे प्रतिष्ठा देला आ कइसे बड़का-बड़का राजा-महाराजा लोग के आ उनुका आदेश के धज्जी उड़ा देला, एह बात के चर्चा बहुते कम भइल बा। राजा से मान्यता पावल जेतना आसान हऽ, लोक से समर्थन पावल ओतने मुश्किल। असल में शास्त्र में व्यक्ति आ सत्ता के तानाशाही चल जाला, पढ़ल लिखल लोग कबो लिहाज में, त कबो स्वार्थ में समझौता कऽ लेबेले बाकिर लोक व्यक्ति ना हऽ, अगर जोर जबरदस्ती से रउआ ओकरा से जूता बनवाइयो लेब तऽ लोक एगो चोर कील अइसन जगह घुसा देही कि ऊ लउकी त ना बाकिर गोड़ के खूने खून कऽ दीही। अगर कबो लागबो करे कि लोक स्वीकार कऽ लेले बा तऽ पलट के ऊ अइसन गहिराह चोट मारेला कि कहंरत आ चिल्लात भी ना बने। एह मामला में लोक में अक्सर एगो खास तरह के विवेक देखे के मिलेला। एह विवेक के न्याय-अन्याय, नीमन-बाउर भा शुभ-अशुभ से जादे मतलब ना होखे। बस ओकर आपन तर्क पद्धति होखेले जवना के समूह से मान्यता मिलेला। अइसन मामला में लोक भगवानो के ठेंगा देखावे में ना हिचके। एकर कई गो उदाहरण लोक में देखे के मिलेला। विभीषण से बड़ राम भक्त कहां मिली, जवन कि कठोर दांतन के बीच कोमल जीभ जइसन राक्षसन के बीच रह के भी राम के पूजा करत रहले। विभीषण में कवनो अवगुण ना रहे, नीति आ न्याय के ऊ पक्षधर रहले। बाद में तऽ राजा भी बन गइल रहलन आ बहुत लंबा समय तक राज कइलन बाकिर एक जगह मार खा गइले। लोक उनुका के स्वीकार ना कइलस। लाख कोशिश कइला के बादो बड़का-बड़का रामायणकार मिल के भी विभीषण के प्रतिष्ठा ना दिला पइले। लोक उनुका के अपना हियरा से उतार दिहलस तऽ उतार दिहलस। एकर उल्टा उदाहरण महाभारत में देखे के मिलेला। कर्ण अन्याय के साथे रहले, भगवान यानी कृष्ण आ पांडव के विरोध में रहले बाकिर कर्ण के लोक के जबरदस्त समर्थन मिलल। इहां तक कि युधिष्ठिर-अर्जुन भा भीम-अर्जुन से जादे करण -अर्जुन के नाम लीहल जाला। आ मजेदार ई बा कि करण के मारेवाला उनुकर दुश्मन अर्जुन के साथे आ उनुका से पहिले कर्ण के नाम आवेला। आखिर अइसन कइसे हो जाला। एह सब के पीछे के मूल कारण हऽ 'लोक के विवेक'। लोक अपना विवेक के सूप में तमाम कथा आ घटना के छांट-फटकार के अंत में अपना मतलब के दाना चुनेला। एह दाना के सैकड़न साल में हजारन-लाखन लोग से मान्यता मिलेला तब ऊ लोक के संपत्ति बनेले। लोक के विवेक के अब तक हमरा के जवन सबसे जानदार उदाहरण मिलल बा ऊ एगो भोजपुरी सोहर हऽ। ई शास्त्र के ना ठेठ लोक के सोहर हउए, लोक के जेतना विशेषता बा ऊ एह सोहर में देखल जा सकेला। आदमी आ जानवर के बातचीत, पर्यावरण से जुड़ाव, कमजोर के समर्थन, संवाद के गुण, दृश्यात्मकता, सत्ता के विरोध आदि सब एकरा में देखे के मिलेला। शास्त्र वाला लोग के तऽ जब हम एकरा बारे में बतवनी तऽ बहुत सारा लोग चिहाए आ अचरज करे लागल जबकि ई पूरा अवध, भोजपुरी आ मैथिली क्षेत्र में जबरदस्त लोकप्रिय बा। मीडियावाला लोग के एह गीत के बारे में पता चल जाइत तऽ गाय-गोबर के ले के वर्तमान समय में चल रहल हंगामा अउरी बढ़ जाइत काहे कि एह गीत से इहो पता चलेला कि राम के परिवार के लोग मांस खात रहे। ई पूरा गीत भारतीय संस्कृति के सबसे लोकप्रिय आधार ग्रंथ आ एक तरह से भारतीयता के प्रतीक रामायण के सोझा बहुते बारीक ढंग से प्रतिरोध आ प्रतिसंस्कृति के पटकथा लिखेले। सोहर हमेशा बच्चा के जनम के समय गावल जाला, ई खुशी के प्रतीक हऽ आ ओहू में ई सोहर राम के जनम के समय के चित्रण करेला। पूरा अजोध्या खुशी आ उल्लास में भरल बिया। घर-घर ढोल, नगाड़ा बाज रहल बा, बधावा गावल जा रहल

www.bhojpurisahityangan.com

बा घर-घर में खील, लड्डू, बताशे बांटल जा रहल बा। सभी मरद मेहरारू सज-धज के नया नया कपड़ा पहिन के भोज के तइयारी कर रहल बाड़े। छप्पन प्रकार के पकवान बन रहल बा आ अइसन उत्सव के समय में दुख आ पीड़ा के एतना बड़ चित्कार। असल में छप्पन भोग में से एगो पकवान हिरन के मांस के बा। (एगो कथा के अनुसार हिरनी के बच्चा के मांस के बा, बच्चा के मांस ढेर मीठ आ मुलायम होखेला एह से हिरनी के नवजात बच्चा के लोग उठा ले गइल बा।) कोसिला के बच्चा के समानांतर हिरनी के बच्चा के खाड़ करे के लोक के एह प्रयास के दुर्लभ कहल जाई। एक साथ ई गीत कई स्तर पऽ चलेले आ एकरा में नाटक जइसन कई गो दृश्य बा। ई गीत बहुत लंबा बा आ एकर कई गो रूप मिलेला जवन गीत हम इहां दे रहल बानीं ऊ एह गीत के संक्षिप्त रूप हऽ जवना में खाली छह गो बंद बा। बाकिर तबो ई सोहर अपना आप में पूरा बा। एकरा पहिलका दृश्य में हिरन-हिरनी के बीच के संवाद बा, एकरा बाद हिरनी के कोसिला रानी से प्रार्थना बा कि हिरना के मांस तऽ रउआ लेइए लेनी हमरा के ओकर खाल दे देहीं आ तीसरका स्तर पऽ खाल ना मिलला के बाद के दृश्य बा जवना में ओह खाल से खंजड़ी बना लीहल गइल बा जवना के आवाज सुन के हिरनी डहंकत बिया। पीड़ा आ करुणा के एकरा से बड़ उदाहरण खोजल मुश्किल बा। आ ई उदहारण ओह भगवान राम के सोझा खाड़ हो रहल बा जवन अपना देवत्व खातिर ना मनुष्यत्व खातिर जानल जाले। उनुका के मर्यादा देवोत्तम ना मर्यादा पुरुषोत्तम कहल जाला। ई गीत मनुष्यता के आहत करेवाला सत्ता आ शासन व्यवस्था के खिलाफ एगो बड़ चुनौती बन के खाड़ हो जाला आ लोक के ताकत के शानदार नमूना प्रस्तुत करेला।

बाकिर एह सोहर के खाली एके गो पक्ष नइखे। एह गीत के भीतर से ओह तत्व के तलाश कइल जा सकत बा जवना पर अक्सरहां लोग अचरज करेले कि माया से ले के मिश्र(इजिप्ट) तक दुनिया के तमाम संस्कृति खतम हो गइली सऽ बाकिर भारतीयता बांचल रह गइल। काहें आ कइसे। ओकर जवाब एह गीत में आ एकरा पीछे मौजूद लोक के विवेक में बा। ई गीत खास तरह के संतुलन बनावेला। सत्ता आ शासित के बीच के संतुलन, शास्त्र आ लोक के संतुलन। लोकगीतन आ खास तौर से संस्कार गीतन में राम आ सीता आ कौसल्या बार-बार आवेले। एही लोक में हर माई के कौसल्या से आ हर बच्चा के राम से तुलना कइल जाला। लेकिन **इहे लोक अपना एह गीत में सनेस देला कि हिरनी, रानी से तनिको कम नइखे आ जहां भी हिरनी कमजोर पड़ी आ ओकरा के दबावल जाई ओकरा साथे लोक खाड़ हो जाई। कहां, आ केकरा साथे खड़ा होखे के बा ई समझ बहुत मुश्किल से आवेला। आ समझ आइयो जाए तऽ खड़ा होखे के ताकत आ हिम्मत देखावल बहुत मुश्किल हो जाला।**

अइसने एगो गीत तब देखे के मिलल जब 1857 में अंग्रेजन के दमन के कारण ओह घरी के पढ़ल लिखल आ समझदार लोग एकदम चुप लगा गइल रहे। शिष्ट हिन्दी साहित्य में गदर के आंदोलन के लेके बहुते कम साहित्य देखे के मिलेला। बाकिर लोक में अइसन विरोधी साहित्य के मात्रा एतना बड़ बा कि खाली कुंवरे सिंह पऽ कई गो महाकाव्य देखे के मिल जाला। ओहू से बड़ बात कि एह गीतन के तेवर एतना मारक आ धारदार बा कि कायरो सब के भुजा फड़फड़ाए लागे आ ऊ जूझे-मरे खातिर तइयार हो जाए। बाबू हरेन्द्र देव नारायण के गीत 'डुग्गी बाजल' होखे चाहे बाबू चंद्रशेखर मिसिर के ऊ गीत जवना में ऊ बतावेले कि 'अब गांव में हर ओर छूरी कटारी के आवाज गूंजेला, अब चूड़िहारिन गांव में ना आवेले।' अइसन क्रांतिकारी गीतन के एगो लमहर परंपरा बा। अइसन गीतन के रचे वाला, बचावेवाला आ लगातार गा के ओकरा के जिंदा राखे वाला लोक के आ ओकरा एह विवेक के आज बार बार सलाम करे के जरूरत बा।

छापक पेड़ छिहुलिया के पतवन अति गहबर हो।
ताहि तर ठाढ़ि हिरनिया त मन बति अनमन हो ।।

चरत-चात हरिनवा त हरिनी से पूछेले हो।
हरिनी, काहे तोर चरहा झुरान कि पानी बिनु मुरझेलू हो ।।

नहिं मोर चरहा झुरान, न पानी बिनु मुरझीले हो ।
हरिना, आजु राजा के छठिहार, तोहे मारि डरिहें हो ।।

मचीयहिं बइठल कोसिला रानी से हरिनी अरज करे हो ।
रानी, मसुआ त सींझेला रसोइया, खलरिया हमें दीहतू न हो ।।
गछिया से टांगब खलरिया त मनवा समुझाइब हो ।
रानी, हिरि फिरि देखबि खलरिया जनुक हरिना जीअतहिं हो ।।

जाहु जाहु हरिनी अपना घरे खलरिया नाहिं देहबि हो ।
हरिनी, खलरी के खंजड़ी मढ़ाइबि राम मोरा खेलिहन हो ।।

प्रमोद कुमार तिवारी

भभुआ बिहार के रहे वाला प्रमोद कुमार जी , केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर , गुजरात मे असिस्टेंट प्रोफेसर बानी। इँहा के भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य खातिर लगातार काम कर रहल बानी। पत्र पत्रिकन में प्रमोद जी के रचना आकर्षण के केंद्र होली स। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इँहा के अपना लेखनी से बरिआर चोख धार देले बानी। एह घरी गांधीनगर गुजरात मे बानी।

जब जब बाजई खंजड़िया, सबद सुनि हरिनी अहंकई हो ।
हरिनी ठाढ़ि ढेकुलिया के नीचे हिरनवा के बिसूरई हो ।।

"डुग्गी बाजल"

गांवन गांवन में डुग्गी बाजल, बाबू के फिरल दुहाई
लोहा चबवाई के नेवता बा, सब साज आपन दल बादल ।
बा जान गवांवई के नेवता, चूड़ी फोरवाई के नेवता ।
सिंदुर पोंछवाई के नेवता, बा राड़ कहवाई के नेवता।
जेई हो हमार ते माथ देई, जेई हो हमार ते साथ देई ।
बा इहां न मौका समझई के, बा इहां न मौका बुझईके ।
कीतो फेरौ नेवता हमार, की तो तइयार हो जुझईके।

- हरेन्द्र देव नारायण

www.bhojpurisahityangan.com

नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ

जे. पी. द्विवेदी

इकलौता पंजीकृत नेता
जबसे बनल पब्लिक क चहेता ।
जनता हारी, हरदम हारेले
नेतवे बनिहें सर्व विजेता ।
सरापल समाज क फरमाइस,
केहर बिकास के आशा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

जाति धरम के डफली बजाई
सभ केहु आपन पचरा गाई
मुहजोरन से हथजोरीया बा
एही तरे उ समाज बनाई ।
करुवा तेल लगल बा जब तक,
इहे रही भाषा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

अझुराइल कुल्ह ममिला आई
पंचइती मे बईठ बुझाई
समाजवाद के नईकी रंगत
झम झम कईके झाल बजाई ।
बाउर मन जब ले न जागी, सगरों रही
निराशा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।
नेवता पठवल बड़की बात
संझही भगीहें छोड़ के साथ
चौथाई पर कब्जा बाटे
पूरा खातिर बौराइल जात ।
राग रंग सब छोड़ छाड़ के, फिर गावा
चौमासा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

लोभ छोभ पर केचुली मराल
बेसवाद बतकुचन फानल ।
चिचरी पारेला लूरो नईखे
जाँगर जाने कहाँ पराइल ।
'बुद्धि के भसुर' सुतल बा जबले, इहे चली
तमाशा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

औंजाइल मन, मनई खीझल
कटुताई से चितवन बींधल
अब जुमला क सुनल सुनावल
ना कर पाई मन के शीतल ।
टूके टूक करेज बा जबले,
नाहीं चली शियापा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

अक्सरहा रहिला न फोड़ी भाड़
सपना भइल रहरी के दाल ।
आलू पियाज़ क नउका रेकड़
मनईन क अब पूछी के हाल ।
नगीचा आई इयादों पारा,
सउसे होश तराशा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

अलता लागल गोड़ भुलाइल
मीना बिछुआ अब न भेटाई
पेटो पालल पहाड़ भइल जब
परब त्योहार केकरा सोहाई ।
ढांकब तोपब कबले सभका,
नाहीं चली अब झासा बबुआ ।
नीमन गढ़ परिभाषा बबुआ ।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

मूलतः बनारस के जयशंकर प्रसाद जी ए घरी गाजियाबाद में रह रहल बानी । भोजपुरी आ हिन्दी के ढेर पत्रिका में इहाँ के कविता नियमित रूप से प्रकाशित होत रहेला ।

दू गो कविता

इष्ट प्रदेश

नंदिनी सिंह

एगो गाँव बसावे के बा
आपन लईका के
मन में
सोगहग
पसार देवे के बा
लहलहाईल खेत
घींच देवे के बा
क्षितिज
छींट के मातृजल
रोपे के बा
कईगो फेंड़
कईगो घर
के दिरिस
आ लोग कईगो
से मिलवाए के बा
ऊ गाँव के
बसावे के बा
जइसे बसवलन हमार बाबा
ऊ गाँव जे 'श्रुति'
से हमार 'स्मृति' बनल
आ 'स्मित' बन जीवंत बा
अबहूँ
नरमाई ऊ माटी के
करे बड़ के बरियार जे
फ्लावर – पॉट में
रोपाईल लोगन के
बहुते बा जरूरत
बसावल एगो गांव हमहूँ
रखब आबाद
अइसन जगह, जे
कबहुँ न रहल
ना रही,
एगो कल्पित मुकाम
आँखि के सोझा,
पर रही सदा
पहला
आ आखिरी जगह
जाये के
समय के सभे रंग में।

फेरु बताईबि

हृषिकेश चतुर्वेदी

चलऽ , फेरु बताईबि !
ज़माना के सितम के गिनती,
हमरा सहला के गिनती,
चलऽ , फेरु बताईबि।
केतना बेर टूटल दिल,
केतना बेर सीयनी हम,
चलऽ , फेरु बताईबि।
केतना रिश्ता भईल बेमानी,
हम केतना जीयत बानी,
चलऽ , फेरु बताईबि।
केतना बादरि हवा उड़ावे,
केतना दर्द लोर लुकावावे,
चलऽ , फेरु बताईबि।

www.bhojpurisahityangan.com

विरासत

अनिल प्रसाद

हमनी के "डॉन किहोते" आ "सांचो पांजा" लेखा
खयाली दुनिया के दुश्मन से लगातार लड़ रहल बानी
जेकर कवनो अस्तित्व नईखे, ना रहल बा, ना रही
कुछ लोग के खातिर जीवन (मिथ्या) अधिकार के
पावे के लड़ाई बा, आ कुछ लोग एहिके
लेकिन धर्म मान के, सच्चाई, विश्वास आ लगन से
स्वतंत्रता संग्राम में आपन सब कुछ गवां के
अईसन चीज पा गईल जे हमनी के विरासत
बनेके चाहीं आ विरासत ह आ विरासत बा
लेकिन हमनी के हल्ला-गुल्ला, गाली-गलौंज बहुत करतानी-
आ साम्प्रदायिकता, असहिष्णुता, अश्लीलता के शोर
के जोर के बीच अपना विरासत के भुला देले बानी
बईठल बानी क्लाउड कंप्यूटिंग के क्लाउड नाइन पर
आपन आपन डेटा दिन-रात सहोरत-बटोरत
लेकिन जीरादेई में, हथुआ में, पुरनका सारन जिला के
छपरा में, लंगट सिंह कॉलेज मुज्जफरपुर में,
चंपारन में, दिल्ली में, पुरनका सदाकत आश्रम पटना में
जवन हमनी के विरासत पर बहेंगवा जामल बा
ओकरा के साफ करे खातिर कवनो एंटी-वायरस
खोजात नईखे...विकास के नोनी लाग के
देवार ढह गईल बा, के का कहता, के का करता
ऊ कहले त हम कहनी त तू का कहलS
में आपन सब कुछ गवां देब आ तब ले समय भी !
सभे बा, सबकुछ बा नम्रता नईखे, भद्रता नईखे
लाचार जनता के अनदेखा कईले, बल, धन, पद के मद में डोलत
केहु कबो कुछ बोलता, कबो कुछ बोलता, आपन पोल अपने
खोलत
प्रेम से, मानवता से केहू कबो किसानन के बीच जाके
ओकर दुःख नईखे पूछत, ओकर दुःख नईखे बाटत
पुरनका सदाकत आश्रम में पेड़ के नीचे चबूतरा
पर बईठ के लोग के दुःख दरद के सुनता ?
सौम्यता नईखे, सुरूचि नईखे, समग्रता नईखे
धन पावे के, अधिकार पावे के, पद पावे के व्यग्रता बा
जिम्मेवारी के ना निभावे के अकड़ बा, अधीरता बा,
जीरादेई कबो गईनी हँ ? देखनी हँ राष्ट्रीय स्मारक ?
हथुआ गईनी हँ ? हाई स्कूल देखनी हँ ?
जिला स्कूल छपरा में काई के चमक देखनी हँ ?
पुरनका सदाकत आश्रम गईनी हँ, संग्रहालय देखनी हँ ?
जहाँ बीना वी. आई. पी. सुरक्षा के महानता आ सरलता के
प्रतिमूर्ति
सज्जनता, सौम्यता, शिष्टाचार आ ईमानदारी के साथ निवास
करत रहनी, आम के बगईचा के बीच में, खपरैल मकान में !
वोही हमनी के अनमोल विरासत ह रउआ मानी चाहे ना मानी !
एक दिन मानेहि के पड़ी आ दंभ के आकाश से
यथार्थ के धरती पर बईठ के सब केहू के
अपना असली विरासत के बचावे खातिर
प्रायश्चित करे के पड़ी, प्रयत्न कर के पड़ी
अपना आप से संघर्ष करे के पड़ी
अगर अंतरात्मा जागृत होई तब !
जे जिन्दा रहते ही मर गईल बा
ओकरा अपना विरासत से का मतलब बा ?

अनिल प्रसाद मूलतःहथुआ, बिहार के रहेवाला हयीं। अंग्रेजी साहित्य में शोध। साहित्य अकादमी खातिर यशपाल के 'झूठा सच' के कुछ अंशन के अंग्रेजी में अनुवाद। भारत, मिडिल ईस्ट, अमेरिका, चाइना, कनाडा अउरी ऑस्ट्रिया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनन में पेपर प्रेजेंटेशन अउरी कविता पाठ।अंग्रेजी, हिंदी अउरी भोजपुरी में लेखन। यमन, लीबिया, पटना अउरी मुंबई के विश्वविद्यालयन में अध्यापन। सऊदी अरेबिया में अंग्रेजी भाषा आ साहित्य के प्रोफेसर बानी।

भारत में FDI, खुदरा व्यापार : दशा आ दिशा

गौरव सिंह

का फी लम्बा समय से भारत में रिटेलिंग के आपन एगो आर्थिक, सामाजिक अउरी सांस्कृतिक पहचान भी रहल बा। भारत के अर्थव्यवस्था के एगो बरियार पिलर ह। भारत के जीडीपी के 23% हिस्सेदारी खाली रिटेलिंग के रहेला। देश में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर से भी ज्यादा हिस्सेदारी रखेला। एकर आर्थिक पहलु के साथे साथे सामाजिक अउरी सांस्कृतिक सरोकार भी जुडल रहेला। सड़क के किनारे कवनो रेहड़ी पटरी प लिट्टी-चोखा से लेके साडी के दुकान त पहुच जाई। लिट्टी चोखा बनावे से परोसे तक हर पहलु में सांस्कृतिक अस्मिता छिपल रहेला। इहाँ तक की बात में भाषाई अस्मिता के एगो अनूठा पहल भी मिलेला। एहिसे ढेर पश्चिमी बदलाव आईला से भाषाई दूरी बढ़ जाला। रिटेलिंग मूलतः दू प्रकार के होला। पहिला सिंगल ब्रांडेड, जवना में सिर्फ एक प्रकार के ओही ब्रांड के सामान बिकाला जईसे उदहारण के रूप में ले ली रीबौक के शोरूम में खाली ओकरे कंपनी के सामान मिली। दूसरा मल्टी ब्रांडेड, जवना में एक से ज्यादा कंपनी के सामान बिकाला उदहारण के रूप में लेली आल्मार्ट जहाँ अलग अलग ब्रांड के सामान एके दोकान में बेचात होखे।

भारत में रिटेलिंग के मार्केट भी यूनिफार्म नईखे। एहू में अलग अलग प्रकार के खांचा बटल बा। इहो दू प्रकार के होला। पहिला असंगठित, इ उ मार्केट होला जवना में एगो छोट व्यापारी, छोट बजट के आधार प परंपरागत रूप से दोकान चलावेला। जईसे उदहारण के रूप में लेली कवनो दोकान रोड के किनारे लिट्टी चोखा बनावत लउकत होखे चाहे कवनो सामान बेचत होखे। एह लोग के मार्केटिंग असंगठित रिटेलिंग में आवेला। इ लोग इनकम टैक्स अउरी सेल टैक्स से स्वतंत्र रहेला लेकिन ज्यादातर एह प्रकार के रिटेलर पुलिस के गैरकानूनी वसूली से स्वतंत्र ना रह पावेला। एह

गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडु से पढ़ाई कर रहल बानी।

से इहो कहल सही ना होई कि टैक्स ना देला लोग । वैधानिक तरीका से ना दे पावे लेकिन देवे के त परबे नु करेला । दूसरका होला संगठित, इ उ मार्केट होला जवना में लोग के दोकान तय रहेला अउरी इनकम आ सेल टैक्स के अंतर्गत रजिस्टर्ड रहेला । एह से पुलिस के गलत वसूली अउरी हस्तक्षेप के प्रभाव ना के बराबर रहेला । उदहारण के रूप में कवनो दोकान ले ली मार्केट के जवन कवनो रूम में लगावल होखे आ रजिस्टर्ड होखे ।

रिटेलिंग के सन्दर्भ में सरकारी पहल

रिटेलिंग मूल रूप से देखल जाव त हमनी के देश में राजनैतिक मुद्दा भी रहल बा । जवना घरी बीजेपी विपक्ष में रहे त एही FDI (फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट) वाला रिटेलिंग के मुद्दा उठाके पुरजोर विरोध कईले रहे । खैर राजनितिक मुद्दा से तनी दूरी बनाके काम के मुद्दा प आवे के चाही । 2011 तक भारत सरकार रिटेलिंग सेक्टर में सिंगल ब्रांड खातिर लगभग 50% FDI के सहमती के साथे लिटमस टेस्ट कईल गईल रहे । लेकिन समयानुसार धीरे धीरे मल्टी ब्रांड में भी FDI के आमंत्रित कईल गईल । लेकिन ओकरा एक साल बाद 2012 के शुरुआत में सरकार सिंगल ब्रांड खातिर FDI इन्वेस्टमेंट 50% के 100% कर देहलस । लेकिन जब इ कदम उठावले रहे तब एगो-दुगो महत्वपूर्ण शर्त रखल गईल जवना के चर्चा बहूत कम मिलेला । उ इ रहे कि सिंगल ब्रांड के 30% सामान भारत से उपयोग करेके परी । उदाहरन से एह बात के समझल जा सकेला जईसे मैकडोनाल्ड से बनल चिल्ली पोटैटो में कम से कम 30% आलू भारत से लेवे के परी । चाहे ओहिजा जवन वर्कर काम करिहे उ अहिजे के होखे के चाही । इ बढ़िया बात कि रुआ आपन दोकान भारत में बईठावत बानी त रुआ एहिजे के आदमी के लेवे के परी । एकरा अलावां एगो अउरी बढ़िया शर्त इ बा कि मल्टी ब्रांड में इन्वेस्टमेंट खातिर न्यूनतम लगभग 650 करोड़ रुपया के इन्वेस्टमेंट होखही के चाही । अउरी ओह इन्वेस्टमेंट के 50% पईसा एहिजा इंफ्रास्ट्रक्चर प खर्च करही के बा ।

एह सन्दर्भ में पाहिले एगो बात आवत रहे कि ओह चीज से बनावे खातिर अहिजा के आदमी में उ स्किल बा कि ना । अगर नईखे त प्रशिक्षित करीं । इहे उद्देश्य के चलते नु मनमोहन जी FDI प जोर देले रहले या मोदी जी दे रहल बाड़े । आज के डेट में लोग प्रशिक्षित कर रहल बा । चाहे मैकडोनाल्ड में काम करे वाला आदमिन के देख ली चाहे डोमिनोज में काम करे वाला आदमीन के देख ली । सब लोग एहिजे के बा । एह से जब भी इ बिंदु चर्चा में आवेला तब एह से हमरा कवनो ज्यादा दिक्कत ना बुझाला । अइसन भी बिल्कुल नइखे कि कवनो राज्य के मजबूर कईल जाला एह क्षेत्र में इन्वेस्टमेंट खातिर । केंद्र एगो सिर्फ डायरेक्शन दे रहल बिया । जवना राज्य सरकार के अच्छा लागे उ स्वागत करे आ जेकरा ना उ मना भी कर सकेला । इ सब राज्य के स्वतंत्र निर्णय के ऊपर बा । लेकिन जवन पार्टी गठबंधन में होई उ त तनी मनी प्रभावित होईबे नु करी । 2012 के अंत तक रिटेलिंग के क्षेत्र में मल्टी ब्रांड सेक्टर में लगभग 50% FDI के निमंत्रण दिआइल रहे । खूब राजनैतिक हलचल भी भईल लेकिन एकरा प डट के निर्णय लिआइल रहे । अगर दोसरा देश से तुलना करिजा त पाइम कि चाइना दुनो में (सिंगल आ मल्टी) 100% FDI रिटेलिंग के स्वागत कईले बा ।

रिटेलिंग तब अउरी अब

रिटेलिंग के दू फेज में तुलना करे के कोशिश करब । पहिला 1997-2011 अउरी दूसरा 2011 के बाद से अब तक में कतना ग्रोथ भईल बा । आ कवन कवन चुनौती बा । सबसे पाहिला बात इ कि 1997 से एह से शुरू कईनी ह काहे कि ओही घरी पहिला बेरी कैश में FDI के अनुमति देल गईल रहे आ दूसरा 2011 एह से काहे कि ओहिघरी FDI सक्रीय रूप से प्रभाव में आइल रहे । ओह घरी से लेके आ 2010 तक अगर विदेशी निवेश दने झाके के कोशिश करम त बहूत ही कम रहल बा । भारत के अर्थव्यवस्था ओतना मजबूत नइखे कि सबकुछ खुदे कर सके । भारत के ग्रोथ कम भईल बा 1997 से 2000 के बीच, त ओकरा पीछे एगो अउरी बरियार कारन रहल बा । उ इ कि हमनी लगे बढ़िया भंडारण अउरी इंफ्रास्ट्रक्चर के कमी रहल बा । पूरा विश्व में सबसे कमजोर भारत के भंडारण रहल बा । लगभग 24 मिलियन मेट्रिक टन क्षमता ही रहल बा भारत के लगे जवना में 80% से ज्यादा खाली आलू खातिर उपयोग होला । अगर ना होई त आलू के दाम पियाजू से भी महंगा हो जाई । 2011 तक मिडिल मैन के बरियार प्रभाव रहल बा । एह से मनमानी भी खूब चलल बा । रिटेल चैन एह मिडिल मैन के वजह से गड़बड़ाइल बा । 2011 तक लेबर मार्केट रिफार्म के कमी रहल बा अउरी रिटेल सेक्टर काफी जटिल रहे । ओह सब के उदार बनावल जरूरी रहे ताकी सतत पोषणीय विकास के कामना कईल जा सके ।

2011 से पहिला बहूत सारा बाधा रहे रिटेल सेक्टर में जवना चलते सामान उचित दाम प ना मिल पावत रहे । रिटेलिंग के क्षेत्र में बाजारू प्रतिस्पर्धा के घोर आभाव रहे जवना से मनमानी चलत रहे । बढ़िया भंडारण, इंफ्रास्ट्रक्चर अउरी रिटेल में प्रतिस्पर्धा के कमी के होखे के चलते काफी महंगाई भी रहे । मिलावटखोरी के संभावना बरियार रहत रहे । लेकिन 2011 के बाद से इ सभ चीज काफी हद तक सुधरल बा । वर्तमान के रिटेल के विकास देखके बहूत सारा अर्थशास्त्री लोग एह बात के अनुमान लगईले बा कि 2020 तक भारत के रिटेल इंडस्ट्रीज के रेवेनुए फ्रांस के रिटेल इंडस्ट्रीज के रेवेनुए के बराबर हो जाई जवन की 2011 के रेवेनुए के अपेक्षाकृत एकदम दुगुना बा । दोसरा शब्द में कही त एकदम तहस व्यवस्था के एगो बढ़िया व्यवस्थित प्लेटफार्म दिहल गईल बा । अइसन भी नइखे कि एकदम खुल्लम खुला बहार होखे । बहूत सारा शर्त भी बा जवन कि स्थानीय लोग के हित के रक्षा कर रहल बा । सरकार के कुछ लोड भी कम भईल बा जवना से बाकी के काम जईसे शिक्षा, स्वस्थ्य आदि बेहतर तरीका से कर सके । मिडिल मैन लोग जे

रिटेल चैन के प्रभावित करत रहे ओह लोग प लगाम लागल बा। साथ ही जवन भंडारण अउरी मिलावट वाला समस्या रहे, प्रतिस्पर्धा के वाजह से ओह में भी सुधार भईल बा।

रिटेलिंग में FDI काहे जरूरी बा ?

सबसे पहिला अउरी बड बात इ कि भारत के इकॉनमी ओतना बरियार नइखे के सबकुछ खुदे कर सके। एह से बाहरी मदद बेहद जरूरत बा अब इ सरकार के ऊपर निर्भर करत बा कि उ कवना माध्यम से मदद ले पावत बा FDI के सहारे या फिर ह्यूमन कैपिटल के स्थानांतरित करके। सोचीं अगर भारत अर्थव्यवस्था के बड़हन हिस्सा होने लगा दिही त बाकी के काम जईसे शिक्षा, स्वस्थ्य अउरी परिवहन वाला मामला गड़बड़ा जाई। ओह घरी छोट मोट दुकान जवन टैक्स ना भर पावत रहे आ रजिस्टर्ड ना रहे ओकरा शोषण के दौर से गुजरे के परल बा। पुलिस बर्बरता से वसूली करत आइल बा। लेकिन FDI आईला के बाद से एह लोग के प्रभाव कम भईल बा। छोट आ मिडिल व्यापारी लोग के बढ़िया तकनीक से अवगत होखे के मौका मिलल बा। तकनीक के आईला से दाम के मोलाई वाला समस्या से निजात मिलल बा। पाहिले 100 रु के सामान के दाम के पहिलही 180 बतईहेसन कम करत करत कतना पीछे जाई आदमी। लेकिन ढेर लोग ठगा जात रहे। दुकान प भी तकनीक के काफी प्रयोग होखे लागल बा जवना से ग्राहक के समय भी कम बर्बाद होला।

पश्चिम बंगाल में आलू बर्बादी के अख़बार में सियासी खबर सुनले होखम जा। हाल में दिल्ली के गोदाम में गेहूं बारिश में सड गईल। ओहिजो सियासत रंग लउकल। सवाल इ बा कि सरकार एकरा के कईसे हल कर सकेले ? सरकार लगे दू गो आप्शन बा। पहिला कि खुद ओइसन स्टोरेज बनावे। लेकिन अहिजा बजट भी बाधा बन जाला। तब दूसरा हल FDI के रूप में आ सकेला जवन एह समस्या के हल कर सके। एह से स्टोरेज अउरी इंफ्रास्ट्रक्चर दुनो समस्या हल हो सकेला। एकरा अलावां किसानन के सही मूल्य ना मिल पावेला मिडिल मैंन लोग के वजह से लेकिन FDI के वजह से ओह लोग के भी प्रभाव कम हो जाई। जवन वेस्ट होत रहे भंडारण के कमी के वजह से ओह प भी नियंत्रण पावल जा सकेला। FDI के सहायता से मिलावटखोरी वालु लोग प बंदिश अउरी मार्केट प्रतिस्पर्धा के वजह से उचित दाम प सामान मिले के भी उम्मीद रहेला। रिटेलिंग के तकनिकी आगमन से बहूत सारा सामजिक समस्या प भी नियंत्रण के आशा कईल जा सकत बा।

सामाजिक प्रभाव अउरी विवाद

सबसे बड समस्या असंगठित व्यवस्था के साथे इ रहे कि उ तमाम तरह के सामाजिक समस्या के भी जड़ रहल रहे। जईसे जवन मजदूर काम करेला ओकरा के समय प पगार ना दिही। अगर देबो करी त ढेर जगह न्यूनतम वेतन से कम वेतन दिही। मजबूरन काम करे के परत रहल बा। बहूत सारा छोट मोट दुकानन में बाल मजदूरी जईसन समस्या भी आपन प्रभाव दिखावले बिया। एह से इ कहल जा सकत बा कि रिटेलिंग में FDI आईला से सामाजिक समस्या के भी काफी हद तक निपटल जा सकेला तकनिकी सहायता के माध्यम से, जवना खातिर देश में तमाम NGO हाय हाय करत आइल बिया। इहो एगो कारन बा जवन हैडलाइन ना बन पावे कि काहे ज्यादातर NGO रिटेलिंग में FDI के नकारेला। इ ठीक ओकरे लेखा बा जईसे अगर धार्मिक अउरी जातीय उन्माद ख़त्म हो जाई त सियासत कईसे चली। ओसही इ कूल्ह बीमारी जईसे गरीबी, बाल मजदूरी अउरी समय प उचित वेतन मिल जाव त फिर NGO वाली नौकरी ख़त्म नु हो जाई। एगो अउरी सामाजिक पहलु के इ कवर करेला उ इ कि जवन लोग Disguised बेरोजगारी (जरूरत से ज्यादा आदमी कवनो दोकान में काम करत होखस) जईसन समस्या से जुझत आइल बा ओह लोग खातिर रोजगार के भी एगो प्लेटफार्म दे रहल बिया।

एकरा साथे कुछ चुनौती जरूर बा जवना वजह से हमेशा विरोध होखल आइल बा। अगर विरोध होता त ओह प बढ़िया से मूल्यांकन करे के चाही जवना से ओकरा के कईसे सुधारल जा सकेला। बहूत बार एगो बात निकल के आइल बा कि शुरू शुरू में दाम कम रही लेकिन कुछ दिन बाद जब सारा लोकल मार्केट खत्म हो जाई त एगो आपन एकाधिकार जमाके दाम बढावे शुरू कर दिही। दूसरा चुनौती इ बा कि हमनी के स्थानीय अर्थव्यवस्था गड़बड़ा जाई। एह से होई का कि मान लीही वैश्विक मंदी आ गईल त इ लोग त छोड़ के भाग नु जाई चाइना लेखा। फिर से स्थानीय मार्केट जमावल बड़ा मुश्किल के काम बा। चुकी 2008 में वैश्विक आर्थिक मंदी आइल रहे तब सिर्फ भारत बहूत ज्यादा प्रभावित ना रहे ओकरा पीछे कारन रहे कि स्थानीय अर्थव्यवस्था काफी मजबूत रहे। एह तरह के भी चैलेंज बा कि काम भारत के जनता करे अउरी मुनाफा विदेशी कंपनी। एहू बात के आशंका भी रहेला कि व्यापारी के रूप में घुस के राजनितिक स्टैंड मत लेलेवे ईस्ट इंडिया कंपनी लेखा। एह सब चुनौती खातिर हल निकालल भी काफी जरूरी बा काहे कि इ सब चीज के एक सीरा से नाकारल नइखे जा सकत।

अंत में निष्कर्ष के रूप में हम इहे कहल चाहब कि एगो एक्विलिब्रिउम मेन्टेन रहे के चाही। चाइना लेखा 100% छुट ना देवे के चाही। देश के विकास खातिर रिटेल सेक्टर में FDI के भी काफी जरूरत बा नाकारल नइखे जा सकत। सरकार के समयानुसार निरिक्षण जरूर करत रहे के चाही। निरिक्षण के साथे साथे सामाजिक, सांस्कृतिक अउरी आर्थिक पहलु के एक पेज प मूल्यांकन करे के चाही जवना से स्टेबिलिटी बनल रहो अउरी देश के विकास भी होत रहो।

ललमुनिया के माई

मनोज कुमार

ललमुनिया के उमिर आठ बरिस हो गइल रहे । उ आपन गांव के प्राथमिक पाठशाला में तीसरा क्लास में पढ़त रहली । ओकर बाबूजी रामचनर गांव के एगो साधारण किसान रहलें । उनका लगे आपन कुछ खेतीबारी रहे जेकरा सहारे ऊ परिवार के भरण पोषण करत रहलें ।

ललमुनिया के माई लक्ष्मीनिया पढ़ल-लिखल त ना रहली बाकिर रमपुरवा गांव में जेकर मुंह से सुने के मिले सभे इहे कहे कि ऊ कवनो ढेर पढ़ल-लिखल शहरी बहुरिया से कहीं जादे होशियार बिया । ऊ रामचनर के घरे लगभग दस-बारे बरिस पहिले बियाह के आइल रहली । तब रामचनर के ना कवनो औकात रहे आ ना ही ओमे विशेष कुछो कार करे के लक्षण लउके । बाकिर जब से लक्ष्मीनिया ओकर घरे आइल ऊ आपन सूझ-बूझ से ना खाली घर के माली दशा सुधरली बल्कि रामचनर के भी सही रस्ता देखवली । करजा में डूबल ओकर सगरी खेत छुड़ववली आ घर के सही हिसाब-किताब से चलाये लगली । ई ओकरे सूझ-बूझ के नतीजा रहे कि बियाह के तीन बरिस के बाद ललमुनिया के जनम भइल आ ओकरा बाद उ कहली, "लइका आ लइकी में कवनो भेद ना होला । सब त एके समान ह । इहे अब हमनी के जिनगी बाड़ी । एके नीमन से पढ़ावल जाव, लिखावल जाव । इ आपन जिनगी में सुख के दिन देखे ई खातिर अब हमनी के आपन परिवार के नइखे बढ़ाये के ।"

रामचनर इ बात सुन के हैरान रह गइलें । हइ कइसन मेहरारू बिया । औरतन त एगो बेटा खातिर तरसेली सन आ ई एक्के गो बेटी के जनम के बाद कहत बिया कि अब परिवार आगे नइखे बढ़ाये के । उ कहलस कि घर में कम से कम एगो अउर लइका त होखें के चाहीं । तहरो मन में इ इच्छा जरूरे होई । कुछ समय के बाद ही सही । एकरा एगो भाई त रहे के चाहीं ।

एह बात पर लक्ष्मीनिया कहली, "हम कुल्ही सात बहिन रहनी । एगो भाई के आस में परिवार बढ़त गइल आ ओही तरे बढ़त गइल गरीबी, दुख आ दुनिया भर के परेशानी । एगो लइकी के भरपेट खाये के ना जूरे आ भाई के आस में हम सात गो बहिन हो गइनी । अइसन नरक जइसन जिनगी से का फायदा बा? हम सब से बड़ बहिन रहनी । हम केतना राती के भुखले सुतीं ई केहू के ना पता होई । ऊ त महतारी बाप के जिनगी रहे जेमे हमनी के कवनो अख्तियार ना रहे । बाकिर ई त हमनी के आपन जिनगी बा । हमनी के सोचे विचारे के बा । परिवार बढ़ावल बहुते आसान ह । बाकि ओके नीमन से चलावल ओतने मुश्किल । एके गो बेटी रही, उहे सुख से रही त जिनगी सोगारथ हो जाई । आगे रउये मालिक बानी ।"

रामचनर मेहरारू के सोच के खिलाफ कबो ना गइल रहलें । बियाह भइला के बाद उनकर जिनगी के तरे बदलल रहे इ उनका से बेहतर भला अउर के जान सकत रहे । पहिले उनकर आपन खाये आ पीये के कवनो ठेकान ना रहे । इयार लोगन के संगत में जहां पड़ जाएं उहंवे दिन आ रात बीत जास । लक्ष्मीनिया जिनगी में जइसे बहार बनके आइल रहे । आज उ सुखचैन से रहत रहलें आ हाथ में दू गो पइसा भी बाचत रहे त आपन मेहरारू के ही चलते ।

धीरे-धीरे ललमुनिया बड़ होखे लगली । ओकरा में दूनो जना के प्रान बसत रहे । ओकर खुशी में ही दूनो के खुशी मिले । रामचनर कबो-कबो ओके आपन गोदी में उठा के कहे-"तू त हमार परी हउ । असली परी । उड़े वाली । जरा उड़ के देखावऽ त!"

ललमुनिया आपन दूनो बांह के फइला के ऊपर-नीचे हिला के उड़े के नाटक करे आ खिलखिला-खिलखिला के हंसे । उ हंसे त अइसन लागे जइसे चारू ओर से फूल झरत होखे । ओकर हंसत मुस्कारात चेहरा में संउसे संसार के खुशी लउके ।

ललमुनिया के कब सुते के बा कब उठे के बा, कब खाये के बा कब पीये के बा, कब इस्कूल जाये के बा कब खेले के बा, ओकर माई के चैबीसो घंटा एही में मन टंगाल रहत रहे । ऊ आपन जिनगी में जेतना दुख आ उपेक्षा देखले भोगले रहली ओकर छाया भी आपन बेटी पर पड़े देहे के ना चाहत रहली । ऊ त एक्को क्लास ना पढ़ले रहली । लइकई से मजूरिये करत जिनगी बीतल रहे । अपने मने कुछ टो-टा के पढ़े के कोशिश कइले रहली बाकिर पढ़े के श्रद्धा मने में दब के रह गइल रहे । बियाह भइला के बाद जब ऊ ई रमपुरवा गांव में बहुरिया बनके आइल त सयान लोग के पढ़े लिखे

मनोज कुमार

वाल्मिकी नगर , बिहार के रहे वाला मनोज कुमार जी , आखर से शुरु से ही जुड़ल बानी । पेशा से अध्यापक , कार्टुनिस्ट आ साहित्यकार मनोज कुमार जी भोजपुरी कार्टुन आ हिन्दी मे बाल साहित्य खाति जानल जानी । वर्तमान मे मनोज जी मोतिहारी बिहार मे रह रहल बानी ।

खातिर अक्षर आंचल क के एगो केन्द्र चलत रहे । रामचनर से कह के उ उहां जाये लगली । कुछ अक्षरज्ञान पवली आ किताब पढ़े लगली । आपन दस्तखत करे के भी सीख गइली ।

पड़ोस में एगो आशा दीदी रहली । उनका से मिल के ओके बहुत कुछ सीखे के मिले । आशा दीदी से जब ललमुनिया के माई परिवार नियोजन के बारे में पूछले रहली त उ हंस के कहली, "एक्के गो बेटी के बाद सोचत बाड़ू । एगो अउरी लइका हो जाये द ।"

"ना दीदी । लइका आ लइकी में कवन फरक होला!" लक्ष्मीनिया जवाब में कहले रहली, "हमार त लइकिये लइका के समान ह । ओही के नीमन से पढ़ावे-लिखावे के बा । परिवार जेतना छोट रही, तबे आगे बढ़ी ।"

रामचनर कबो-कबो ओकरा से कहे, "ए ललमुनिया के माई । हम तहरा साथे बानी । तहरा देख के केहू ना कह सकेला कि तू गांव के एगो अनपढ़ मेहरारू हउ । आज के जमाना के शहर के पढ़ल-लिखल औरतन के सोच से तूँ बहुते आगे बाड़ू । लोग त आज बेटा खाति बेटी के पेट में ही मुआ देत बाड़ें सन । लइकी के पूजे खातिर खोजिहें बाकिर अपना घरे जनम ना दिहें ।"

"इहे त सोच में खराबी बा ।" लक्ष्मीनिया कहत रहली, "हमनी के इहे सोच के बदले के जरूरत बा । सभे केहू एके लेखा सोची त दुनिया के तरे चली?"

ललमुनिया पर अच्छा खान-पान आ विशेष ध्यान देहे के नतीजा धीरे-धीरे लउके लागल रहे । उ तनिका मोटा भी गइल रहली । रामचनर कबो-कबो ओकरा माई के टोक देबे, "एकरा के अब तनी कम खियाब ।"

"चुप रहीं जी ।" उ डांट के कहत रहली, "हमार लइकी के नजर ना लगाईं । ना त दुबरा जाई । वइसे भी लइकन पर महतारीये बाप के नजर पहिले लागेला ।"

ललमुनिया के चांद जइसन मुंह अइसन ताजा चमके जइसे नया खिलल लाल गुलाब के फूल । माई जब ओके लाल पियर फराक पहिना के बाल के दू गो गोल चोटी गूंथ दे उ कवनो रेडिमेड गुड़िया से कम ना लागे । जब उ आपन छोट कमर मटका के चले त महतारी बाप दूनो देख के जइसे निहाल हो जात रहलें । पढ़ाई लिखाई में भी ओके खूबे मन लागे । माई जब असमानी बुलु इस्कूल ड्रेस पहिना के तइयार क दे बस्ता ले के धउरत भागत पढ़े खाति इस्कूल चल जाये ।

पहिला आ दूसरा क्लास के परीक्षा में ललमुनिया फस्ट कइले रहे । इस्कूल में सब मास्टर लोग भी ओसे खुश रहलें । उ एक्को दिन इस्कूल नागा ना करत रहली । ओकर माई रोज ओके समय से पहिले तइयार कर देत रहली आ उ समय प इस्कूल चंहुप जात रहली ।

इस्कूल में प्रार्थना से पहिले सफाई होत रहे । मास्टर साहेब एक दिन प्रार्थना के बेरा स्वच्छता अभियान के बारे में बतवलें आ कहलें कि आज हमनी सब जना मिलके इस्कूल परिसर के सफाई कइल जाई । ओह दिने सभे लइका लइकी आ मास्टर कुल्ही मिल के पूरा इस्कूल के सफाई कइलें ।

इ बात ललमुनिया अपना घरे आके माई के बतवली । ओकर माई कहली कि सफाई एगो बहुत बड़ा गुण ह । जहां सफाई होला उहां बीमारी कबो ना फइलेला । हमनी के आपन घर-दुआर, मुहल्ला, इस्कूल सब के साफ-सुथरा राखें के चाहीं । अपना देश के प्रधानमंत्री भी ई बात के कहेलन आ खुदे झाड़ू ले के सफाई भी करेलें ।

ललमुनिया पूछले रहली, "माई, प्रधानमंत्री माने का होला?"

माई समझवली, "ऊ आपन देश के राजा होलें । सबसे बड़ आदमी । जब ऊ एतना बड़ होके झाड़ू से सफाई कर सकेलें त हमनियों के करे के चाहीं । एमे लाज शरम के कवनो बात नइखे ।"

एकरा बाद त ललमुनिया रोज सबसे पहिले इस्कूल चंहुप जाय आ खजूर के झाड़ू ले के आपन क्लास आ बारामदा सब नीमन से बुहार दे ।

एक दिन क्लास चलत रहे ।

मास्टर साहेब बतवनी कि अगिला तीन तारीख के एगो खास दिन हवे । ओह दिने इस्कूल में देश के पहिलका राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी के जयन्ती मनावल जाई । सांस्कृतिक कार्यक्रम होखी । भाषण प्रतियोगिता होई । जे जीती ओके ईनाम भी मिली ।

ललमुनिया क्लास में सबसे आगे भुंइया पर बोरा बीछा के बइठल रहली । उ ध्यान से मास्टर साहेब के बात सुनत रहली ।

"जे भाषण प्रतियोगिता में भाग ली, ऊ आपन नावं पहिले लिखा दी । ओके तइयारी करे के पड़ी ।" मास्टर साहेब कहत रहलें, "डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के जनम बिहार के सीवान जिला के जीरादेई नामक एगो गांव में भइल रहे । उ पढ़े-लिखे में बहुत तेज रहलें । आपन क्लास में हमेशा फस्ट आवें....."

मास्टर साहेब सांस लेहे खातिर तनिका देर चुप भइलें । ललमुनिया कह उठली, "जइसे हम फस्ट आयेनी, ओहिंगा...?"

मास्टर साहेब हंस पड़लें । एगो छोटहन लइकी के बालसुलभ जिज्ञासा पर उ मुस्करा के कहलें, "बिलकुल । लालमुनी, एकदम तोहरे लेखा । तूहूं खूब मन लगा के पढ़बू त खूब आगे बढ़ सकेलू । जइसे राजेन्द्र प्रसाद देश के राष्ट्रपति बनलें ।"

"राष्ट्रपति का होला सरजी?" ललमुनिया के अगिला सवाल रहे ।

"राष्ट्रपति देश के सबसे बड़ पद हवे । जे खूब पढ़ेला-लिखेला उहे अइसन पद पर चंहुप पावेला ।"

"हम खूब पढ़ेब लिखेब तऽ .... हमहूं उहां तक चहंुप सकिले?" ललमुनिया अचरच से पूछली ।

"काहे ना.... ।" मास्टर साहेब मुस्करा के कहनी, "हमार मुनिया सोच ली त कुछऊ बन सकेली । चांद सुरूज पर भी चंहुप सकेली । ओकरा ला कुछो मुश्किल नइखे ।"

www.bhojpurisahityangan.com

ओह दिने छुट्टी भइला पर ललमुनिया खुशी से चहकत आ उछलत-कूदत घरे अइली ।

"माई-माई ।" घरे आ के उ माई से कहली, "आजु सरजी हमरा से कहलें ह कि हम खूब पढ़ेम लिखेम त चांद सुरूज पर चंहुप सकिले... ।"

"अच्छा...." माई कहली, "ठीके त कहलें ह । हमार रानी बेटी नीमन से पढ़ी लिखी त जरूर एक दिन चांद सुरूज पर चंहुप जाई ।"

"अच्छा माई, तू त हमके बतावत रहलू ह कि प्रधानमंत्री सबसे बड़ होखेलें । बाकिर हमनी के सरजी त आज बतवले हं कि राष्ट्रपति सबसे बड़ पद होला ।" ललमुनिया कहली, "आ राजेन्दर परसाद खूब पढ़ लिख के सबसे पहिले राष्ट्रपति बन गइल रहलें । क्लास में हमेशा फस्ट क क के ।"

ओकर माई हंसे लगली, "अरे बेटी । तहार माई त ओतना पढ़ल-लिखल नइखी नू । हम त अतने जानीले कि ओही में एगो चांद ह आ दूसर सूरज । उहां चंहुपल असान काम नइखे । जेकर किस्मत खूब तेज होला उहे उहां तक चहंुप सकेला ।"

"काहे ? हमके त सरजी कहनी ह कि हम कुछऊ बन सकीलें ।"

ललमुनिया के माई ओकर बात के कुछ जवाब देती ओही बखत रामचनर घर में प्रवेश कइलें, "का बात होता माई आ बेटी में ?"

"बाबूजी, पहिले इ बताई कि हमरा खाति काथी लइनी हऽ ?" ललमुनिया ठुनक के पूछली । ओके पता रहे कि बाबूजी जब भी घर आवेलें ओकरा खाति दोकानी पर से चकलेट भा बिस्कुट कुछो ना कुछो जरूर लेके आयेनी ।

"हई ला तहार इनाम ।" रामचनर आपन कुर्ता के पाकिट में से एगो चकलेट निकललें ।

"हम कई हाली कहनीं ह कि लइका के चकलेट लेमनचूस के हिसका ना धराईं । बाकिर रउआ ना मानेनी ।" ललमुनिया के माई कहली, "खिआये के बा त कुछो नीमन चीज ले आईं । गरी, छोहारा चाहे काजू, किशमिश होखे जेके खइला से देहीं में कुछ हक लागो ।"

"ऊ सब त हम लाके देलेही बानी । तूहूँ खा आ लइकी के भी खिआव ।" रामचनर कहलें आ आखिर में ठिठक के जोड़लें, "तनिका मनिका बच जाव तो हेनहूं कबो कभार पूछ लिहल कर!"

"बाबूजी, पता बा..." ललमुनिया कहली, "हमनी के इस्कूल में तीन दिसम्बर के एगो पिरोगराम होखे वाला बा । आजुए सरजी कहत रहनी ह ।"

"कइसन पिरोगराम बिटवा?" रामचनर पूछलें ।

"ओह दिने देश के पहिलका राष्ट्रपति राजेन्दर परसाद के जयन्ती मनावल जाई आ भाषण प्रतियोगिता भी होई ।" ललमुनिया बतवली, "ओह दिने हमहू भाषण देहब ।"

"ई त बड़ा खुशी के बात बा ।" रामचनर कहलें, "हम तहार भाषण खूब नीमन से तइयार करवा देब ।"

"रउआ राजेन्दर परसाद के बारे में जानेनी का ? ऊ पढ़े में बड़ा तेज रहलें । हमरे लेखा क्लास में फस्ट आवत रहलें । हरमेशा... ।" ललमुनिया कहली ।

"अच्छा । ई के बतवलस हऽ ?"

"सरजी बतवनी ह ।"

"ठीक बा । हमहूं कुछ बताएब । तनी मनी हमहूं कुछ जानीलें उनकरा बारे में ।"

"त बताईं ना बाबूजी ।"

"अइसे ना ।"

"त फेर कइसे ?"

"पहिले आपन गाल हेने लाव ।"

"हई लीं ।"

ललमुनिया पहिले दायां आ फेनु बायां गाल आगे क देहली । हमेशा के तरे रामचनर बेटी के खट्टा आ मीठा चूमा ले के आपन दुलार जतवलें ।

"अब त बताईं बाबूजी ।" ललमुनिया ठुनक के कहली ।

"पहिले अपना बाबूजी से ई त पूछ ल कि उ हर साल तीन दिसम्बर के कंहवा जायेलें?" ललमुनिया के माई कहली ।

"रउआ कंहवा जायेनी बाबूजी?" बेटी पूछलस ।

"जवन काम तहार इस्कूल में इ बेर होखे वाला बा उहे कार करे हम उहंवा हर साल जायेनी बेटी ।"

"रउओ राजेन्दर परसाद के जयन्ती मनावेनी का? रउओ भाषण देहेनी का?" ललमुनिया आश्चर्य से पूछली ।

"तब तू बहुत छोट रहलू बिटिया ।" रामचनर कहलें, "भोजपुरी माई के सेवा में जूटल तहार कुछ चाचा लोग बाड़ें जे पिछला पांच साल से इ जयंती के अवसर प राजेन्दर बाबू के जनमभूमि सीवान में एगो भोजपुरिया स्वाभिमान जगावें के यज्ञ करेलें । राजेन्दर बाबू त आपन देश आ इ माटी के सपूत रहलें । उ एगो सच्चा भोजपुरिया सिपाही रहलें । जीवन भर आपन देश आ भोजपुरी माई के सेवा में बिना कवनो स्वारथ के लागल रहलें । एही से
उ देश के रतन कहलवलें । राष्ट्रपति जइसन सबसे बड़ पद पर चहंुपले बाकिर कबो घमंड ना कइलें । सीदा सादा जिनगी आ सभका से प्रेम व्यवहार ही उनकर असली पहिचान रहे । उनकर जीवन हमनिये सब ना बल्कि लाखों-करोड़ों लोगन खातिर प्रेरणा के स्रोत बा । जबले सुरज-चांद रही, तबले राजेन्दर बाबू के नाम अमर रही ।" एतना कहके उ नारा लगवलें, "बोल राजेन्दर बाबू के जय! भोजपुरी माई के जय!"

"बाबूजी," ललमुनिया जयकारा अपना साथ देके कहली, "रउआ हर बेर अकेले-अकेले काहे जयन्ती मनावे चल जायेनी? हमनी के साथे लेके काहे ना कबो चलेनी?"

"ई बार तू आपन इस्कूल में जयन्ती मनाव । भाषण प्रतियोगिता में भाग ल आ इनाम जीतऽ । अगिला बेर तहरो के हम ले जाएब । तू देखबू कि उहंवा तहरा लेखा ढेरे परी लोग जूटेली आ प्रभातफेरी में

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी माई के आन बान आ शान खातिर गीत गावेली आ नारा लगावेली।"

ओकर माई कहली, "ए ललमुनिया, तनी अपना बाबूजी से इहो कह द कि अगिरा बेर खाली तहरे के ना बलुक हमरो के ले के साथे उहवां चले। ना त आगे से फेनु उहंवा कबो जाये के परमीसन ना मिली।"

तीन दिसम्बर के ललमुनिया के इस्कूल में राजेन्द्र प्रसाद जी के जयंती समारोह मनावल गइल। ललमुनिया के दिहल भाषण सुन के अतिथि लोग भी चकित रह गइलें। उ आपन भाषण के शुरूआत करे से पहिले मंच के छू के हाथ जोड़ के प्रणाम कइली। एक तरफ राजेन्दर बाबू के फ्रेम कइल तस्वीर पर फूल के माला पहिनावल गइल रहे आ उहंवा अगरबत्ती जरत रहे। दूसर तरफ मास्टर साहेब लोग, आमंत्रित अतिथि आ कुछ अभिभावक लोग बइठल रहलें। सामने मैदान में इस्कूल के लइकन कुल्ही लाइन से बइठल रहलें। अच्छा खासा भीड़ के जुटान भइल रहे।

"भोजपुरी माई के जय।" ललमुनिया मंच पर से कहली, "हम सभे केहू के परनाम करत बानी। कुछो गलती होई त माफ कर देहब।" ओकरा बाद सभे केहू देखलस कि के तरे एगो छोटी चुकी लइकी पूरा स्वाभिमान के साथ के तरे निर्भय होके आपन बात कहे लगली। ओके आपन बाबूजी के कहल सब बात याद आवे लागल जे काले सीवान चल गइल रहलें। ऊ बिना रूके कहे लगली, "लोग त आज के जमाना में पढ़लिख के बउरा जालें। आपन माटी के, आपन संस्कार के, आपन भासा के भी भूला जालें। केहू के सीखे के होखे त राजेन्दर परसाद के जीवन से सीख लें जे पढ़लिख के विद्वान भइलें, देश के राष्ट्रपति बन गइलें बाकिर आपन माटी के, आपन संस्कार के, आपन भासा के कबो ना भुलवलें। भोजपुरिया माटी में जनम लेहे वाला ऊ सच्चा सिपाही रहलें जें केहू से भोजपुरी बोले बतिआवे में कबो ना लजात रहलें। एह से ई सीखे के चाहीं कि आपन भासा बोले में केहू के लाज ना लागे के चाहीं। एह से त परेम करे के चाहीं। राजेन्दर बाबू के जय! भोजपुरी माई के जय!"

केहू सोचले ना रहे कि गांव में पढ़े वाली तीसरा क्लास के एगो आठ साल के छोट लइकी राजेन्दर बाबू के जीवन आ साथे साथ भोजपुरी के दशा पर अइसनो भाषण दे सकेली। इस्कूल के अउर भी ऊपर के क्लास के कई गो विद्यार्थी लोग भाषण दिहलें बाकिर पहिलका इनाम ललमुनिया के मिलल। हेडमास्टर साहेब ओके इनाम के रूप में मेडल देहे के घड़ी कहलें कि केहू के प्रतिभा के अंदाजा ओकर उमिर देख के ना लगावल जा सकेला। आज ई गांव में, ई इस्कूल में एगो अइसने प्रतिभा के उगत देख रहल बानी जे आगे चल के समाज के आपन रोशनी से अंजोर करी, अइसन हमके पूरा विश्वास बा।

बहुरिया

सुमन सिंह

ए अम्मा जी उर्दी छुआए जात ह गांई जा लोग। " लइका क माई अम्मा लोगन के होस धरवलीं कि उ लोग काहें खातिर बोलावल गईल हई जा। अम्मा लोग कढ़वलीं -

' जौं मैं जनतीं गनेस बाबा अइहन,
लीपि डरतीं अंगना दुआर
चनन छिड़कतीं ओही देव घरवा
चनन क सुन्नर सुबास
जौं मैं जनतीं सीतला मइया अइहन
लीपि डरतीं अँगना दुआर। '

गीत कढ़ावे वाली बड़की आजी ढ़ेर बूढ़ा गइल रहलीं। चारे-पाँच लाइन गावे में हफरी छोड़े लगलीं। एक जानी क सांस फूले लागल अउर दम्मा के मरीज नियन खांसे लगलीं।

"अरे काहें जान देले हई ए जीजी। तनी सुस्ता लेहीं। केहू पनियों के त नइखे पूछत। " फ़ौजदार बो भऊजाई से चिकारी कइलीं।

"तू त एक ले आग लगउनी हई रे । अबहियें इँहा से जइबी अउर मनोजवा के माई के पट्टी पढ़ा अइबी कि ओकरे लइका के बिआह में केहू गनवो ना गावे वाला ह। अउरी... । " एतने में जीजी क दम्मा उखड़ गईल ऊ पसली धई-धई खांसे लगलीं। फ़ौजदार बो उनके सरापे लगलीं-

" जे हम के देख के जरी ओके भगवान देखिहन। अबहीं त सबके दम्मा उखड़ल ह। अबहीं देखा का होला। " फ़ौजदार बो हाथ नचावत जीजी के सरापत रहलीं कि लइका क माई चिचियाये लगलीं-

"का जी रउवा सभे बुढ़ौतियो में लइकन नियन लड़ब जा। बिआह -सादी क घर में अब हमके झगरो फरिआवे के पड़ी,आंय?"

लइका के माई ओरी ले फटकार खा के बूढ़ा लोग फिर होस धइलीं जा कि ऊ लोग काहें के बोलावल गईल हई जा। बिआह ले दू दिन पहिले ऊ लोगन के जीप में ठूंस के गाँव से मंगावल गईल रहे । लइका के माई सहर में जा के बस गईल रहलीं बाकिर चाहत रहलीं कि बिधि-बिधान से बिआह होखे। पहिली बार उनके घर में बिआह होत रहे। घर में बड़-बूढ़ ना रहिहन त के बताई कि का कइसे होई एहि से कुल दयादी-पटिदारी क बूढ़ -पुरनिया बटोर लेवल गईल रहलीं जा।

फ़ौजदार बो तनी हाथ-पैर से पोढ़ रहलीं एहि से बूढ़ा लोगन के सम्हारे खातिर बोला लेवल गईल रहलीं बाकिर उनके अउर लइका क माई में छतीस क आँकड़ा रहल। बूढ़ा लोग के गोड़धरिया कइके बोलावल गईल रहे बाकिर जब कवनो काम पड़े तबे इ लोग पूछल जायँ नाही त बरात -घर के एगो कोठरी में बसात ओढ़ना-बिछउना में दुबकल रहें लोग।

"ए बचिया तनी पानी लिया देतू हो। पीआसन परान जात ह। " एगो लइकी से बूढ़ा निहोरा कइलीं।

"बरात जाने वाली है हमें तैयार होना है,किसी और से मंगा लीजिये। " कहके लइकिया बहरे भाग गईल। बूढ़ा छटपटात रह गइलीं।

"कहत रहलीं न कि हमहन के ,के पूछी। लेकिन रउआ ना मनलीं बाकिर बिआह देखे क साध बुढ़ौतियो ले राउर ना बुतायल। " थर्मोकोल क गिलास में पानी थमावत फ़ौजदार बो फिरो जीजी से अझुराये लगलीं।

"इ पलासटिक के गिलास में हम पानी ना पियब। " बूढ़ा पानी क गिलास थाम लेहलीं बाकिर पानी पिए में हिचकिचाये लगलीं।

"पी लिहिं हेतना भीड़-भाड़ में कंहवा से ईस्टील क गिलास आई ?"बूढ़ा केहुतरे पानी से परान जुड़वलीं।

"ए फ़ौजदार बो तनी कुछ खाये के ले अवतू हो बड़ा भूख लागल ह। " बूढ़ा कई दिन क भूखायल कवनो नान्ह लईका नियन छछनत रहलीं।

"ए जीजी रउओ न अइसन बात बोलिला की पूछे के नइखे। इँहा कवनो हमरे हाथ में ह। चारो ओर घूम भइलीं। दू गो लडुओ नइखे भेटात कि ले आयीं। " फ़ौजदार बो खुदे भुखायल रहलीं। होटल क कुल्ही कमरा में ताक-झाँक अईली। सब अपने -अपने में बाझल रहे। केहू तैयार होत रहे,केहू दूसरे के तैयार करत रहे। लड़िका क माई अउर बहिन तैयार होखे ब्यूटीपार्लर गईल रहलीं

सुमन सिंह

बनारस , उत्तरप्रदेश के रहे वाली सुमन सिंह जी , बनारस मे ही लेक्चरर के पोस्ट प कार्यरत बानी । आखर से जुड़ल सुमन सिंह जी हिन्दी मे कई गो पत्र पत्रिका खाति लिख चुकल बानी , लिख रहल बानी। वर्तमान मे बनारस मे रह रहल बानी।

जा। केहू-केहू के ओ घरी चिन्हत ना रहे सब अपने सजे-सँवरे में लागल रहे।

बरात क जायेके बेर हो गईल रहे। लइका क माई खोजात रहलीं। पता चलल कि ऊ तैयार होये गयल हईं। लइका क पापा, चच्चा जब खुनुसन सुनगे लगलन जा तब जाके ऊ धउरल अइलीं। बूढ़ा लोग बोलावल गइलीं। हाली-हाली नहछू नहावन भयल। बूढ़ा लोग गवलीं जा-

" के आइ पोखरा खनावेला घाट बन्हावेला
केकर भरेला कंहार त राम जी नहावन। '
इमली घोटावल गईल त बूढ़ा लोग कढ़वलीं जा-
" भइया जे बइठे पलंग चढ़ बहिनी चउक पर
भइया खोलि देता दाम क पोटरीया औ इमली घोटावा। "

मऊर बान्हत क, परिछन के बेरी बूढ़ा लोग खूबे राग बन्हलीं जा बाकिर जब बरिआत जाये लागल त केहू इन्हन लोग के पुछबे ना करे। लइका क माई लइका के संगे गाड़ी में बइठ के चल दिहली। फ़ौजदार बो गोहरवते रह गईली बाकिर केहू सुनलस ना। सब नाचत -गावत बैंड बाजा के पाछे -पाछे चल गयल। बूढ़ा लोग पाछे फेफियात रह गइलीं। केहुतरे फ़ौजदार बो सबके टेकावत वापिस होटल चहुँपली। घंटा भर बाद फ़ौजदार बो लइका के माई क फोन आयल।

" मनोजवा क माई क फोन रहल ह, कहत रहलीं ह कि नकटा क कुल समान रख गईल हईं। होटल वालन के सात पलेट पूड़ी-तरकारी के कह देले हईं। जब ले हमहन के खाएब जा तबले ऊ आ जइहैं। लुक्का लागो अइसन कुल बिआह -सादी में । ई कवनों बात ह जी, कि माई -चाची बरिआत क मजा लुटें अउर दयाद -पटीदार नकटा खेल्ले आंय। " फ़ौजदार बो कहत जायँ अउर मुस्किआय के भउजी ओर ताकत जायँ। भउजी भूख अउर खाँसी से बेहाल रहलीं अब ऊ फ़ौजदार बो के बउराह जस टुकुर -टुकुर ताके लगलीं। लगे कि उनके कुछ बुझाते -चिन्हात ना ह।

" का ए जीजी बड़ा सउख से चलल रहलीं ह जा रउआ लोग बिआह देखे बाकिर बउरहिया बनाके चल गइलीं न मनोज क माई ?

" फ़ौजदार बो क बोली टीबोली सुनत बूढ़ा लोग केवाड़ी ओर कान रोपले रहलीं जा , कि कब केहू खाना क पलेट लिहले आई आ कि खाये बदे बोलाई।

पीयूष द्विवेदी

भोजपुरी सिनेमा : रचनात्मकता के अकाल

1961 के दौर रहे जब भारत के पहिला राष्ट्रपति और भोजपुरिया माटी के लाल बाबू राजेन्द्र प्रसाद फिलिम निर्माता बिश्वनाथ प्रसाद शाहबादी से पटना में मिललें आ मन जतवलें कि एगो भोजपुरी फिलिम बनावल जाव। राजेन्द्र बाबू के ई बात शाहबादी के गहरे जमल। फेर का रहे! ऊ एह दिशा में काम शुरू क दिहलें आ एह तरे सन 1963 में बिश्वनाथ प्रसाद शाहबादी निर्मित आ कुंदन कुमार निर्देशित पहिला भोजपुरी फिलिम 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़ाइब' आईल। फिलिम खूब चलल आ एकर शीर्षक गीत, जवनेके लता मंगेशकर आ ऊषा मंगेशकर दुनु बहिन आवाज देले रहे लो, त आज ले भोजपुरिया लोग के जबान प थिरकेला। मोहम्मद रफ़ी भी एहमे कई ठो गीत गवले। ए फिलिम की साथे भोजपुरी सिनेमा के युग के शुरुआत भईल। एकरे बाद सन तिरसठे में भोजपुरी के भारतेंदु हरिश्चंद्र महान भोजपुरिया साहित्यकार भिखारी ठाकुर जी के एगो अमर रचना 'बिदेसिया' पर आधारित फिलिम 'बिदेसिया' आईल । ई फिलिम भोजपुरी सिनेमा खाति मील के पत्थर साबित भईल। मने एकरी तर्ज़ प आगे चलिके कई गो भोजपुरी फिलिम बनली सं आ आजो बनत रहेली सं। एकरा बाद त गंगा किनारे मोरा गाँव, नदिया के पार, दंगल जईसन एक से बढिके एक भोजपुरी फिलिम अईली सन आ भोजपुरी सिनेमा अपना अथक विकासयात्रा पर निकल पड़ल। एह तरे धीरे-धीरे भोजपुरी सिनेमा के आपन एगो पहचान कायम होत गईल। एह सब बातिन से ई त साफ़ बा कि भोजपुरी सिनेमा के अतीत बहुते चमकत-दमकत रहल बा। अब सवाल ई बा कि एह स्वर्णिम अतीत के समय के साथ केतना बचावल-बढ़ावल आ कि गंवावल गईल बा ? एह सवाल के जबाब जाने ला अगर भोजपुरी सिनेमा के मौजूदा हालि पर नज़र डालल जाव त साफ़ हो जाता कि आज आधा सदी से ऊपर के हो चुकल भोजपुरी सिनेमा आखिर के दस-पनरह बरिस में अपना स्वर्णिम अतीत के बचवले-बढ़वले कम, गववले बहुत ढेर बा।

अगर केहू गंभीर भोजपुरिया आदमी से ई कहल जाव कि भोजपुरी में आखिर के दस-पनरह बरिस में आईल फिलिमन में से दस गो यादगार फिलिमन के नाव बता द त हमार दावा बा कि ऊ आदमी मुश्किल से एकाध गो नाव बता पाई त बता पाई, आ नाही त ढेर संभावना बा कि साफ़-साफ़ मूड़ी हिला दी। बाति के भाव ई बा कि आखिर के एक-डेढ़ दशक में भोजपुरी में ढंग के मने कि जवनेके

पीयूष द्विवेदी

देवरिया युपी के रहे वाला पीयुष द्विवेदी भारतीय जी, स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र मे बानी , कई गो अखबार पत्र पत्रिका मे इँहा के लेख छप चुकल बा। भोजपुरी मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी। एह समय इँहा के नोयडा मे बानी।

याद रखल जा सके, अईसन गिनल-चुनल फिलिम आईल बाड़ी सन। कुल मिलाके मतलब ई कि एह दौरान भोजपुरी सिनेमा जेतना अर्जित कईले बा ओहकर कई गुना गंववले बा। बतावत चलीं कि एहिजा हिट-सुपरहिट से तात्पर्य नईखे; काहें कि हिट त मस्तराम के फिलिम भी खूब होली सन बाकिर का ऊ कुल के याद रखल जा सकेला ? एहिजा ई समझेके जरूरत बा कि हिट भईल आ यादगार भईल दुनु अलग चीज ह। एगो उदाहरण दे तानी कि महान साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु के कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित राज कपूर के 'तीसरी कसम' फिलिम व्यावसायिक रूप से बहुत सफल ना रहल बाकिर बाद में एह फिलिम के महत्व समझल गईल आ ना खाली एके तमाम राष्ट्रीय पुरस्कार मिलल सन, बल्कि आज भी हिंदी सिनेमा में बेजोड़ अभिनय, गीत-संगीत आ निर्देशन खाति ई फिलिम के मिसाल दिहल जाला। आ दूसरा तरफ हिंदी के ही अईसन अनगिनत फिलिम बाड़ी सन जवन रेकॉर्ड तोड़ कमाई क के सफल भईली सन बाकिर आज ओहकुल के केहू नामलेवा नईखे। त कहलेके माने ई बा कि ई जरूरी नईखे कि जवान फिलिम हिट होखो ऊ यादगार होई आ जवन बे-हिट रहो ऊ कबाड़ा।

ऊपर की बातिन के मूल भाव ई बा कि कवनो भी फिलिम यादगार तबे बनेले जब ओहकर कहानी, अभिनय, निर्देशन, संवाद, गीत-संगीत, आदि में कुछ ख़ास होला। ई सब चीजन के एक शब्द में 'रचनात्मकता' कहल जा सकेला। देखल जाव त भोजपुरी सिनेमा में आज एही रचनात्मकता के घोर अकाल छवले बा। कहानी, अभिनय, निर्देशन आदि कवनो भी स्तर पर रचनात्मकता के अता-पता नईखे। हालि ई बा कि फिलिम के नाव ले ढंग के नईखे लो रखि पावत भोजपुरी सिनेमा के वर्तमान कर्णधार लो! कुछ नाव देखल जाव – साजन की बाहों में, मेहरारू बिना रतिया कईसे कटी, बा केहू माई के लाल, साली बड़ी सतावेली, जब केहू दिल में समा जाला, एक लैला तीन छैला, आदि – आज के भोजपुरी सिनेमा में अधिकांश फिलिमन के नाव एही कुल तरे रहताड़ सन। कवनो फिलिम के नाव कुछु रहो अगर ऊ कहानी के मूल भाव देखावता त ठीक बा; बाकिर जे आप ई फिलिम सब देखीं त एह नावन के आ फिलिम की कहानी के दूर-दूर ले कवनो सम्बन्ध ना बुझा सकेला जईसे कि बस एहिंगा नाव ध दिहल होखो। कहानी के बाति करीं त ओह मामला में अऊर दुरगति बा। भोजपुरी में आज अधिकांश फिलिम या त पुराने पारिवारिक ड्रामा आ फिजूल के एक्शन-इमोशन वाला थीम पर बनताड़ी सन आ नाही त हिंदी सिनेमा से उठाके रीमेक बना लिहल जाता। मने हिंदी सिनेमा जवन कहानी दस-पनरह बरिस पहिले बनाके छोड़ देले बा ओहीके भौंडा नक़ल क के भोजपुरी फिलिम बना लिहल जा ताड़ी सन। आपन कुछ नया रचिके बनावेके काम एह घरी भोजपुरी सिनेमा में नाही के बराबर ही होता। ओहपर कहानी नया-पुरान कवनो आ कईसनो होखो, भोजपुरी के अधिकांश वर्तमान सुपरस्टार अभिनेता-अभिनेत्री लो के अभिनय ओहकर गोबर-गणेश करे में कवनो कसर नईखे छोड़त। अभिनय अईसन बा कि संवाद आ भाव-भंगिमा में दूर-दूर ले सामंजस्य ना लऊक सकेला। कहीं जरूरत से ज्यादा दुख देखा दी लो त कहीं बेबात के खीस। कहीं अभिनेता के निराशा के भाव देखावेके बा त ऊ अईसन मुह बनाके खड़ा हो जईहन कि लागी कि निराश ना बेमार बाड़ें। एही तरे अभिनेत्री के अगर विरह के भाव देखावेके बा त ऊ अईसे देहिं अईठें लगिहन कि बुझाई कि विरही ना पेट मरोड़ के मरीज बाड़ी। अभिनय में कमी भईले खातिर कई गो कारण बाड़ सन जेमे एगो बड़ कारण ई बा कि भोजपुरी में मूल रूप से अभिनेता तैयारे नईखे लो होत। जवन गायक हिट भईले ऊ तुरंते अभिनेता बन जा ताड़े। मनोज तिवारी के सफल भईला के बाद से ई कु-परंपरा चल पड़ल बा भोजपुरी सिनेमा में। मनोज तिवारी भी बतौर अभिनेता सफल भले होखस बाकिर अभिनय में उनहुके हाल ठन-ठन गोपाले बा। बावजूद एह सबके अभिनेता-अभिनेत्री लो से ढेर दोष निर्देशक के बा। अगर बढ़िया आ मेहनती निर्देशक होखो त ऊ खराब से खराब कलाकार से भी अपना जरूरत के हिसाब से काम करवा ली। बाकिर भोजपुरी के निर्देशक लो में शायद ई गुण नईखे। बल्कि ई कहल जाव त गलत ना होई कि ई निर्देशक लो अभिनय अऊर खराबे करवाव देत होई लो। एह बात के प्रमाण चाहीं त भोजपुरी के सुपरस्टार रवि किशन के कवनो हिंदी फिलिम में कईल अभिनय आ भोजपुरी फिलिम के अभिनय देख के तुलना क लीं। हमार दावा बा कि दुनु फिलिमन के अभिनय में ज़मीन-आसमान के अंतर लऊकी; अभिनेता एके बा बाकिर अभिनय में अंतर लऊकी त उ निर्देशन की वजह से। रहल गीत-संगीत त आज के भोजपुरी फिलिमन के अधिकांश गीतन में से ऊ मिठास, ऊ माटी के महक आ अपनापन गायब बा। लागेला कि बस जबरन तुक मिला दिहल बा। हालांकि एह सब की बीच एगो चीज बा जवने में भोजपुरी सिनेमा पुरजोर तरक्की भी कईले बा आ लगातार क रहल बा ऊ चीज बा अश्लीलता। फिलिम के शीर्षक से लेके दृश्य तक आ संवाद से लेके गीत तक भोजपुरी सिनेमा में अश्लीलता के झंडा बुलंद बा। दृश्य अश्लीलता में भले तनि पीछे होखो, बाकिर संवाद अश्लीलता की मामला में त भोजपुरी सिनेमा, हिंदी आ दक्षिण भारतीय सिनेमा सब के पीछे छोड़ देले बा। का हालि बा ओहके एही से समझल जा सकेला कि 'हाथ में ले ना त मुहे में डाल देब' जईसन गीति लिखा ताड़ी सन। कुल मिलाके भोजपुरी सिनेमा के ई वर्तमान स्वरुप केहू भी संवेदनशील भोजपुरिया के निराश आ दुखी करे खाति काफी बा। अगर समय रहते भोजपुरी सिनेमा एह सब से पार ना पवलस त ऊ दिन दूर नईखे जब भोजपुरी सिनेमा के भी मस्तराम सिनेमा नीयन पहचान बन जाई जवन हिट त खूब होई, बाकिर सम्मानित आ यादगार ना रह जाई।

भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मलेन -6

अतुल कुमार राय

काल्ह सांझे से पिंकिया के माई धान पीट तीया कि काम धाम हो जाई त प्रोग्राम देखे में कवनो दिक्कत ना होइ। लगिए खेदन बो साड़ी परेस करतारी हो दादा, मंटुआ के माई आपन झुमका बकसा में से निकास ले ले बिया। काल्ह पहिन के सभका के देखा के मानब बड़ा पिंटूआ के माई झुमका वाला बनतीया न।

रमेसर काका आ बलदेव बाबा भी धोती गमछी फिंच फाँच के तइयार बालो। ममतवा आ बबीतवा के प्रभात फेरी में जाए के बा , एह से सुबेरे सेकराहे उठे के चिंता में सूत गइल बाड़ी स। आ, पिंकुआ त अपना माई से जिद्द क देले बा की "हमहू झण्डा लेके जाइब आखर वाला रे माई ना त रोवे लागब। हमहू नवा कपड़ा पहिनब। बबलुआ अपना बाबू से 10 रुपिया मंगले बा 'ए बाबूजी ओइज़ा जिलेबी के दोकान भी आइल बा हो.आ पकौड़ियों मिलता। ' बाबूजी ओकर डांट रहल बाड़े " जातारे प्रभात फेरी में कि मेला में रे ?" मने गाँव भर के सभे तइयार बा। एगो अलग उमंग में रंगाइल। रउरा पूछब काहें भाई ? कहाँ जाए के बा ? कवनो मेला नइखे लागल नाहीं कवनो त्यौहार आइल बा ! फेर काहें गाँव जवार के एक एक आदमी अतना उत्साहित बा ? देखि ना ! एह उत्साह में मेला भी बा आ त्यौहार भी। फगुवा भी आ दीपावली भी।

आज सिवान के पंजवार गांव के आपन एगो अलग पर्व ह एगो अलग त्यौहार ह जेकर नाव ह भोजपुरिया स्वाभिमान सम्मेलन। गाँव के एक एक आदमी आखर के एह प्रयास से दिल से जुड़ल बा। इ छठवां साल ह एह आंदोलन के, जेमे गाँव के एक एक आदमी एक श्रोता एकर आयोजक होला ना केहू बड़ ना केहू छोट , ना केहू वीआईपी बा ना केहू जनरल। तबे त एह त्यौहार में देश से नाहीं विदेस भी आदमी चलल चल आवत बा।

हेने गुरु जी आदरणीय घनश्याम शुकुल जी पिरयनसुआ से कहतानी के हई भइया लो- 'जे जे आइल बा इहाँ सब के चाय पानी जल्दी-जल्दी पियाव त मोबाइल में टीप-टाप करीहे ।होने देखा ह नबीन भइया दुबई से आ गइनी। बड़ा थाकल बुझात बानी ए भाई ! शक्तिनगर से बिरिज चाचा , रांची से निराला भइया, बोकारो से चन्दन बहिन आ रेखा चाची, नाशिक से प्रभाष भइया, बरधा से देवेन्द्र भइया, अबूधाबी से अनिमेष भइया आ बम्बई से अमित भइया आइल बाड़े। भाई ! राजीब भइया आ अजित भइया दिल्ली से आ गइल बा लो। संगवा में राजू महराज जी आ डाक्टर सरवन पूरी, यशवन्त चाचा, देवरिया से अजित भइया, गाजीपुर से अभिषेक बाबू, बलिया से असित मिसिर आनंद बाबा, अभिनंदन बाबू आ हई जिला हिलावन गायक शलेन्दर मिसिर भी बाड़े। गोपालगंज से सिरमुख बाबा आ सुधीर भइया, कवन कहत रहल ह कि बनारस से अतुलवा आ दिल्ली से आदित्य भी चल देले बा लो, काल्ह आ जाई लो।

संजय भइया एही चिंता में परसान बानी की कबनो प्रकार के केहू के असुविधा ना होखो। देखि हेने सभे छोट अपना बड़ के गोड़ लागत बा। इ सब देखी के हियरा जुड़ा जाता। वाह रे हमनी के भोजपुरिया संस्कार।

लिटी चोखा लाग रहल बा। काल्ह कइसे कइसे का करे के बा सब प्लान बन रहल बा। नबीन भइया निराला भइया आ संजय भइया से सलाह कइल रहल बाड़े । सब लिटी चोखा खा लिहल, सभ फेसबुक के बाद आ आमने-सामने मिलकर आनंदित बा। लिटी चोखा ले फ़ोटो नबीन भइया फेसबुक प डाल देले बानी। बड़ा मजा आइल। अब सुते के तइयारी। बिरिज चचा चार गो मच्छर मार देले बानी बाकी तबो उहाँ के नाक बजला से अजीत भइया परसान नइखी होत।

ली सबेर हो गइल ! सभे जाग गइल। चाय पानी नास्ता हो गइल। अब प्रभात फेरी के तइयारी बा सब तैयार होके निकले लागल। आखर के टी शर्ट पहिन के सभके छाती गर्व से फूल गइल बा। सेल्फ़ी लिया रहल बा। गाँव भर के लइका- लइकी ड्रेस पहिन के प्रभा प्रकाश डिग्री कालेज ओर चल देले बा लो। उहाँ एक एक गो छात्रा आ स्कूल के लइकन के आँख से उमंग झाँक रहल बा। एगो अलग जोश एगो नया ऊर्जा के संचार अपना माई भाखा खातिर। अपना भोजपुरी खातिर। सभ एक ड्रेस में अपना प्रभात फेरी खातिर लाइन में लागल बा। हर हाथ दफ़्ती आ बैनर तइयार बा। मंटुआ खूब जोर से चिल्लात बा- "फायदा बा ना दुरी में" - तले बबलुआ पीछे से बोल देले बा-"बात करी भोजपुरी में"

अनिमेष भइया प्रभात फेरी के फ़ोटो खिचे में लागल बानी। होने देवेन्द्र भइया आ निराला भइया बुढ़उ बाबा से बतीया रहल बा लो। ब्रिज चाचा आ देवेन्द्र भइया लइकन के देख रहल बा लो। अमित भाई वीडियो रिकार्ड करत बानीं। नबीन भइया आखर के फेसबुक

अतुल कुमार राय

बलिया युपी के रहे वाला अतुल कुमार राय जी काशी में संगीत के साधना कर रहल बानी। भोजपुरी आ हिंदी में लिखे के एगो खास शैली ह अतुल जी के। भोजपुरी के पारम्परिक गीतन प इँहा के विवेचनात्मक ढंग से लिखाईल लेख आखर प पहिले भी पोस्ट भईल बा। भोजपुरी लोकगीत आ पारम्परिक गीतन प इँहा के लगातार लिख रहल बानी। फिलहाल बनारस मे निवास बा।

पेज अपडेट कर रहल बानीं, ताकि दुनिया भर में आखर के बीस हजार परिवार के लोग भी त जाने कि कब का होता। संजय भइया संचालक के भूमिका में बानी।

प्रभात फेरी हो गइल अब दिप प्रज्ज्वलन के बारी। सभ कुर्सी पर मंच के सामने आ गइल, बइठ गइल। सीवान के भोजपुरिया लाल आ देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी के चित्र पर फूल माला चढ़ावल जाता। सभ हाथ जोड़ के नमन करता बा ओह महान आत्मा के जेकर नाव लेते ही कवनो भोजपुरिया के सीना गर्व से फूल जाला। "गाई के गोबरे महादेव" जइसन मंगल आ शगुन के गीत से हमनी के परम्परा में कवनो शुभ काम शुरू होला। एइजा एकर बानगी देखे ले मिलता। डिग्री कालेज के बहिन लोग बड़ा नीमन से गा रहल बा लो। महादेव के बोला रहल बा लो कि आई आ हमनी के एह आखर के यज्ञ के सफल बनाई।

ली अब कार्यक्रम के विधिवत शुरुवात हो गइल मंच पर गुरु जी आदरणीय जौहर शाफियाबादी जी आदरणीय गुरु जी घनश्याम शुक्ल जी। मोहन प्रसाद जी आ सभे अतिथि लो बइठ गइल लो। चर्चा सत्र के विधिवत शुरवात हो गइल।

सभे भोजपुरी के योगदान के बारे में विस्तार से आपन बात रखल ह। आजादी के समय भोजपुरी आ भोजपुरिया के का योगदान रहे इ सुनके सभके बड़ा नीक लागल। अंत में संजय भइया मंच पर शैलेन्दर मिसिर आ असित मिसिर आ चन्दन तिवारी के बोला दिहनी। सभ आपन आपन राय रखले बा। अब चर्चा सत्र भी भी खतम भइल। अब सभके तनी भूख के एहसास हो रहल बा। जिलेबी आ भूजा के दोकान पर भी भीड़ उमड़ल बा।

संजय भइया सबसे कहतानी की चले के खाना खाये ताकि समय से सांस्कृतिक कार्यक्रम के शुरुवात होखो। सभे खाना खा रहल बा, फ़ोटो खिंचवा रहल बा।

जे खा लिहल उ मंच के सामने लागल पर्दा के सोझा बइठ गइल। पर्दा पर नितिन चन्द्रा जी के फिलिम 'देसवा' देखावल जात बिया। सभ धेयान से देख रहल बा। देसवा- देसवा रहे सोन चिरई वाला टाइटल गाना सुनके सभे करूण रस में डूबल बा। एगो अद्भुत फिलिम।

फिलिम खतम भइल। भीड़ ठसाठस बढ़ गइल बा। बुझाता कि पूरा गाँव जवार के लइका मेहरारु बुढ़ चलल चल आवत बा। साल सूटर लेके सभे आ गइल बा। सांस्कृतिक सत्र के शुरुवात भ गइल। स्थानीय संगीत विद्यालय के छात्रा लो गाना प्रस्तुत कर रहल बा। मुरारी जी के बांसुरी के तान एगो अलग आनंद के सागर में गोता लगा रहल बा। इ कार्यक्रम खतम भइल सभे ताली बजा के छात्रा लो ले उत्साह वर्धन कइल।

स्टेज पर बैंजो आ ढोलक सेट होखे लागल। संजय भइया मंच से घोषणा कइनी कि शैलेंदर मिश्रा जी आई आ कार्यक्रम के शुरुवात करीं। शैलेंदर जी के स्टेज पर आवते लइकन में उत्साह बढ़ गइल बा। हेने असित बाबा आ सुधीर बाबा हंस रहल बालो। सिरीमुख बाबा भी कम खुश नइखी। गाना शुरु हो गइल- वन्दनाशुरू, "प्रथम नमन करीं गुरु जी गोसंइयां के" वाह एगो शमा आ माहौल बन गइल। केहू अपना जगह से हिलत नइखे। इहे शैलन्दर जी के खासियत ह।

ली इहे अब चन्दन तिवारी जी मंच पर आ गइल बानी। बबीतवा के माई पिंकिया के माई से कहतिया। सुनतानि जी हई लइकिया के नाव चन्दन ह ? ममता हंसतीया- "ए राम इ त लइका के नाव ह रे !" पिंकिया के माई बतावतिया-चुप रहबे की ना रे !अरे बड़ा नीमन गावेली हो। गला में इनका सुरसती जी बसेली, आ संगवा में देख-देख इनकर माई भी रहेली। होह बाड़ी। चन्दन आपन गाना शुरु क दिहली। सभ ध्यान से सुन रहल बा। संजय भइया निरगुन के फरमाइस कइले बानी।

एक दिन जइबू गोरिया पीया जी के घर...तोहार छूटी नइहर".. ओह ! बलदेव बाबा निरगुन सुनके उदास हो गइले ! ओह ! सांचो अब नइहर छूट जाई का? पियवा के घर जाए के पड़ी ! चन्दन के आवाज में इ निरगुन सुनके मन एकदम शांत हो जाला । संसार असार नजर आवे लागेला । ली रस परिवर्तन भइल ! रांची से चल ले आइल अंतरराष्ट्रीय स्तर के नर्तक बिपुल नायक जी अब स्टेज पर बानीं । एगो दिव्य स्वरूप एगो अतना बड़ कलाकार जेकरा बारे में बतावे खातिर शब्द कम पड़ जाई । साथ में उनकर छात्रा लो एक ड्रेस में— "पीया मेंहदी माँगा द मोतीझील से जाके साइकिल से ना" । देखते दर्शक दीर्घा में मेहरारू आ लइकि लो में एगो अलग जोश के संचार हो गइल बा। एह अद्भुत नृत्य के देख के सभके अगहन में सावन के एहसास हो रहल बा ।

अब आ गइनी शैलेंदर मिसरा । भोजपुरी गायकन के दुर्दशा पर उहाँ के व्यंग सभके हंसा रहल बा सभके गुदगुदा रहल बा । "कैसेट गावत गावत फिलिम में फिट हो जाई" अब आ गइनी चन्दन जी । उहाँ के सधल आवाज में - "फगुनवा जियान हो जाई" सुनके सभे अगहन में सावन के बाद फागुन के अनुभव करे लागल ।

एक बार फेर विपुल नायक जी के टीम, चन्दन जी के गाना-"लिख द हरी जी के नाम हो कंगनवा बीच ना" । एह अद्भुत प्रस्तुति के देख के पिंकिया के माई आ बबलुआ के माई में कुछ बात भइल । अपना अपना हाथ पर अपना अपना हरी जी के नाव देख रहल बा लो । ली अब रवीश कुमार शानू जी आ गइनी रस परिवर्तन खातिर । "काबा में याद आवेला काशी कबो कबो" सूना के सभके मन्त्र मुग्ध क दिहनी । नबीन भइया एक एक गो शेर पर वाह-वाह कह रहल बानी । साथ में अतुलवा आ आदित्य भाई निराला भइया बइठल बा लो । अब एक बार फेर मंच विपुल नायक जी के हवाले । भोजपुरी के शेक्सपियर महान लोककलाकार हमनी के पुरोधा आदरणीय भिखारी ठाकुर जी के विदेसिया में रचल बारहमासा प्रस्तुत होखे जा रहल बा । "आई जब मॉस भादो सभे खेली दही कादो ए ललना कृष्ण के जनम बीती असही बटोहिया" ।

एह हृदय विदारक पंक्ति पर करेजा फॉर अभिनय देखके सभके आँख नम हो गइल । मेहरारु लो के आँखि के कोर भींज गइल बा व् विपुल जी के सम्मान में सभे खड़ा हो गइल ।

एक बार फेर विपुल नायक जी चन्दन जी के आवाज में सोहर पर भाव नृत्य प्रस्तुत करके सभके रोवा दिहनी । गर्भावस्था में नव महीना में कतना स्त्री दुःख उठावेले एकर वर्णन करेजा के बेध देत बा । आगे चन्दन के आवाज में गान्ही जी पर विपुल नायक जी के छात्रा लो के सधल प्रस्तुति । कमाल के बात इ बा की एह आठो लइकी में से केहू भोजपुरी समझेला ना, लेकिन भाव देख के सभका मुंह से एकही बात निकलत बा-अद्भुत। श्रोता में जे जहाँ बा ओईजा से अपना मोबाईल में सहेज रहल बा । रिकार्डिंग आ फोटोग्राफी खातिर भीड़ लागल बा ताकि सब एह अद्भुत रात के संजो ले रख लेव ।

अब अंतिम प्रस्तुति के बारी- मंच पर बाड़ी हमनी के आखर परिवार के सबसे छोट सदस्य, हमनी के चाचा आदरणीय उदय नारायण सिंह जी के बेटी अनुभूति शांडिल्य । अनुभूति ट्रेन से 24 घण्टा यात्रा करके आवत बाड़ी थाक गइल बाड़ी लेकिन चेहरा पर एगो अलग आत्म विश्वास । उनकर इ ले दे के चौथा प्रस्तुति ह । स्टेज पर उदय चचा कुंवर सिंह के बारे में बता रहल बानी । जवन अस्सी साल के उमिर में ब्रितानी हुकुमत के हिला के देले रहे। अनुभूति अब मंच पर—हरी हरी बोल-बोलब त बोला हो जवनवा । वाह ! एक साथ करुण रौद्र आ श्रृंगार रस के वर्णन । सभके मुंह से इहे निकलत बा, वाह तीस्ता बाह ! बंगला में उड़ेला अबीर सुनके एक बार फेर सभ खामोश बा । अगहन में फागुन के महसुस करके सभ आपन पूरनीया महान भोजपुरिया बाबू कुंवर सिंह के नमन करत बा।एगो शानदार कार्यक्रम खतम भइल । मंच पर सञ्चालन के जिम्मा निभावत संजय भइया आ गइल बानी । सभ कलाकार लो के सम्मान हो रहल बा । निराला भइया ब्रिज चचा आ संजय भइया मिलके सभके सम्मान कर रहल बा ।

संजय भइया सबसे आपन आपन राय देबे के निहोरा करत बानी ताकि । अगला साल और अच्छा से अच्छा कार्यक्रम होखो । उदय चचा विपुल नायक आ शैलन्दर मिसिर आपन राय रखल लो सभे ताली बजा के स्वागत कइल।अब चन्दन जी के बारी । ली अब चन्दन जी मंच पर अतुल के बोला दिहली । फेर से तबला निकलल । आ कार्यक्रम के समर्पित एगो लोक गीत पर उहाँ के रचना, सभके मन आनंदित हो गइल । ली, अब ठुमरी । "हमरी अटरिया पर अजा रे साँवरिया " सभे वाह वाह वाह कर रहल बा । कुछ लोग चिहा रहल बा की अतुलवा आतना नीमन तबला भी बजावेला ए भाई गजब ! नबीन भइया आ यशवन्त चाचा वीडियो बना रहल बा लो । अंत में उदय चाचा आ गइनी । "भोजपुरिया रे !" सभ सुन के सीना फुला लिहल । मंच से अतुल के सम्मान भइल-कार्यक्रम समाप्त ।

अब जेकरा जाए के बा उ जा रहल बा । फेर आवे अगीला साल आवे के बादा करके।केहू के भूख लॉग गइल । होने असित मिसिर आ सुधीर संगे सिरमुख बाबा सूत गइलन ए भाई! नबीन भइया शलेन्दर से कहत बानी की सबेरे संगहि जाए के बा बलिया । कुछ लो के खाना-पीना भइल । अजित भइया आ ब्रिज चचा उदय चाचा के गाडी में गइल लो । अमित भइया के संगे अनिमेष भइया आ देवेन्द्र भइया गइल लो । बचल खुचल लो, सबेरे राजिव भइया नबीन भइया के संगे संजय भइया के दुआर पर । चाय पानी बात बतकही हो रहल बा । एह सफल कार्यक्रम के गवाह बनके सभे अघा गइल बा । सभ कहत बा की दू दिन के रहित त बड़ा मजा आईत।

अब चले चले के बेरा । सभ छोट अपना बड़ के गोड़ लॉग रहल बा । नबीन भइया के गोड़ लागते चन्दन के आँख से आंशू निकल गइल । काहे ना भाई उनकर विदेस जा रहल बा । इहे त हमनी के भोजपुरिया संस्कार ह । हमनी के विरासत जवना पर हमनी के गर्व बा । जवना के बचावे खातिर आखर एह आंदोलन के खड़ा कइले बा ।

उम्मीद बा इ सिलसिला लगातार चली और लगातार बढ़ी और एक दिन भोजपुरी के ओकर आपन मुकाम सम्मान देके रही ।

जय भोजपुरी । जय आखर ।

हमार टोला के बँसवार

केशव मोहन पाण्डेय

हमार टोला तऽ रहे नन्हींचुक बाकीर संपन्नता से परिपूर्ण । पक्का मकान के नाम पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय के दूगो कमरा बाद में बनल । ओकरा बाद सबके घर बाँस, खर, कोईन, बाती के । माने सगरो गाँव फूस के । तऽ सबके घर खातीर सबसे बड़का धन बाँस आ खर रहे । टोला में घरन के ईऽ दशा अभाव के कारण कम, बाढ़ आ व्यवस्था के कारण अधिक रहे । माने हमरा आजुओ लागेला कि सबके मन के कवनो कोना में ईऽ भय जरूर पइसल रहे कि कबो-ना-कबो गंडक के प्रकोप बढ़ सकेला आ घर, टोला, संपत्ति उनका पेट में समाऽ सकेला ।

टोला में अभाव आ कमी के कारण ईहो रहे कि भले हमरा होश संभलला ले सभे भाई लोग आपस में पट्टीदार हो गइल रहे लोग, सगरो रिश्ता-नाता के बँटवारा हो गइल रहे, बाकीर सबके घर में केहू-ना-केहू सरकारी नौकरी में जरूर रहे । भले ओह बेरा वेतन कौड़ी के तीन आना मिलत रहे बाकीर नौकरी से संपन्नता रहे । तबो सभे ईटा जोड़ला से अच्छा खंभा-थुन्हीं सीधा करवावल बुझे । ओह खातिर सबसे पहिलका आवश्यक चीज बाँस रहे ।

हमरा टोला के पुरूब से भंडार कोना ले तीन-चार गो बड़का-बड़का बँसवार रहे । ओहमे सबसे बड़का हमनी के बँसवार । करीब अढ़ाई-तीन सौ कोठ रहे । हिस्सेदार पाँच जने । बड़ा घन-घन कोठ । मजबूत बाँसन के कोठ । ओकरा पुरूबो, बहेलिया डोभ के लगहूँ बँसवार रहे । ओह बँसवार में से घर छावे खातीर डाभियो (पातर बारीक खर) कटाऽ जाव । भंडार कोना के बाँसन के शुरूआत करइन के पेड़ के लग्गे से होखे । फेर चमटोली के बँसवार । अहीरटोली तऽ पूरा बँसवारे में बसल रहे । सबके घर के इगुवारे-पिछुवारे एकाध गो कोठ मिलिए जाव । बीरबल भाई के दुआर के बँसवार से ले के अली टोला ले, बंधा के लग्गे ले, खाली बाँसे-बाँस । भुग्तभोगी आदमी अपने चादर से पैर तोपे के कला में माहीर होले । जवन व्यवस्था रहे, टोला भर के लोग ओही में गुजारा करे के अभ्यस्त रहे । आगे बढ़े खातिर प्रयासरतो रहे । घर छवावे खातीर सहजता से सबके बाँस मिलिए जाव । पइसा ना रहला पर बँसवे देऽ के खरो खरीदा जाव ।

समय के फेरा के कारण अगर कबो डेहरी के अनाज खतम हो जाव आ हाँड़ी पर परई चढ़ावे खातिर दोसर कवनो बहाना ना मिले तऽ दू-चार गो बँसवे बेंच के मोहन तिवारी चाहे गिरधारी के दोकान में पहुँचल जाव । हमरा ईहो ईयाद बाऽ कि जब इंटर में हमके दस किलो-मीटर पढ़े जाए के पड़ल तऽ साइकिल के जरूरत पड़ल । तीन-चार महिना तऽ पैदले धांग देहले रहनी, बाकीर लइका के जीव, हार जाईं । बाबुजी अनुभवो कइले, हम कहबो कइनी । अपना बेंवत भर बाबुजी के कवनो सेकेंड हेंड साइकिल ना मिले । मिलल तऽ पूरा पइसा नाऽ । . . . खैर, सुतार ई बइठल कि साइकिल वाला के बाँस के जरूरत रहे । पटरी बइठ गइल । बात बन गइल । ओही बाँस के कारण हमरा बासे पहिलकी साइकिल चढ़ल ।

हमरा टोला में लगभग सबके घरे बँसवारे के कारण घर छवा जाव । थून्हीं सोंझ हो जाव । टाट-बेड़ सुधर जाव । गरज पड़ला पर बँसवे के पाटी वाला खटीयो तैयार हो जाव । सूखला पर कोईन लवना के कामे आ जाव । झमड़ा बन जाव । बँसवे कबो-कबो रोटीओ के व्यवस्था कऽ दे । जाड़ा में ओही बाँस के पतई आ कोंपड़ बिन के घूरा के टीला तैयार होखे । टाँगी के चोट से बाँस के खुत्था निकाल के बाबूजी के निरंतर जरे वाला धुईं तैयार होखे । ओह धुईं के कारन दालान में चहलकदमी बनल रहे ।

एतने ना, हमरा बँसवार में चाभ वाला बाँस के एगो कोठ रहे । ओह बाँस के उपयोग खाली धरम-करम में होखे । केहू के अपना अंगना में ध्वजा फेरे के होखे तऽ चाभ के बाँस कटा जाव । केहू के घरे माड़ो छावे के बा तऽ चाभ के बाँस कटा जाव । कई लोग ओकरा खातिर पइसो दे । बाबूजी दसोनोह जोड़ लें । पइसा पर तऽ ढेर बँसवार बाऽ । चाभ के बाँस खतीर पइसा ना । पूजा के बात बा तऽ कबो हमरो गरज पड़ला पर चूका दिहऽ । ई सुन के लोग के हृदय हुलास से भर जाव । रोंआ आशीष बरसावे ।

अब बड़ भइला पर जाति-धरम, छोट-बड़ के ढेर भेद बुझाताऽ । हमरा टोला में बाभन लेग के अधिकता रहे बाकिर ई अछोप कम घेरले रहे । हमरा टोला में मुसलमान के नाम पर खाली बलिस्टर भाई के परिवार रहे जे खाली अंसारी उपनाम से बुझासऽ । अउरी उठल-बदठल, पनिल-ओढल कहीं कुछ विशेष ना लागे । हँऽ तऽ जब तजिया बनावे के बात होखे तऽ सबसे ढेर हमरे टोला से बाँस

केशव मोहन पाण्डेय तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर, उ. प्र. के रहे वाला केशव मोहन पाण्डेय, एम.ए.(हिंदी), बी. एड. बानी। अलग अलग मंच ला दर्जनो नाटक लिखले आ निर्देशित कइले बानी। अनेक समाचार-पत्र आ पत्र-पत्रिकन में अढ़ाई सौ से अधिका लेख, आधा दर्जन कहानी, आ अनेक कविता प्रकाशित। भोजपुरी कहानी संग्रह 'कठकरेज' प्रकाशित। आकाशवाणी गोरखपुर से कईगो कहानियन के प्रसारण, टेली फिल्म औलाद समेत भोजपुरी फिलिम 'कब आई डोलिया कहार' के लेखन-निर्देशन कइले बानी। केशव जी ए घरी दिल्ली में रहेनी।

दिहल जाव। पूरा श्रद्धा भाव से। एकदम बिना पइसा के। धरम-नेम खातिर पइसा लिहल पाप मानल जाव। ओह बेरा हमरा टोला के समरसता बढ़ावे में बँसवार के अहम भूमिका रहे।

बरसात के मौसम में जब कबो झपसा के लड़ी लाग जाव तऽ दिक्कत तऽ सबके होखे, बाकीर सबसे अधिका दिक्कत माल-गोरुन के होखे। गेहूँ के भूसा कबले रूची? हर जीव जीभ के स्वाद बदलत रहे के चाहेला। खेतन में किनारे-किनारे धरीआवल साहेबनवा बाजरा अभीन धरती छोड़लहीं रहेला कि बरसात मुड़ी पर आ चढ़ेला। अभीन धरती छोड़त बाजरा पर हँसुआ चलावला से का फायदा। एह विचार से हरिहरी के ओह अकाल में हम हजार बेर देखले बानी कि बाँस के पुँलगी नीचे कऽ के चाहे ओही पर चढ़ के लोग ओकर पतई तुरे। पतई के लुँड़ी बना-बना के जमा कऽ लिहल जाव। ओकर छाँटी काट के नाद बोझाव तऽ गोरूअन के नाद से मुँहे ना उठे।

केहू के कोठ में अगर कवनो पातर, छरहर, गँठल बाँस निकलल तऽ ओहपर सबके आँख गड़ल रहेला। कोंपड़ तऽ कवनो काम के ना होला, बाकीर कम-से-कम एक-डेढ़ साल के हो गइला पर ओकर बड़ा गंभीर लाठी बनेला। अइसन बाँस खातीर चोरीओ-चमारी मान्य रहेला। नागू आ महावीर काका घरे हम कई बेर बाँस में लाठी के संस्कार देत देखलहूँ बानी। बड़ा पसंद से, बड़ा मेहनत सेऽ लाठी बनावल जाला। लागेला कि ओह बाँस के नवका अवतार में धीरे-धीरे ताकत के संस्कार दिहल जात होखे। एक-एक गिरह के चाकू से चिकन कइल जाला। कड़ू के तेल लगा-लगा के कई दिन ले ओहके गोईंठा के मद्धिम आँच पर पकावल जाला। दूध दूहला के बाद जवन काँच माखन निकलेला, ओ के निर्माण होत लठिया में लाहे-लाहे पिआवल जाला। अइसने प्रक्रिया बेर-बेर कइल जाला। कई दिन, कई हप्ता, कई महिना ले ई करतब चलेला। लागेला कि मक्खन लगा के खून निकाले के गुन भरल जाला ओहमे।\

टोला में बाँस के अधिकता, फूस के घर के अधिकता, खर-खरबाना के अधिकता, बेहाया आ करवन आदि के झाड़-झंखाड़ के अधिकता के कारण कीड़ा-फतिंगा के अधिकता रहेला। ओह कीड़ा-फतिंगन खातिरो सबके घर में लगभग दू-चार गो लाठी-लउर मिलिए जाई।

हमरा टोला में एकाध घर छोड़ के महावीर काका जइसन लाल ठार लाठी तऽ ना मिलेला, बाकीर कवनो रूप में उपस्थित जरूर रहेला। हमरा बाबूजी के सबसे प्रिय लाठी चार साल पहीले ले रहल हऽ। कठबँसिया के लाठी रहे ऊ। दिल्ली में कठबँसिया ढेर लउकेला। लउकेला तऽ बाबूजी के ऊ लाठी ईयाद आ जाला।
टोला के शायदे कवनो घर होई, जेकरा घरे लबदी ना होई। मुँगड़ी ना होई। लाठीए के रूप कहीं या पर्यायवाची, लउर, डंडा, लबदा, झटहा, सटहा, पैना, छिंऊकी, मुँगड़ी आदि हऽ बाकीर सबके गुन आ आकृति अलग-अलग हऽ। हमहूँ कई बेर छतुअनिया तर के बइर तूरे खातीर चाहें करवनवा तर के सेनुरिया आम गिरावे खातीर झटहा के सफल उपयोग के अनुभव रखले बानी। वइसे हमरे कुनबा में लाठीयो के मजगर उपयोग देखे के मिलल बाऽ।आज जब अपना टोला के बृहद् बँसवार के ईयाद करेनी तऽ पूरा टोला के ढाँचा साफ हो जाला। तब समझ में आवेला कि हमरा टोला खातिर, ओहके पहरेदारी में, रक्षक जइसन चारू ओर खड़ा बाँस के कोठन के का महत्त्व रहे। सबके आवास के सगरो अस्तित्व बँसवे से रहे। टाट के बाती होखे चाहें चार के रोके वाला थुन्हीं, बाँस अपना जोर से सबकुछ सलामत राखे। बाँसे के थुन्हीं। बाँसे के कोन्चड़। पसलौड़ो सोंझका-छरहर बँसवे के होखे। कई बेर जरूरत पड़ला पर दू गो बराबर आकार आ आकृति के बाँसन के जोड़ के लरहियों के काम निकालल जाव। हमरा टोला में सबके खातिर बाँस रहे तऽ आस रहे। घर के एक-एक चार में बाँस। एक-एक कोरो में बाँस। जब घर छवावे के काम लागे तऽ एक-एक बाँस से बाती बनवला के मिस्त्री लोग के कला देखत बने। दाब के मुठिया बाँस के। सहारा बनल मुँगड़ी बाँस के। दिनभर के काम खतम भइला के बाद खाना बनावे में चूल्ह बारे खातिर हलुका छिलका मजेदार जलावन के काम करे।

हमरा टोला के बँसवार के बाँस चाहे मोट-मजबूत होखे, चाहे फोफड़, सबसे अलग-अलग काम लिहल जाव। गुन आ बनावट के कारने काम के मर्यादा निर्धारित कऽ दिहल जाव। कवनो सात टेढ़े-टेढ़ बाँस मिले तऽ ओहके काट के बड़का कलाकारी से दूऽफारा लगावल जाव। नीचे के ओर तनी नोकदार कऽ के चिकन कऽ दिहल जाव। चिकन करे खातिर दाब आ गड़ासी के सहारा लिहल जाव आ दँउरी आदि में उपयोग करे वाला खरदनी बना दिहल जाव। हमरा टोला के सभे बाँस के अंग-अंग से काम लेबे में माहिर रहे। ऊँहा बाँस के हर अवतार के उपयोग होखे। जरूरत से समझौता आ उपलब्धता के उपयोग के उदाहरण बँसवार के सथवे हमरा टोला के सहजता में लउके। कोला-बारी के घेरा लगावे के होखे, चाहे इगुआरे-पिछुवारे पसरत फरहरीअन खातिर झमड़ा लगावे के बात, बाँस के कोईन, बाती, थुन्ही के अवतार मिलिए जाव। घोठा पर बँसवे के खूँटा आ बँसवे के बाती से बिनल नाद। लग्गी से लवना ले बाँसे-बाँस। लाठी-लउर से ले के लबदा-पैना ले बाँस। हमरा स्कूलो के निर्माण बँसवे से रहे। मास्टर साहेब के हाथ में बँसवे के छड़ी। हमरा टोला भर के हर पहचान में बाँस के भूमिका आज ईयाद अइला पर सोंचे के मजबूर कऽ देला। बितल बात ईयाद आ के आपन कइगो असर छोड़ जाला। ईयाद हँसी-खेल के। ईयाद अमरख-ईर्ष्या के।

हम कक्षा चौथा चाहें पाँचवा में पढ़त रहनीं। हमनी के चार-पाँच लइकन के झूंड रहे। आपस में खेल-कूद, लड़ाई-झगड़ा, सब होखे। ओहि तरे हमनी के बड़ दीदी लोग रहे। ऊहो लोग चार-पाँच जानी। ओहू लोग के पढ़ाई से सिलाई-कढ़ाई, रार-झगड़ा, सब सथवे होखे। अभाव भरल हमरा टोला के ईऽ सबसे बढ़का गुन रहे कि जँहवा ले विद्यालय के व्यवस्था रहे, लड़की लोग के भी शिक्षा के

बराबर के अवसर दिहल जाव । बेहिचक । बेझिझक । हँऽ तऽ एक बेर कवनो बात पर पार्वती दीदी से अनबन हो गइल रहे । ऊ बात साफ नइखे ईयाद कि अनबन केकरा से भइल रहे । हमरा से कि हमरा दीदी से । आऽ कि बँसवार के धन पर हमार घमंड रहे । भइल ई कि पार्वती दीदी हमरा दखिनही कोठ से हँसुआ से कोईन काटे के जिद्द करे लगली । हमहूँ जिदिआ के मना करे लगनी । ऊ हँसुआ बढ़वली तऽ हम ओकर धरवे पकड़ लेहनी । उनका लागल कि हम हँसुअवा छिनत बानी । ऊ अपना ओर खिंचली । ओही खींचखाँच में हमरा दहिना हथेली में एगो गहिरा चिरा लाग गइल । खून तऽ बाद में बहल, बाकीर चीराऽ देख के हम बउआ गइनी । भूँइया पटाऽ के चिलाए लगनी । बेचारी ऊहो देखली तऽ उनकर खून सूख गइल । पहिले तऽ लेमचूस के लालच दे केऽ चुप करावे के चहली, बाकीर दाल ना गलल तऽ पराऽ गइली । बाद में हमनी के महतारी लोग में नगदे भइल । एतने नाऽ, ऊ बेचारी बाँस के पोर पर के भूसी निकाल के लेअइली । कटलका पर लगा के कपड़ा से बान्ह दिहल गइल । घाव कुछ दिन ले रहे बाकीर चिन्हा आजुओ बाऽ । अब आज कहीं आपन चिन्ह लिखे के रहेला तऽ हम ऊहे लिखेनी - 'ए कट मार्क आॅन राइट पाम ।' जब-जब लिखेनी, तब-तब ऊ घटना ईयाद आवेला । पार्वती दीदी ईयाद आवेली । वँसवार ईयाद आवेला । आ ईयाद आवेला ओह बँसवार के भौगोलिक स्थिति । दूनो ओर बेहया भरल गड़हा से घेराइल छवर ईयाद आवेला । ईयाद आवेला पूरा टोला । टोला के स्वरूप । ईष्र्या । द्वेष । समरसता । अपनत्व । आ एह सब के बीच बँसवे के कोरो, थून्हीं, पँसलवड़ पर टँगाइल टोला के घर दुआर । बँसवे के पाटी-पउवा से तैयार खटिया । जीनगी से साथ देत बाँस आ अंतिम विदाई के बेरा वाहन बनत बाँस । ओह बाँस आ बँसवार के सथवे टोला से लोग के पलायन । अगलग्गी । घरन के स्वाहा भइल रूप ।

आ अंत में नदी के कटान में हमरा टोला के बँसवार के अंतिम समाधि ।आज सेवरही में सीमेंट-बालू-ईंट के घर तैयार बा । एल.पी.जी. के कारन माटी के चूल्हा गायब बाऽ । प्रभु के परताप से हर प्रकार के सुख बाऽ । बाकीर सावन चाहें कवनो जग-परोजन में जब कबो ध्वजा फेरे खातिर बाँस के जरूरत पड़ेला, तऽ खरीदे के पड़ेला । तब हमरा टोला के चैकीदारी करत सगरो बँसवार के दृश्य बेर-बेर नजरी के सामने नाचे लागेला आ मन अधीर हो जाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

दिल, जब बच्चा था जी (भाग – 11)

बृज किशोर तिवारी

रवा लेखक के भोजन पुराण के कथा में लेखक के आपन दीदी के तंग करे के फेर में आपन पेट के औकात से अधिका खा लेला के आ ओकर बाद लेखक के भईल परेशानी के पढ़नी। अब आगे के भाग में कुछ आउरी बदमासी के मजा लिहल जाव -

ओही बीच में दिल्ली के संघतिया मंटू जी, सतेंदर जी आ राजीव जी ओहिजा आवे खातिर फोन करल लोग। हम कहनी- आई जी, बढ़िया तS बा, भेटो हो जाई आ हमरा के सहारा भी जाई। (बड़ा अकेला लेखा लागत रहे) सभे सोचले होखी- बृज भाई से मिले जाS तानी जा। कुछ लेके चलल जाव ?

भाई लोग के बिचार बन गईल होई। बृज भाई अस्पताल में बानी। का जानी ढंग से खाना-पिना होत होई की ना ? आ जवन भी होखे... लोग बिचार बना लिहल कि आजू बृज भाई के साथे खाना खाईल जाई।

भईल अपना अपना घरे से सभे तनी-तनी बढ़ा के खाना लियाई आ सभे खाईल जाई। (इ कुल बात हमरा मालुम ना रहे) सतेंदर भाई आ मंटू जी पहिले पहुच गईनी। बढ़हने एगो झोला रहे। ओही में दुनो लोग के घरे से लियावल खाना रहे।

बाते बात में पूछ हम दिहनी- इ का हS जी ?

मंटू भाई कहनी- कुछ ना भईया , घरे से आवत रहनी जा। तS सोचनी कि रउवा खातिर कुछ लेत चली। खाना हS ..।

राजीव जी के दुसरा ओर ले आवे के रहे, आ उंहा के जाम में बाझ गईल रहनी। लागल देरी होखे। फोन से बात भईल, पता लागल राजीव जी के अभी आधा घंटा ले लाग जाई।

त सतेंदर भाई कहनी कि एही इलाका में हमार एगो काम बा, तले कई ली का ?

हम कहनी, काहे ना ...। कई ली, का करे के बा।

झोलवा हमरा लगे धS के सतेदार भाई आ मंटू जी चल दिहनी, कि बस आव तानी जा।

हम कहनी- ठीक बा, आई जा। राजीव भाई के आवे तक काम निपटा लीं।

उ लोग के जाये के बाद हमहू सोचनी- माता जी के खाना हॉस्पिटल में ही मिल जात बा। बाबू जी होटल में खा लेले रहनी आ श्रीमती जी के ओह दिन ब्रत बा। दिमाग में आईल कि इ खानवा त हमरे खातिर आईल बा। काहे ना जबSले सभे कोई आओ, खाना निपटा दिहीं । भूख लगले बा।

बस खोलनी टिफिन- आहा हा... का पूछे के रहे ! बहुत दिन बाद घरे के खाना भेटायिल रहे। इ ना बुझाईल, कि कवन खाना मंटू जी के इहा के हS आ कवन सतेंदर जी के इहा के।बस एक नंबर गेयर में चापत चल गईनी। खनवा तनिका अधिका तS रहे लेकिन सोचनी फेकब तS ना पानी बादे में पियब।

कुल मिला के सब निपटा दीहनी। तनिका देरी में सतेंदर जी आ मंटू जी आपन काम कई के आ गइनी। अभियो ले राजीव जी ना आईल रहनी। तले मंटू जी कहSतानी कि सोचले रही जा कि आज बृज भाई के संघे बैठ के खाना खाईल जाई। लेकिन राजीव जी, जामे में फस गईल बानी। का कहल जाव।

इ सुनते तS हमार सांस **फसी गईल** । आही दादा- इ का ? इ खनवा सबके खातिर रहे ,आ हम अकेलही निपटा देनी ! हम सोचनी खाली हमनी खाती हS। हमार तS बकारे बन। करेजा पर पत्थर राख के झुठही कहनी - ये मंटू जी, खनवा तS हमनी के दुनो मरद-मेहरारू मिल के खा गईनी जा / मंटू जी भी का कहस।

हँस के कहनी- ठीके तS बा भईया , इ तS आउर बढ़िया बा। थोड़िका देर में राजीव जी भी आ गइनी आ आवते कहनी- तनिका देरी त हो गईल मंटू भाई। चलीं तब... निकालल जाव। जीरादेई के बाद आज मौक़ा मिलल बा बृज भाई के साथे खाना खाए के। सतेंदर भाई राजीव भाई के कान में धीरे से कहनी - राजीव भाई ! तनिका ना ,बहुत देर हो गईल।

बृज किशोर तिवारी

पलामू झारखंड के रहे वाला बृजकिशोर तिवारी जी एह समय शक्तिनगर सोनभद्र मे कार्यरत बानी । भोजपुरी मे हास्य व्यंग्य के रचना इँहा के एगो अलग आ उंच पहचान बनावेला। आखर पेज से जुड़ल बृजकिशोर जी भोजपुरी मे लगातार रचना कई रहल बानी भोजपुरी मे लिख रहल बानी।

भारत का उजियाली से

नथुनी पाण्डेय 'नागेन्द्र'

लाल लहरि झंडा लहराला,
जब सूरज का लाली से
चारों दिशा चमकि उठेला,
भारत का उजियाली से।

खड़ा हिमालय नभ के छूए,
देवदार नाचे गावे
जड़ी बूटी के प्रांत, तपस्वी
तपे तेज ओकर भावे
तपसी के तप रहे सुरक्षित
नगपति का रखवाली से। चारों दिशा...

जग जननि गंगा कल-कल बहि
धरा धाम पर आवे
झर-झर बहि अमृत के धारा
सगरी पाप धो आवे
नाचि नवेली गंगा गावे
ताल शिव का ताली से। चारों दिशा...

सातो सागर में भारत के
झंडा लाला टंगाईल
ए विशाल अंगनाई में आके
के ना तनिक हेंटाईल
तीर किरन के छूटल इहां से
छूटल जगत तब जानी से। चारों दिशा...

इहां कन्हैया रास रचावे
राम विपिन में घूमे
सरग धधाईल आवे एइजा
भूमि चरन के चूमे
जूठ बईरिया चाव से खाले
सबरी जंगल वाली से। चारों...

बादर मांगे हाथ जेरि के
काजर काजर वाली से
झुलुआ खेले ऋतु के राजा
लटकि आम का डाली से।
गूंजेला कजरी मल्हार
कन्या कुमारी के बाली से। चारों दिशा...

साम समूचा बारत का
कण-कण में रहे समाईल
पवन लुटावे गंध सुहावन
तईसे गीत बंटाईल
उरबसि अंगड़ाई सोखे
कोईलरिया मतवाली से। चारों दिशा...

नथुनी पाण्डेय 'नागेन्द्र'

नथुनी प्रसाद पाण्डेय जी के जन्म –1 जनवरी,1957 के ह। गरीब आ पिछड़ल गाँव-परिवार में पालन पोषण आ पढ़ाई लिखाई जैसे तैसे कइला के बादों इहाँ के लगातार साहित्य सृजन कर रहल बानी। अप्रकाशित रचनाकार। हिंदी ,भोजपुरी,उर्दू,बंगला आ अंग्रेजी में लेखन। शिक्षक,हाई स्कूल,उजाँय।

www.bhojpurisahityangan.com

साभार : गूगल

खेवनहार

गंगाशरण शर्मा

जे झूठ के सांच ,
आ सांच के झूठ
आडंबर के सादगी
क्रूरता के दया
करिया के उज्जर
में बदलल जानेला
जोसीला भासन से
गरीब के रोटी
मजदूर के झोपड़ी
धर्म के देवाल
जात के जहर
सम्प्रदायिक आगि में
समाज के जरावल जानेला
जे दउलतके ,
सोहरत के
नैतिकता के
काला बाजार में
सफाई से बेचे जानेला
इंसानियत के भूलि के
धर्माधता फइला के
देस के इज्जत माटी में
मिलाई के
आदर्श आ सिद्धांत पर
गोली चलाई के
बनल चाहे खुद मुख्तार
आज उहे नेता बनल बा
देश के नाव के
खेवनहार !

गंगा शरण शर्मा

गंगा शरण शर्मा जी झरिया, जिला धनबाद (झारखंड) के रहे वाली बानी , हिन्दी भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठित हस्ताक्षर बानी , समाज मे हो रहल बदलाव प इँहा के लेखनी के धार गजब रहेला ।

भोजपुरी हेरा गइल

श्वेताभ रंजन

तू ना पहचनलऽ हमके
हम माँ, तू सब जनके
शब्द जउन भाव से निकलल
उ भाव हमसे
तोहार गांव, जवार
हित-मित्र...
हवा के हर तरंग हमसे
तू ना पहचनलऽ हमके
हमरे कोरा में फइलल
समाज
ओमे तोहार परिवार
माई के गोद में
पहिला पुचकार
तोहार पहिला भाव हमसे
हम भाषा हईं...
भाव रखेनी
विचार रखेनी
जरुरत पड़े त
उन्माद रखेनी
बाबु अब हम रोज़, पिटातानी
आपने समाज में, लसरातानी
बाबु, केहु कहऽता हम कुछ नइखीं
बरसों से बानी पर नइखीं
हम हेरा गइनी
राउर सब के माई होके भी
लुटा गइनी
बाबु, बताईं ना
केहु जीते जी हेरा जाला
कि आपने लोग के हाथो
बिका जाला
बाबू, तू ना पहचनलऽ हमके
हम माँ, तू सब जनके
भोजपुरिया इतिहास उठालऽ
बीत गइल सम्मान उठालऽ
आपन माई के कोरा में
दुबकल, तू आपन पहचान उठालऽ
बाबु हम नींव,
हम भाषा आ भाव हइ
तोहार जड़ के
पहचान हइ
बाबु , हम तोहसे पहचान माँगऽ तानी
आपन खोवल सम्मान माँगऽ तानी

फेरु कब आइम

प्रभाष मिश्र

हम ट्रेन के एसी बोगी में बईठल
सीसा से बहरी झांकत रही
नजारा त आंखि के सोझा बहुत रहे
बाकिर देखाई बाबूजी के बहत आंखि के लोर रहे।

लगे बईठल हमार लईका - मेहरारु
आपस में हंसत बात करत रहन
बाकिर लगहीं के आवाज
हमरा कान में चहुपे के जगहा
बाबूजी के " फेरु कब अईब " के सवाल गूंजत रहे।

ढ़ेर देरी ले बहरी एकटकी देखला पर
मेहरारु के केहुनी से ध्यान तुड़ला पर
अचके मूंह से निकलल रहे - " का भईल बाबूजी "
इ सुनते लईका - मेहरारु
ठहाका लगा के जोर से हंसले रहे
बाकिर हमरा त अभीओं बूझाईल
जईसे बाबूजी ही कुछ पूछत रही।

माई के मुअला के बाद
एगो नोकर पर बेमार बाबूजी के सेवा करे के छोड़
हम शहर जात रही
मन त रहे कि बाबूजी हमरा संगही रही
बाकिर जनाना के ई ना तनिओं जमत रहे
कहस कि दु गो कमरा में के के रही
लईका सब पढ़ीहें कि ऊ बाबा के सेवा में रहिहें
रऊरा त दिनभर अफिस में रहेम
हमरा पर बड़हन आफत पड़ी।

हम हार गईल रहनी मेहरारु के सोझा
काहे कि हम जानत रही
जदि जे जबरजस्ती शहर ले आएम बाबूजी के
त ऊ बाबूजी के हरदम गाभी मारत तंग करी
जवना रुप के आज ले बाबूजी ना देखले
तवन घिनौना रुप उनका सोझा रही
ऊ एजी नीमन होखे खातिर अईतें
बाकिर एजी जादा बेमार हो जईतें
कुहुकत उनकर हिरदया
फफक - फफक के चुपे रोईत
जहां जिए के होईत आठ बरिस
ओजी आठे दिन में सांस छूटित।

www.bhojpurisahityangan.com

नुरैन अंसारी के दू गो कविता

नुरैन अंसारी

का लिखीं महंगाई पऽ

तनख्वाह के कुछ रुपया राशन में गईल, कुछ खर्चा भईल दवाई पर
थोडा बहुत लेन-देन भईल,बाकि सगरी उठ गईल लड़िकन के पढाई पर
आ मोहताज़ हो गईल आदमी फेर से पाई-पाई पर
समझ में नईखे आवत की हम का लिखीं महंगाई पर
आमदनी बा जस के तस खर्चा बेशुमार बा
ये फूल वाला शहर में कांटा के भरमार बा
मंडी में पडत बा जब पाला दाल-सब्जी के भाव से
जमीन खिसक जात बिया भईया दिन-दहाड़े पावं से
घर में ताना मारत बिया मेहरारू, मरद के कमाई पर
समझ में नईखे आवत की हम का लिखीं महंगाई पर
भाई हो सारा नुख्सा फेल हो गईल पॉकेट पे कंट्रोल के
सरकार हर महिना दाम बढ़ावत बिया डीजल अउर पेट्रोल के
बड़ा मुश्किल से लोग जिनगी के बोझ ढोवत बा
बस हंसत बा मजबूरी में पर दिल से रोवत बा
अब त बिश्वास नईखे करत केहू अपने ही परछाई पर
समझ में नईखे आवत की हम का लिखीं महंगाई पर

जब केहू दिल में ...

मुरझायिल फूलवा भी लागे ला महके
चंचल चिरैया मन के लागे ले चहके
दिया, मन में पिरितिया के जर जाला
जब केहू दिल में उतर जाला

निक नहीं लागे ला केहू के बतिया
हर जगे लउके बस उहे सुरतिया
दोसरा में बस जाला आपन प्राणवा
जियरा ना माने ला अपने कहानवा
केतना उम्मीद मन के घवद पर फर जाला
जब केहू दिल में उतर जाला

आसान नाही होला इ नेहिया के काम
सुख-चैन सब कुछ हो जाला नीलाम
लागे ना भूख-प्यास कौनो भी बेला
लोग अपने ही घर में हो जाला अकेला
हँसते-हँसते अखिया,लोरवा से भर जाला
जब केहू दिल में उतर जाला

नुरैन अंसारी

गोपालगंज , बिहार के रहे वाला नुरैन अंसारी जी , भोजपुरी आ हिन्दी मे लगातार गजल आ कविता के सिरजना कई रहल बानी । आखर प शुरु से ही नुरैन जी के लिखल भोजपुरी कविता आ गजल पोस्ट हो रहल बा । इँहा के एह घरी दिल्ली मे बानी ।

दू गो गीत

डा. कमलेश राय

चिरई ना बोले

सबेरे-भोरे अब तऽ चिरइयो ना बोले
सगरो बिछल अस कारी रइनिया
सकुचि-सकुचि उगे किरिनिया
फुलवा पँखुरियो ना खोले
सबेरे-भोरे...

उजरि गइल अब महुआ-बारी
निबियो ना उलकेले बाबा दुवारी
पिपरा पतइयो ना डोले
सबेरे-भोरे...

अब तऽ सनेसवा पठावे नाहीं बदरा
हरफ-हरफ ना ढरे नाहीं कजरा
'कमलेश' सुधियो ना लेले
सबेरे-भोरे...

मुखिया हऽ घर कऽ

आधा देंहि उघारे देखीं, एकसर कहीं किनारे देखीं
बेचारा मुखिया हऽ घर कऽ, सगरी फिकिर कपारे देखीं

सगरी उमिर सहेजे घर के तिनका-तिनका जोरे
एगो कहीं तिरून ना खरके आठों पहर अगोरे
अगवारे पिछवारे देखीं, साँझे अउर सकारे देखीं
सारी रात पहरूआ बनके, जागत रहे दुवारे देखीं

बीनत अउर बरावत सइंचत जांगर जरल बुताइल
जिनगी भर अभाव के आगे कुछ ना कबों तिराइल
अँगना-घरे-ओसारे देखीं, साजे कहीं सँवारे देखीं
चादर तऽ छोटे हो जाले, जब-जब पाँव पसारे देखीं

ना केहू से व्यथा कहे ना मन कऽ पीर बतावे
अचके कहीं ढरक ना जाये अँखियन लोर जोगावे
अन्हियारे-उजियारे देखीं, ऊ कबहूँ ना हारे देखीं
कवनो जतन- उधापन आपन, पगरी रोज सम्हारे देखीं

डा. कमलेश राय

मूलत: जिला मऊ, उत्तर प्रदेश के रहे वाला डॉ. कमलेश राय जी चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'शब्दिता' के संपादक हईं। रउआ भोजपुरी आ हिंदी दूनों भाषा में अधिकार के साथे साहित्य सृजेनी । अतने ना एगो मंचीय कवि के रूप में रउआ देश-विदेश में काव्य पाठ कइले बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

पाठक कोना

राउर बात

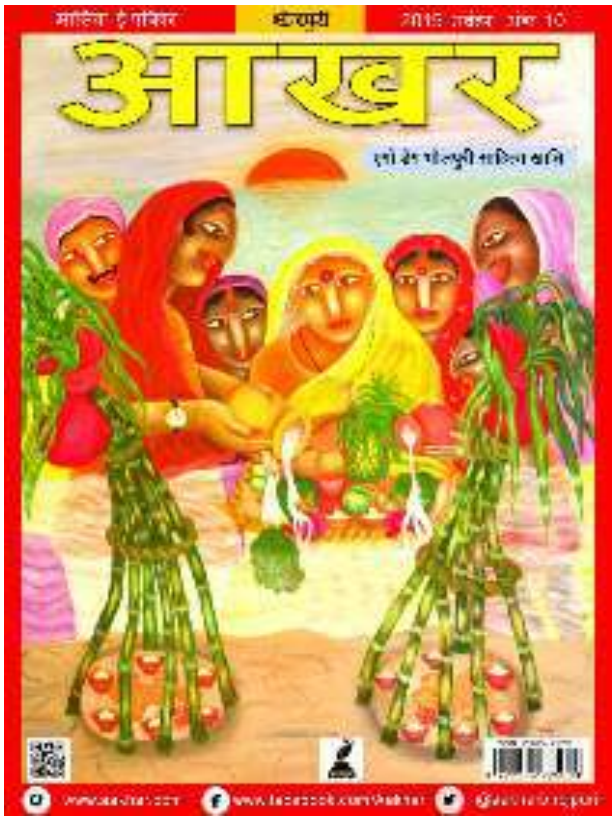

छठ पर्व प अतना बढिमा लेख बहुत कम पढे के मिलेला। बहुत नीमन आ सुनर लेख छठ पुजा प। हर भाग पसन आईल ह।

● संतोष दुबे

लोक पर्व लोक त्योहार प एक से बढि के एक जानकारी। अभी तक हमनी के बस पुजा पाठ के बारे मे बस जानत रहनी कि होला बाकी अब विस्तार से मालूम चलल।

● अनिल कुमार सिंह

भाषा अउरी साहित्य के हर रुप के अपना मे समेटले आखर के बहुत बरिआर अंक। सबका पढे लायेक।

● सतेंदर सिंह

नेट के काल्पनिक दुनिया में बनावल गइल दोस्त..वास्तविकता के धरातल पर इतना सफल अंजाम दे तानी लोगिन..ई अपने आप में बहुत बड़ा बात बा..हमरा से कोई सेवा हो सके ता जरूर बताएं

● रश्मि प्रियदर्शनी, वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली

आखर के पूरा टीम के दिल खोल के बधाई। कबो सोंचले ना रहनी कि मज़ाक मज़ाक में फेसबुक प अकाउंट खोलल अइसे सार्थक होई। जुड़त जुड़त कुछ भाई के साथ मिल गईल तब बुझाइल की फेसबुक खाली फ़ोटो अपलोड करे खातिर ना ह। अब बात "आखर" के। हम खाली एगो पाठक बानी लेकिन जब जब आखर पढ़े के शुरू करीला त ओकरा पीछे मेहनत करे वाला के आभार जरूर जताइला मने मने। सब के आपन जिनगी, आपन परिवार, आपन उलझन बा लेकिन ओह से लड़ते हुये भी आखर खातिर अलग से समय निकाल के जे कुछ भी लोग करत बा ओकर तारीफ कतनो होखे त कम बा। सबके करेजा फाड़ के बधाई!!

● संजय कुमार पाण्डेय

बहुत ही अच्छा लागल बा , उत्सुकतावस प्रथम वार पढे के शुरु कईले बानी , बार बार पढेब , आखर टीम के बधाई होखे।

● एस.पी सिंह

जय भोजपुरी

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा। भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं।

~आखर परिवार

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक कोना

निहोरा

जय भोजपुरी,

माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्ग के सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी आउर भविष्य के सुरक्षा खाति तनि बेसी कमाये के आशा में ना चाहते ढेर लोग अपना माई आ माटी से दूर बा। एह कमी के ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर कर रहल बा।

आखर के नेंव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति राखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा आ रउआ सभे खाति बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव, कथा कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-गज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

अंग्रेजी कैलेंडर के नया साल के पहिला महीना जनवरी , भोजपुरिया क्षेत्र खातिर बहुत खास ह । खेतन मे फसल अपना बांकपन प रहेला , सगरे खेतन मे हरियाली पसरल रहेला । एहि महीना मे मकर सक्रांति (खिचड़ी) जईसन पावन पर्व परेला , माघ के मेला , गंगा स्नान जईसन पावन दिन एहि महीना मे परेला। जनवरी महीना भारत राष्ट्र खाति त खास हइये ह संगे संगे भोजपुरिया क्षेत्र खाति भी बहुत खास ह । गणतांत्रिक भारत के नेव धरे वाला संविधान के मूल रुप के क्रियान्वन एहि महीना मे 26 जनवरी से , जवना के गणतंत्र दिवस के रुप मे मनावल जाला।

एह से आखर के अगिला अँक (जनवरी 2016) खाति विषय बा - भोजपुरिया क्षेत्र मे नदी, पर्यावरण आ भोजपुरिया क्षेत्र मे होखे वाला मेला से जुड़ल लेख। गणतांत्रिक व्यवस्था मे भोजपुरिया क्षेत्र के वर्तमान स्थिति , भारतीय संविधान आ गणतंत्र दिवस प लेख जईसन विषय के केंद्र मे राखि के रउवा सभ के लेख कविता गीत गजल आदि के स्वागत बा।

रउवा सभ से निहोरा बा कि आपन अगिला लेख एहि बिंदुअन प केंद्रित कई के लिखी जवना से भोजपुरी भाषा मे साहित्य के व्यापक विस्तार से पाठक लोगन के परिचय होखे। अगर रउवा एह विषयन से अलग कुछ नया तनि हटि के कुछ बेहतर लिखले बानी त ओह के आखर ई पत्रिका खाति भेजी। रउवा सभ के लेख के स्वागत बा।

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा-

  aakharbhojpuri@gmail.com

- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं।
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे खातिर स्थान दियाई। ओहनी के लिखल रचना भा चित्र भेजीं।

आखर

भोजपुरी ई -पत्रिका

ISSN 2395-7255

ISSN 2395-7255

www.aakhar.com www.facebook/Aakhar @aakharbhojpuri